Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Shivalook

शि
वा
लो
क

Shivparsad Tripati
Rani Talaba
Jammu

ब्रह्मचारी शिवप्रसाद त्रिपाठी

1967

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शि
वा
लो
क

Shivalook

Shivparsad Tripati
Rani Talaba
Jammu
1967

ब्रह्मचारी शिवप्रसाद त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक — ब्रह्मचारी शिवप्रसाद त्रिपाठी
रानी तालाब, जम्मू ।

प्रथम संस्करण — २४ श्रावण, १८९० शक
१५ अगस्त, १९६८

मुद्रक — चान्द प्रेस, जम्मू ।

मूल्य — पांच रुपए

SPS
891.431 S 40 S
31629

मैं ललित कला संस्कृति व साहित्य अकादमी, जम्मू काश्मीर, जम्मू का अत्यन्त कृतज्ञ हूं और उसका हृदय से धन्यवाद करता हूं जिसने शिवालोक काव्य के मुद्रण प्रकाशनादि के लिए मुझे यथेष्ठ आर्थिक सहायता प्रदान की ।

ब्रह्मचारी शिवप्रसाद त्रिपाठी
रानी तालाब, जम्मू ।

رانی تالاب جموں

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Acc. No 31629
Cost Rs. 5.00
Date 5.8.69
Sri Pratap Singh Library Srinagar.
H 81
SA05

सत्यमेव जयते

पर्यटन तथा नागर विमानन मंत्री
Ministry of Tourism & Civil Aviation
नई दिल्ली
अगस्त १३, १९६८

दो शब्द

महादेव सृष्टि के अद्वितीय नियन्ता हैं। संहार और कल्याण के परस्पर विरोधी विशेषणों के अधिकारी—रुद्र और शिव—एक समन्वयात्मक स्वरूप की रचना करते हैं जो हिमाच्छादित कैलाश पर शाश्वत समाधि में निमग्न 'सत्यं शिवं सुन्दरं' के सर्वोच्च दर्शन का प्रेरक है।

शङ्कर भारतीय संस्कृति के अनुपम प्रतीक हैं। उनकी गौर देह सत्व की विभूति है; तृतीय नेत्र तेजस्वी ज्ञान है; त्रिशूल के दंड में त्रिगुणात्मिका प्रकृति का निवास है। सर्पहार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहने नीलकण्ठ तामसी विकृतियों को संतुलित कर जीवन में सहिष्णुता की अनिवार्यता दर्शाते हैं; शिव का वैराग्य भारतीय संस्कृति द्वारा प्रस्तुत आत्मज्ञान तक पहुंचने का माध्यम है; प्रलयंकर का ताण्डव सम्पूर्ण जीवन की सक्रियता बनाये रखने का अद्भुत विधान है। वृष रूपी धर्म पर सजे महादेव की आराधना ही मानव संस्कृति की पराकाष्ठा एवं जीवन की सार्थक साधना है।

"शिवालोक" हिन्दी साहित्याकाश पर एक उपलब्धि बन चमकेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। शिव की महिमा उद्देश्य-पूर्ण काव्य में संजोने का कठिन परन्तु अत्यन्त सफल प्रयास करने के लिए ब्रह्मचारी शिवप्रसाद त्रिपाठी को मैं बधाई देता हूं और सभी सुहृदय भक्तों से इस पुस्तक के पठन-पाठन का आवाहन करता हूं।

कर्ण सिंह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय-सूची

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
१	आत्म परिचय	...	क
२	स्वीकृति याचना	...	१
३	समर्पण	...	१
४	माहात्म्य	...	२
५	शिवालोक की विशेषता	...	३
६	शिव मङ्गलाचरण	...	४
७	श्री गणेश मङ्गलाचरण	...	६
८	देवी मङ्गलाचरण	...	७
९	ब्रह्म का यक्षावतार	...	८
१०	शिव के सर्वश्रेष्ठत्व में लिङ्ग पुराण का प्रमाण		१३
११	शिवाशिव प्रणति	...	१५
१२	प्रार्थना	...	१६
१३	गङ्गावतरण क्षेत्र	...	१७
१४	तुहिन निपात दर्शन	...	१८
१५	गङ्गावतरण क्षेत्र स्वरूप	...	१९
१६	सुरसरित स्वरूप	...	२०
१७	उमा की तपस्या	...	२१
१८	गङ्गावतरण क्षेत्र पर शिवागमन	...	२२
१९	शिव समाधि	...	२३
२०	सुरों का आत्म खेद	...	२४
२१	कामारि पर काम का आक्रमण	...	२४

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
२२	ऋतुराज सृजन	...	२५
२३	मदन दहन	...	२७
२४	शङ्कर का अन्तर्धान : उमा का तप	...	२७
२५	नारद स्मरण	...	२८
२६	उमा परीक्षा	...	२६
२७	गिरिजा का अति कठिन तप	...	३२
२८	उमा का अग्नि प्रवेश तथा अग्निदेव दर्शन		३४
२६	उमा का सर्वभूत विजय	...	३५
३०	अग्निवर शङ्कर का विप्र वेश में आविर्भाव		३६
३१	उमा का प्रकोप	...	३६
३२	वियद् वाणी	...	४०
३३	शिव का ब्रह्मचारी के रूप मे प्रादुर्भाव	...	४१
३४	जागरण	...	४३
३५	सुरों द्वारा शिव स्तवन	...	४६
३६	शिव का विषपान	...	४८
३७	सुरों कृत शिवस्तवन	...	५०
३८	सुरों का स्वार्थ निवेदन	...	५२
३६	शिवस्तवन	...	५३
४०	परिणय प्रार्थना	...	५५
४१	स्वीकृति प्रदान	...	५५
४२	सुरों का हिमाचल पुर गमन	...	५६
४३	हिमाचल के रूप	...	५६
४४	वैवाहिक लग्न तिथि दिन निश्चय	...	५८

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
४५	शिवाज्ञा	...	५८
४६	नारद आह्वान	...	५६
४७	निमन्त्रण	...	५६
४८	वरात की सामग्री वायुयान	...	६०
४६	शिव स्वरूप वर्णन	...	६४
५०	शिव स्वीकृति श्रवण	...	७२
५१	अन्य गिरिराज आदि का आगमन	...	७५
५२	शिव बरात यात्रा	...	७६
५३	वास भवन दिव्य मण्डप रचना	...	८३
५४	शिव स्तुति	....	६१
५५	शम्भु तीर्थ रचना	...	१००
५६	शिव का वास भवन निवास	...	१०३
५७	रति प्रार्थना	...	१०६
५८	शिव लोक का अनुपम दृष्य	...	११८
५६	मानस सरोवर	....	१२३
६०	सकल ब्रह्माण्डों का एक सभा भवन न्यायालय		१२८
६१	सुरों का शिव से स्वकष्ट निवेदन	...	१३४
६२	युग्मक	...	१३६
६३	श्री शक्ति के आक्रमण का अद्भुत प्रभाव		१४०
६४	तारक नगर वर्णन	....	१४८
६५	सुर सैन्य सज्जा	...	१५४
६६	सुरासुर संग्राम	...	१५७
६७	सायं काल युद्ध विराम	...	१५७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
६८	सायं सुषुमा	....	१५७
६९	सन्ध्या सौन्दर्य : सन्ध्या रवि मिलन	...	१५८
७०	जलधि-रवि-मिलन-दृश्य	...	१५८
७१	सन्ध्या का कार्य	...	१५९
७२	अन्धकार अवतरण निशोन्मेष	...	१५९
७३	चन्द्रोदय स्वर्णिम प्रभात		१६०
७४	उषा काल अभिनव विहान	...	१६१
७५	समर वाद्य वादन	...	१६२
७६	सुरासुर संग्राम पुनः	...	१६२
७७	तारक की गर्वोक्ति	...	१६२
७८	घोर समर	...	१६२
७९	तारक बध	...	१७०
८०	तारक बध का लोक पर शुभ प्रभाव	...	१७०
८१	सुर सेना विजय	...	१७१
८२	सुर सेना कैलाश गमन	...	१७१
८३	शिव पूजन प्रणाम कृतज्ञता प्रकाश	...	१७२
८४	स्कन्द देव का स्वागत सम्मान	...	१७२
८५	सुर सेनानी के सम्मान में लोक व्यापी समारोह, शिव का शुभाशीर्वाद, सुरों का सानन्द स्वर्गगमन	...	१७३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आत्म परिचय

सु-विदित अन्तर्वेद मध्य विभु,
विविध सु-विद्या विभव वरिष्ठ।
भूसुर कुल में जन्म हुआ "शिव"
त्याग विराग तपः शिव निष्ठ ॥
प्रकृति-प्राप्त-प्रति विषय विरति थी,
शुभ मिल गया सन्त-सत्सङ्ग।
"शिव" शिशु नव सित मनो-वसन पर,
अमिट चढ़ गया उसका रङ्ग ॥ १ ॥

"शिव" सद् ज्ञान-प्राप्ति-हित गृह से,
वाराणसी गया पठनार्थ ।
निगमागम अध्ययन किया शुभ,
हुआ उदित अति-दृढ़ परमार्थ ॥
योगी गुरु से योग प्राप्त कर,
गया साधने "शिव" हठ-योग।
पुण्य-विजन-वन अन्वेषण कर,
उर-धर सिद्ध स्व गुरु पद योग ॥ ॥२॥

सु-दुस्त्याज्य तृष्णा को तज कर,
गया तपोवन में तप हेतु।
उमा शम्भु के चरण कमल को,
बना भवाब्धि तरण-हित सेतु ॥
मणि-फणि कूट कृष्ण द्वैपायन,
गगनोन्नत गिरिवर थे तीन।
उरग-भालु-मृग-करि परि-वृत थे।
लता विटप बन बारि अहीन ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मध्य-भाग में विगलित विधु सी,
द्रवित स्फटिक सी सुधा-निधान।
भारत-भू को पुण्य-तोय थी
देव-सरित् कर रही प्रदान॥
झर झर ध्वनि रत अविरत सम-रस,
बहा रहे थे निर्झर-नीर॥
ध्वनि श्रुति-प्रिय मुनि मनो हारिणी,
ओम् अनुरणन सी थी गम्भीर॥ ४॥

हरित-भरित सु-ललित तरु बन थे,
लता गुल्म आवृत कमनीय॥
बाधा विघ्न रहित साधक-हित,
साधक योगी मन रमणीय॥
दोनों गङ्गा-तट शोभित थे।
सुगिरि गुहाओं से परि-पूर्ण।
योगी यति निवास योग्य थे,
साधन सुविधाओं से पूर्ण॥ ५॥

हृषीकेश के उच्च शीर्ष पर,
एक गुहा में अति रमणीय।
पद्मासन आसीन हुआ दृढ़,
निश्चय कर मन में कमनीय॥
नाड़ी शुद्धि हुई द्रुत पहले,
मनो विशुद्धि हुई मल-नाश।
द्वादश बर्ष हुए हठ-विधि से
करते अविरत योगाभ्यास॥ ६॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिव्य दृष्टि हुई फिर निर्मल,
हुआ पुनः त्रिकाल का ज्ञान ।
लगा दीखने विगत अनागत,
सब परोक्ष प्रत्यक्ष समान ।।
हुए तत्व-दर्शन शिव दर्शन,
तेज पुञ्ज दर्शन छवि-वान् ।।
मनो निरोध हुआ उससे अति,
तथा बना मन सिद्धि-निधान ।। ७ ।।

विविध-सिद्धि सम्पन्न स्व-मन ने,
की उत्पन्न वृत्ति आह्लाद ।
उससे अति भर गया स्व तन-मन,
इन्द्रियगण मिट गया विषाद ।।
तथा शोक सन्ताप मिट गये ।
अविकल काम-क्रोध भय भीति,
दीखे भूत-मात्र स्वात्मवत्,
उनमें हुई स्वात्मवत् प्रीति ।। ८ ।।

उमड़ पड़ा आनन्द अब्धि फिर,
अनिश अमिट अति-अमल अमान ।
सुधा मधुर अतिशय आकर्षक,
ब्रह्म-ज्ञान सा सुखद महान् ।।
योग सिद्धि का प्रथम-चरण शुभ,
था वह मङ्गल-मय अति भव्य ।।
योगी मुनि जन सुलभ किन्तु था,
प्राकृत जन के लिये अलभ्य ।। ९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रेय कार्य में बहुत विघ्न नित,
पड़ते हैं कहते बुध वेद ।
मेरे साधन में भी महती,
बाधा पड़ी हुआ अति खेद ।।
वह स्थान त्याग कर मैंने,
हृषीकेश के तट पर एक ।
आश्रम-पद निर्माण कराया,
कम पड़ गया विराग विवेक ।। १० ।।

अमित प्रसिद्धि हुई क्षिति-तल पर,
जन गण आने लगे अनन्त ।
वार्ता ही में व्यर्थ निरन्तर,
होने लगा समय का अन्त ।।
इस प्रकार उस योगाश्रम में,
सोलह हायन क्षण से बीत ।।
योगिराज जग में कहलाते,
गाते गये योग के गीत ।। ११ ।।

बाह्य-वृत्ति हो गई अति प्रबल,
जागृत हुए उसी के कार्य ।
समुत्पन्न सङ्कल्प हुए अति,
अविरम अनुपम तम अनिवार्य ।।
भ्रमण जिगमिषा हुई हृदय में,
गया बद्रिकाश्रम केदार ।
दर्शन कर आया स्वाश्रम में,
हुआ न भ्रमणेच्छा संहार ।। १२ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"सह्य अद्रि विन्ध्याद्रि मनोहर,
मलयाचल सुरभित सुमहान ।
देखे तुङ्ग-तरङ्ग महोदधि,
अति अगाध मुक्ता मणि खान ॥
कुमारी कन्या अन्तरीप का,
देखा अति सुन्दर तमदृश्य ॥
क्षिति पर उस सा अन्य नही है,
अनुपम परम मनोरम दृश्य ॥ १३ ॥"

अगणित जलनिधि मिलन मनोहर,
दृश्य वहां अनुपम छविवान् ।
मुखर-नभोन्नत विभु लहरों का,
हिमगिरि सा है शोभावान् ॥
संस्थित हो ज्यों सब रत्नाकर,
कर कर दीर्घ निरन्तर हाथ ।
करते हों सम्मिलन परस्पर,
सस्वर अट्टहास कर साथ ॥ १४ ॥

उदय-अस्त रवि-दृश्य सु-शोभा,
शोणित कमल कुसुम कमनीय ।
तरुण अरुण बन्धूक कुसुम सी ।
शुभ गुलाल गिरि सी रमणीय ॥
तपन शमन हित अरुण-वर्ण रवि,
करने जल निधि स्नान सराग ॥
उतर पड़े आ जलधि मध्य स्रुत,
फैला ज्यों उनका अनुराग ॥ १५ ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पद्म राग से अरुण वहां रवि,
हों नित प्रातः सायङ्काल ।।
उनकी अतुलित अरुणाभा से ।
होता उदधि गगन अति लाल ।।
क्षितिज लाल होता है अतुलित ।
जलनिधि तट होता अति लाल ।।
दर्शक मनुज रङ्ग-रञ्जित सा,
होता है नित अविकल लाल ।। १६ ।।

कला केन्द्र सा रामेश्वर का
मन्दिर लखा भूधरा-कार ।
स्वर्ण मढ़ित हैं शिखर मनोरम,
उसके अतुलित ललित अपार ।।
दुर्ग सदृश-दृढ़ गगनोन्नत हैं,
उसके अमित ललित-प्राकार ।
सकल दिङ् निकर व्याप्त महा वपु,
संस्थित ज्यों विराट साकार ।। १७ ।।

श्रीरङ्गम् मीनाक्षी मन्दिर,
देखे वृहत् पर्वताकार ।
अन्य लखे श्री हरि हर मन्दिर ।
सुगिरि नदी नद नगर-अपार ।।
उत्तर-दक्षिण प्राची-पश्चिम,
सर्व दिशा भव तीर्थ पवित्र ।।
पुण्य नदी नद कुण्ड सरोवर,
दर्शन-स्नान किये शुचि-चित्र ।। १८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परशु पूर्वक राम नाम के,
मेरे दिव्य सुहृत् थे एक।
उनके साथ पठन काशी में
किया हुआ था वर्ष अनेक॥
पढ़ कर वे जब जम्बू आये,
मुझे बुलाया बारम्बार।
उनहीं के कहने से आया,
जम्बू काश्मीर साभार॥ १९॥

"हरित भरित विलसित विपिनों से,
विकसित सुरभित फलित धनों से।
अति शोभित है जम्बू नगरी,
शालि रत्त भृत खेत धनों से।
देव सरित् सी तापी से जो,
परितः परिवृत जन-गण नम्य।
शोभित है धृत सित वसना सी,
कटितट- धृत रसना सी रम्य॥" २०॥

" सुगिरि श्टङ्ग सिंहासन पर जो,
प्रथित पञ्चनद मुकुट समान।
विमल विराजित जम्बू-नगरी,
अतुल अलौकिक कान्ति निधान॥ २१॥

चन्द्र रश्मि विरचित से सु-ललित,
द्युति विलिप्त हैं जिनके गात।
अभिनव अरुण कमल सीं मञ्जुल।
दिव्य देवियों से जो व्याप्त॥ २२॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुर-गण निभ सुन्दर पुरुषों से,
सुधा धवल सदनों से कान्त ।
स्वर्ग लोक से आ उतरी सी,
नगरी इन्द्र पुरी सी भान्त ।। २३ ।।

सुर मन्दिर मण्डित काशी सी,
कथा कीर्तन धर्म प्रधान ।
साधु-विप्र सत्सङ्ग ललित है,
सेवा स्नेह दान सह-मान ।। २४ ।।

इस प्रवृत्त घोर कलियुग में,
सत्-युग दृश्य यहां अवलोक ।
सब संसृति तज परम मुदित हो,
"शिव" आ बसे विगत भय-शोक ।। २५ ।।

धर्म प्रधान नगर जम्बू था,
साधु सन्त आते थे नित्य ।
उनकी अति सेवा करती थी,
जनता समझ धर्म औचित्य ।।
मैं भी जब जम्बू में आया,
मुझ को महापुरुष मन-मान ।
भक्ति सहित जनता ने मेरी,
की सादर सेवा सम्मान ।। २६ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जनगण के ही अति आग्रह से,
जनगण का पाकर सहयोग ।
दुखी दरिद्र दीन जनता के,
पर्वतीय विलोक कर रोग ॥
चमत्कार कारी दुख हारी,
कर अभीत भेषज निर्माण ।
जनगण को भगवान् मान कर,
सेवा व्रत रत हुआ महान् ॥ २७ ॥

श्री जम्बू काश्मीर राज्य में,
आयुर्वेद चिकित्सा मीत ।
करते हुए निमिष से द्रुत-तर,
चौंतीस वर्ष गये "शिव" बीत ॥
सत्रह वर्ष श्री काश्मीर में,
सत्रह श्री जम्बू में वर्ष ।
जन नारायण सेवा करते,
बीते "शिव" के सर्व सहर्ष ॥ २८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूमि स्वर्ग शुभ काश्मीर है.
अतुलित अनुपम सुषुमावान् ।
जिसको निरख स्वर्गपुर को सुर
तुच्छ समझते तूल समान ।।
सुन्दर हिम गिरि उपवन बन है,
सुहृद नदी नद सर वर स्रोत ।
उनके सुधा-मधुर शुभ जल से,
सब प्रदेश है ओतप्रोत ।। २९ ।।

अमृतमय मृदु विविध फलों से,
देखे भरे वहां उद्यान ।
हरे भरे खेतों में अतुलित,
मृदुल उपजते सुन्दर धान, ।
केशर क्यारी जग से न्यारी ।
देखी अति प्यारी अम्लान ।
पहले पुष्प उपजता उसमें,
पीछे हो पादप छविवान् ।। ३० ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धन्यवाद

काव्य शास्त्र निष्णात सुलेखक,
अति प्रिय सरल प्रकृति मतिमान् ।
पर उपकार परायण सज्जन,
कौशिक गोपीनाथ महान् ।।
उनकी ही अति अनुकम्पा से,
स्वकृति प्रकाशन कार्य महान् ।
सकल सिद्ध हो गया चारुतम,
पा उनका सहयोग अमान ।। १ ।।

अति निस्वार्थ भाव से अविरत,
लग कर यह स्वकार्य मनमान ।
क्रिया समुद् अविकल सम्पादन,
किया न तनिक कष्ट का ध्यान ।।
उनका अति ही है कृतज्ञ "शिव"
धन्यवाद करता साभार, ।
उन पर कृपा करें कल्याणी,
परमेश्वर प्रभु करुणा-गार ।। २ ।।

ब्रह्मचारी शिव प्रसाद त्रिपाठी

अमरेश्वर मन्दिर
रानी तालाब, जम्मू ।
१-३-१८९० शक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वीकृति-याचना

हैं आप अनादि अनन्त अचल,
महिमा भी आप की है अपार।
जा सका न त्रिभुवन मे बुध जन,
कोई भी उसके कभी पार॥
होते हैं बाल-वचन विगलित,
होते हैं ज्यों जन-प्रिय अपार॥
यह बाल-बुद्धि-बटु-शिव-कृति त्यों,
स्वीकार कीजिये कृपागार॥ २॥

समर्पण

यह शिव की ही अनुकम्पा से,
हो सका विनिर्मित "शिवालोक"।
शिव कृपा-दृष्टि से ही इस को,
हो सका मुदित अवलोक लोक॥
अति ही प्रसन्न है शिव बटु यह,
अति दुर्लभ-शुभ-अवसर विलोक।
सादर सुसमर्पित है शिव के,
शुचि-चरण-कमल में "शिवालोक"॥३॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माहात्म्य

आलोकित होता है जिस से,
सब अन्तस्तल घनतिमिर व्याप्त ।
होते है प्रकट प्रसुप्त लुप्त,
भावी-पदार्थं जिसको सु-प्राप्त ।।
मद-मोह-लोभ-रिपु-काम-क्रोध,
होते हैं जिसको निरख नष्ट ।
वह "शिवालोक" अविकल विलोक,
होते हैं सकल विनष्ट कष्ट ।।४।।

विभु-वैभव द्विविध-निरामयत्व,
अनुपम-अविकल-परमात्म-तत्व ।
अतुलित - आनन्द अद्वन्द्व - सत्व
निरवधि-प्रतिभा विभु-बुद्धि-मत्व ।।
जिसके आराधन से अधिगत,
होते हैं ये उपरोक्त तत्व, ।
इस "शिवालोक, का सब महत्व,
कहने में कोई न क्षम सत्व ।। ५ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो शिवालोक का पुरश्चरण,
करता है कर शिव-चरण-वरण ।
शिव- अर्पण करता सोपकरण,
शिव उसे शरण करते वितरण ॥
वह अनायास कर क्लेश-तरण,
करते उसको सुख-शान्ति वरण ।
सब पूर्ण मनोरथ हों उसके,
हों आधि-व्याधि सब-विघ्न-हरण ॥ ६ ॥

शिवालोक की विशेषता—

हैं अमित-सवर्णिक-मधुर-शब्द,
हैं ललित अपरिमित—अनुप्रास ।
भव-भक्ति-विभूषित-भूरि-भव्य,
विभु-भाव-भङ्गिमा का विभास ॥
है शिव-पुराण पर आधारित,
परि-पूर्ण-कथानक का विकास ।
है "शिवालोक, से आलोकित,
अतुलित-सु-काव्य का महाकाश ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है रूचिकर षड्-रस-व्यञ्जन-निभ,
अति हृदयाह्लादक "शिवालोक" ।
है मन-मोहन-मोहन सन्निभ
होता अशोक अवलोक लोक ।।
आरम्भ अध्ययन एक-बार,
जो सुधा-स्यन्दि यह "शिवालोक" ।
वह करता है बिन पूर्ण किये,
नहिं सकता है फिर त्याग लोक ।।

शिव-मङ्गलाचरण

शिव ! अविकल-ब्रह्म तुम्ही तो हो,
शिव तुम ही अद्भुत- माया हो ।
शिव प्रभु तुमही हो जीव-जगत्,
जीवों की तुमही काया हो, ।।
शिव-बिम्ब एक प्रति बिम्बअमित,
प्रति-बिम्बित-विश्व तुम्हीं तो हो ।
शिव एक अनेक रूप-धर कर,
उनमें प्रविष्ट तुम ही तो हो ।। १ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शङ्कर सब में व्यापक तुम हो,
तुम ही हो शङ्कर व्याप्य ब्रह्म।
शिव सिवा आप के कोई भी,
है नहीं कहीं भी अन्य ब्रह्म।।
तुम सृजन-मरण-संहरण - हेतु,
धरते हो माया-मय-शरीर।
शिव-अमित-रूप-धर तुम जग में,
करते हो क्रीड़ा धर्म - धीर।। १० ।।

भगवान् भवानी-भर्ताभव,
भव-भूति भूत-भावन भूमा।
भूतेश्वर भीम भुवन - भर्ता,
भू-भूषा भानुभर्ग - भूमा।।
भास्वर विभुस्वाभा नमो भूमि,
ककुभा-भर अभितः भासमान।
विभु शम्भु स्यम्भू भू अभिभू,
शुभ-प्रतिभा-भास्कर-भासमान।। ११ ।।

तुम विश्व-विदित तुम वेद-विदित,
तुम सर्व-विदित अविदित तुम शिव।
तुम सर्व आदि तुम शिव अनादि,
तुम शिव अनन्त चिन्मय तुम शिव।।
तुम निराकार साकार - तुम्ही।
जग के बाहर भीतर तुम शिव।
तुम ज्ञान रूप विज्ञान - रूप,
सद्रूपानन्द-रूप तुम शिव।। १२ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री गणेश मङ्गलाचरण

मानस-सर-शुचि-जल-केलि-लग्न,
सह सिद्धि-स्वदेवी-दिव्य-व्रात ।
जल भर स्व-सुण्डसेऊर्ध्वं क्षिप्त,
करते उनके अभिषिक्त - गात ।।
अतिशय-प्रसन्न गजबदन धन्य,
सुर अग्र-गण्य श्रीमद् गणेश,
कर कृपा-शस्त दो बरद-हस्त,
सब विघ्न हरो सब हरो क्लेश ।। १३ ।।

मधु-सुधा-मधुर-स्वादिष्ट-इष्ट,
सुमनोहरमोदक विपुल-भाण्ड ।
अवलोक अपरिमित - भरे धरे,
सम्मुख अति-प्रमुदित हो सकाण्ड ।।
हेरम्ब सुलम्बोदर अम्बा,
मुख ओर देख अविलम्ब स्वास्य ।
लग गये खोल खाने मोदक,
कर कर प्रिय लीला-ललित लास्य ।। १४ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देवी मङ्गला चरण

हे जगज्जननि ! हे जगज्योति !
हे जगज्जीव-जीवन - ज्वाले ।
हे जग कारिणि ! हे भव तारिणि,
हे दुष्ट-दैत्य दारिणि बाले !
हे करुणा वरुणालये देवि !
हे अरुण तरणि ततिभा रूपे ।
दो दिव्य- बुद्धिवर महादेवि,
भगवति भविके त्रिभुवन-भूपे ।। १५ ।।

जो महिष-मर्दिनी महा शक्ति,
जो महा - महा मायादेवी ।
जीवों की उज्वल-स्वात्म-ज्योति,
प्रज्वलित- शाश्वतिक - जो देवी ।।
जो भक्त वत्सला दया-मयी,
जो क्षमा-प्रदान-परा - देवी ।
अनुकम्पा कर सब हरे विघ्न,
दुख द्वन्द्व-दुरित दुर्गा - देवी ।। १६ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव के ब्रह्मत्व में केनोपनिषद् का प्रमाण

ब्रह्म का यक्षावतार

सुर-श्रेष्ठ देख कर ब्रह्म-विजय,
यह मन में समझे साभिमान ।
यह महिमा विजय हमारी है,
हम महा-महिम हैं विजयवान् ।
यह विबुध-वरों का दुरभिमान,
अविलम्ब ब्रह्म सब गया जान ।
ये सुर संसृति-सञ्चालक हैं,
मैं दूंगा इनको स्वात्म-ज्ञान ।। १७ ।।

वह निराकार आकार विरच,
अवतरित हुआ सुर-गण समक्ष ।
शत - भास्कर सा विभ्राज-मान,
वर-विबुध-विलक्षण एक यक्ष ।।
अद्भुत-प्रभाव से सुर उसके,
सब हुए प्रभावित महा-भाग ।
निज-चरण-कमल-धर-अति पवित्र,
किसलिये किया यह भूमि-भाग ।। १ ।।

ये अविज्ञात हैं कौन इन्हें
क्या तुम में कोई जान सका ?
है त्रिविध-पिहित का ज्ञान तुम्हें,
पर इन्हें न कोई जान सका ।।
ये हैं निगूढ़-विभु-विबुध-सदृश,
इनका है करना कठिन ज्ञान ।
तुम जाकर इन से प्रश्न करो ।
हैं कौन आप हे महीयान ? ।। १९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुर-पति ने भेजे सभय अग्नि,
वे गये दक्ष - यज्ञ सम्मुख ।
जो अपरि-मेय-मति-शक्ति-केन्द्र,
जो है अजेय अज सर्व-प्रमुख ।।
आते ही प्रश्न किया उसने,
तूं कौन है ? क्या बल है तुझ में ।
सब जग को शक्ति जलाने की ।
मैं अग्नि देव हूं है मुझ में ।। २० ।।

अज्ञात-यक्ष ने एक शुष्क
तृण दिया अग्नि को अग्नि देव ।
दो जला इसे सब शक्ति लगा,
नहि जला सके तृण अग्नि देव ।।
अति-लज्जित होकर लौट गये,
कुछ जान सके नहि यक्ष-भेद ।
जा कहा इन्द्र से खेद - सहित,
हम समझ न पाये यक्ष-भेद ।। २१ ।।

फिर वायु-देव को यक्ष निकट,
भेजा सुरेन्द्र ने द्रुत सखेद ।
तुम जाओ देखो यक्ष है क्या,
या कौन है यह सब समझ भेद ।।
आओ बतलाओ लौट मुझे,
उसका रहस्य है अतिनिगूढ़ ।
इस गुप्त - ज्ञान - सम्पादन में,
बन गये सभी हम अति-विमूढ़ ।। २२ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब वायु गये उनके समीप,
पहले ही बोले-दक्ष-यक्ष !
तुम कौन हो ? क्या बल है तुम में ?
सब कहो सत्य मेरे समक्ष ॥
मैं वायु - देव हूं महाबली,
जो वस्तु मही पर है समस्त ।
हम उसे उड़ा कर नष्ट भ्रष्ट,
कर सकते हैं सब अस्त व्यस्त ॥ २३ ॥

तृण दिया यक्ष ने एक-शुष्क,
लो इसे उड़ा दो वायु-देव !
वे तनिक न वह तृण उड़ा सके,
सब स्व-बल लगाकर वायु-देव ॥
अति-लज्जित होकर लौट गये ।
सुर - पति से जा बोले सखेद,
ये अति - रहस्य - मय है कोई ।
हम सके न इसका समझ भेद ॥ २४ ॥

तुम स्वयं इन्द्र इसके समीप,
जा प्राप्त करो सब यक्ष ज्ञान ।
यह कौन कहां से आया है,
यह कितना है बल वीर्यवान् ॥
हम इसके सम्मुख अनुत्तीर्ण,
हो गये देव सब निहत-वीर्य ।
इसके सम्मुख जा हम सब का,
हर जाता है बल बुद्धि वीर्य ॥ २५ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अति-दूर-तिरोहित अति-परोक्ष,
सब भूत भविष्यत् वर्तमान।
इन सब का रहता है अविरत,
अमितज्ञ इन्द्र को सर्व-ज्ञान॥
जब गये इन्द्र उसके समीप,
हो गया यक्ष द्रुत तिरोधान।
अति किया इन्द्र ने अन्वेषण,
हो सका न उसका तनिक ज्ञान॥ २६ ॥

थे जिनके दिव्य सहस्र-नेत्र,
सब कुछ विलोकने में समर्थ।
वे हुए विलोचन से सुरेन्द्र,
सब हुई शक्ति-मति-प्रगति व्यर्थ॥
निज - नभ में देखी हेमवती,
अति - रूपवती शोभा - धामा।
सुर हार ब्रह्म की हुई विजय,
बोली सुर-पूज्य उमा रामा॥ २७ ॥

अति-कान्ति-मयी थी उमा जहां,
द्रुत गये गगन में वहां इन्द्र।
थे वहां ब्रह्म-सन्निकट किन्तु,
अन्वेषण नहि कर सके इन्द्र॥
हे गिरिजे ! तुम ईश्वर समीप,
करती हो अविरत सन्निवास।
तुमको परमेश्वर का अविरत,
रहता है सब विधि पूर्ण-भास॥ २८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो करा कृपा कर तुम मुझको,
उस पूर्ण-ब्रह्म का तूर्ण ज्ञान ।
यह विनय उमा से की उसने,
करवाया उसको ब्रह्म-ज्ञान ॥
हो गया ब्रह्म का निकट-स्पर्श,
इसलिये हुए सुर-श्रेष्ठ इन्द्र ।
यह विजय ब्रह्म ने सुर-हित की,
हो गये अगर्वित समझ इन्द्र ॥ २९ ॥

वेदो में शिव को ब्रह्म कहा,
बतलाया शिव का अनादित्व ।
केनोपनिषद् में शङ्कर का,
है यक्ष रूप में अवतरित्व ॥
है अपरिमेय अज अपरिज्ञेय,
अविरत अजेय है शिव नितान्त ।
सर्वातिक्रान्त सर्वज्ञ विज्ञ,
परि-पूर्ण-शक्ति-मति अविदितान्त ॥ ३० ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव के सर्वश्रेष्ठत्व में लिङ्ग-पुराण का प्रमाण

थी स्थावर-जङ्गम-जीव-शून्य-,
क्षिति नगर-ग्राम-पुर-गृह-विहीन।
वह थी नव-जात-बालिका सी,
अति-शय-जन-प्रिय सब वस्तु हीन॥
थे केवल ब्रह्मा हरि दो सुर,
जो प्रथम सृजन के थे महान्।
हो गया परस्पर यह विवाद,
मैं विधि हरि! हूं तुम से महान्॥ ३१॥

हरि ने बिधि से बिधि ने हरि से,
यह कहा साग्रह बार बार।
मैं सब विधि हूं तुम से महान्,
दोनो नहिं माने तनिक हार॥
दोनों ने देखा प्रकट हुआ,
है एक महा-अद्भुत-प्रकाश।
भर गईं दिशाएं सब उस से,
सब भूमि भाग सब महाकाश॥ ३२॥

हो गये चकित उसको विलोक,
विधि-बिष्णु-अलौकिक महालोक।
फिर हुई स्व-मानस में उनके,
ईहा यह क्या है महालोक॥
यह अतुल-अपरिमित-महा-लोक,
जिसका न कहीं है अन्त-पार।
इस ज्योतिपुञ्ज को बार बार,
साञ्जलि सविनय है नमस्कार॥ ३३॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तब हुई वियद्-बाणी तत्क्षण,
यह ज्योति-लिङ्ग है महीयान।
तुम दोनों के सुपरीक्षण का,
यह निर्णायक है पृथु-स्थान ।।
जो इसका अन्त देख लेगा,
तुम दोनों में वह है महान्।
तुम दोनो यत्न करो इसके।
पाने का भरसक अन्त-ज्ञान ।। ३४ ।।

विधि व्योम ओर को गये विष्णु,
पाताल - लोक की गये ओर ।
दोनों के बल का अन्त हुआ,
पर मिला न उसका अन्त छोर ।।
दोनों ही आये लौट पुनः,
थे गये जहां से उसी स्थान।
हरि को महान् कहलाने का।
मिट गया मोह-मिथ्याभिमान ।। ३५ ।।

हरि को यह निर्मल ज्ञान हुआ,
हम में है कुछ भी तत्व नहीं।
यह ज्योतिर्लिङ्ग है महीयान,
उसका सा है न महत्व कहीं ।।
यह ज्योतिर्लिङ्ग महा-शिव है।
है यही ब्रह्म अतिबल - निधान।
निःसीम शक्ति से ही उसकी।
हम हैं परिसीमित शक्तिमान ।। ३६ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"शिव"-मति-पाकर सुरनिकर जिसमें हुआ अशोक।
शिवालोक का अति ललित, रचा-प्रथम-आलोक ॥ १ ॥

"शिवाशिव"—प्रणति

सङ्कल्प-मात्र से ही जो प्रभु,
करता है अनुपम-सृजन-सृष्टि।
जो जन-गृह में अविरत अतुलित,
करता है धन आनन्द वृष्टि ॥
जिसकी देती है स्वास्थ्य दान,
शुभ-ज्ञान निरन्तर दया-दृष्टि।
वह प्रभु "शिव" कृत नित-नमस्कार।
स्वीकार करै कर दया-दृष्टि ॥ ३७ ॥

जो सर्व-शक्ति सम्पन्न - धन्य,
जो सकल विश्व का अधिष्ठान।
जो विधि हरि सुर सुरेन्द्र स्वामी,
जो अविकल-विभु-वैभव-निधान ॥
जो सृजन - भरण - संहरण-क्षम,
जो परमेश्वर पशुपति महान्।
हों उमा सहित उन शङ्कर को,
"शिव" के प्रणाम सविनय स-मान ॥ ३८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रार्थना

मुझ को अप्रतिमप्रतिभा दो,
प्रभु हर लो अविकल अज्ञान ।
मेरे मन में समुत्पन्न हो,
अनुपम-दिव्य-काव्य-विज्ञान ।।
मुझमें समुत्पन्न लोकोत्तर,
अति- कुशाग्र-मति हो जगदीश ।
चारु-चमत्कारक- रचना हो,
मेरी सर्व-लोक-प्रिय ईश ।। ३९ ।।

परम-स्वतन्त्र रहूं मैं ईश्वर,
कभी न होऊं मैं परतन्त्र ।
कभी न दीन दरिद्र रहूं मैं,
सब तन्त्रों में रहूं स्वतन्त्र ।।
अति-पवित्र-सम्पन्न देश में,
अति पवित्र कुल में भगवान् ।
देना जन्म महेश्वर मेरा,
करना निर्मल-तन-मन- दान ।। ४० ।।

सदा रहूं मैं भक्त आप का,
शिव ! मति ऐसी करो प्रदान ।
कभी न मिथ्या-मति मेरी हो,
सदा रहूं में विरति - प्रधान ।।
नारी-देह कभी मत देना,
कभी किसी का बनूं न दास ।
शिव ! दो मुझे कृपा कर ये वर,
मुझमें दृढ़ आशा-विश्वास ।। ४१

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गङ्गा वतरण क्षेत्र

चरण-कमल-सञ्चरण-प्राप्त कर,
गिरिजा के जग-पूज्य-पवित्र ।
गौरी-शिखर सुतीर्थ हो गया,
था उसका शुभ-दृश्य - विचित्र ॥
एक ओर उसके पवित्र-तम,
गङ्गा का था प्रथित - प्रवाह ।
एक ओर विस्तृत-हिम-गिरि था,
भव्य-हिमानी-पिहित-अथाह ॥ ४२ ॥

शिव के उत्तरीय शुचि-पट सी,
उज्वल-निर्मल-शीतल-लोल ।
शुचि-सुर-सरित वहां करती थी,
कलरव-युत-कल्लोल - किलोल ॥
गङ्गा के सुन्दर दोनों - तट
लता-गुल्म-गुम्फित - कमनीय ।
शिव-सेवक-सुर-गण - सेवित थे,
उमा-चरण-अङ्कित नमनीय ॥ ४३ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुहिन-निपात-दर्शन

हो गया निमिष में सघन गगन,
फिर चला अपरिमित - सघन-वात ।
फिर हुआ अपरिमित शब्द भरित,
भा-भरित त्वरित-विद्युत् - निपात ।।
फिर हुआ समुज्वल-तुहिन - विभृत,
विभुव्योम शम्भु सा - समवदात ।
होने फिर लगा विचित्र विपुल,
शिव-हास-भास सा हिम-निपात ।। ४४ ।।

ज्यों अभिनव धुने कपास पहल,
अविरल-अति-कोमल स्वल्प स्वल्प ।
लग गये बरसने विभु-नभ से,
हृदया-कर्षक युगपत अनल्पत् ।।
लग गई अपरिमित-तुहिन - राशि,
अवनी पर उन्नत-गिरि - समान ।
ज्यों चन्द्र स्वयं विगलित - होकर,
हिम-गिरि पर शोभित हुए आन।। ५५ ।।

हे तुहिन अचल ! तुम रजत-धवल,
तुम मुकुर-अमल तुम विधु-समान ।
तुम समभूतल तुम विषम-वितल
तुम शिव-निष्फल औषधि-निधान ।।
नित-धृत-घन-दल - -पल पल अविरल,
हिम-वृष्टि-विमल - रवि हिमसमान ।
गङ्गा- कल-कल कल-अनिल-सलिल,
क्षिति-अति-निर्मल-स्वभू समान ।। ४६ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी विजन-सृष्टि अति-गुहिन-वृष्टि,
पिच्छिलित-दृष्टि नीरव अवनी ।
द्रुत हुआ अपरिमित हिम-निपात,
अति-धवलबनी अवनी नवनी ।
था स्फटिकशैल सा तुहिन-शैल,
भास्वरित-विमल-नम - मुकुरसदृश ।
दिग् विदिग व्याप्त स्थित गगन-प्राप्त ।
मन-मोहन-मोहन मन्त्र सदृश ।। ४७ ।।

गङ्गावतरण क्षेत्र स्वरूप

था ऊपर-अविचल-सघन-तुहिन,
था अधः तरल चल जल पवित्र ।
थे एक तत्व के दो - स्वरूप,
शिव--जीव-तत्व सन्निम विचित्र ।।
था अमर-सरित् का दर्शनीय,
पृथु एक वहां अनुपम-प्रपात ।
जो दृषद्-पतित-शतधा - विभक्त,
था सुर-करि-कर सा समवदात ।। ४८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुर-सरित-स्वरूप

आनन्द-कन्द ज्यों ब्रह्म स्वयं,
हो द्रवित परित्यज ब्रह्म-लोक ।
हो रहा अवतरित-सलिल रूप,
धर करने पावन भूमि-लोक ॥
वह देख सुधा-जल-पृथु - प्रपात,
सुख-भर-विभोर हो सकल-गात,
वह ब्रह्मानन्द निजात्म - जात,
होते विलोक नहिं पलक-पात ॥ ४९ ॥

निर्मल-निर्झर निकल रहे थे,
अविरत करझर झर झङ्कार ।
लता-विटप-पल्लव-प्रसून-युत,
अनिल-लोल थे ललित अपार ॥
जहां तहा गिरि से गिरते थे,
अविरत उज्वल पृथुल - प्रपात,
अविरल-जल-कण वहां उड़ाकर
केलि लग्न था चञ्चल-बात ॥ ५० ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

युग युगान्त से सञ्चित शिव के,
अट्टहास सा हिम सङ्घात ।
हिम गिरि का अमरत्व वि-बोधित, करता है वह विधु अवदात
सर्व ओर अद्भुत भास्वर है ।
केवल वहां तुहिन - संसार,
वहां स्वयम्भू स्वाभाविक हैं ।
विपुल श्टङ्ग शिव-लिङ्गाकार ।। ५१ ।
गङ्गा-गिरिदर्शन ललित-सु-ललित-तुहिन-निपात ।।
जहां हुआ आलोक-शुचि, वह द्वितीय अवदात ।। २ ।।

उमा की तपस्या

दिनभर वहां तपश्चर्या रत,
रहती थी गिरिजा शिव-निष्ठ ।
निशा-समय निज गृह आतीं थीं,
निज-सखि विजया जया - विशिष्ठ ।।
इस प्रकार गिरिजा के शिव-तप,
करते बहु-दिन गये व्यतीत ।
तेजो-मय हो गया उमा-तनु,
हुआ उमा-मन त्रिगुणातीत ।। ५२ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गङ्गा का अवतरण तीर्थ था,
गिरि-गृह गौरी- शिखर समीप ।
वहां सगण शिव शीघ्र आयेंगे,
सब भुवनों के महा-महीप ।।
शुभागमन सुन शिव का विरि पर,
अतुलित मुदित हुए गिरिराज ।
शिव-दर्शन की लगन लग गई,
मन में रख कर गिरिजा काज ।। ५३ ।।

गङ्गा वतरण क्षेत्र पर शिवागमन

दक्ष-यज्ञ में योग अग्नि से,
किया सती ने भस्म शरीर
दक्ष-यज्ञ विध्वंस करा कर,
स्वस्थित हुए शम्भु गम्भीर ।।
गङ्गा केअवतरण तीर्थ - पर,
थोड़े से गण ले कर साथ ।
हिमगिरि के शुचि उच्च शिखर पर,
गये शम्भु सर्वेश्वर - नाथ ।। ५४ ।।

31629
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव-समाधि

गङ्गा के पवित्र- उद्‌गम पर,
सर्व-भूत-भावन भगवान् ।
आत्म-निष्ठ-अविरत- समाधि में,
रहने लगे मग्न मतिमान ।।
सर्व-प्रकार से प्राणि-मात्र का,
गमनागमन किया विनिषिद्ध ।
पूर्ण-विरति रति-स्वात्म-मात्र में,
सिद्धेश्वर की हुई प्रसिद्ध ।। ५५ ।।

दीर्घ-काल की दृढ़ समाधि में,
बैठे थे शङ्कर भगवान् ।
सबल असुर से त्रस्त देव थे,
चाह रहे थे शिव से त्राण ।।
अचल हिमाचल सी समाधि से,
सहज न था उनका उत्थान ।
शिव-प्रकोप-भाजन बन कर फिर,
मिल सकता किसको कल्याण ।। ५६ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुरों का आत्म खेद

छीना सर्व तारकासुर ने,
देवों का अविकल-सुख-स्वर्ग ।
प्राण-बचा जा छिपा गुहाओं ।
मे भय-विकल-सकल-सुर-वर्ग ।।
सकल-यत्न कर देव थक गये,
कोई निकला नहीं उपाय ।
लगे सोचने सुर कैसे हो,
रक्षा यत्न किया क्या जाय ।। ५७ ।।

कामारि पर काम का आक्रमण

इन्द्र आदि देवों ने मिल कर
अतुलित प्रेरित किया अनङ्ग ।
जागृत कर शिव को समाधि से,
देव-कार्य तुम करो अनङ्ग ।।
काम-देव चल पड़ा सहायक
लेकर अपना साज समाज ।
शिव-समीप जाकर उसने-रच,
दिया रुचिर राज-ऋतु-राज ।।५८।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऋतु - राज - सृजन

मरकत-मणि के किरण-निकर सा,
नव-सिरीष-पुष्प- मृदु-श्याम ।
क्षिति पर अतुलित शस्य बिछ गया,
ललित हरित मखमल अभिराम ।।
नील-गगन नवनील-रत्न सा,
अति-निर्मल हो गया सुकान्त ।
शुभ-सु-सह्य-रविभासे भास्वर,
सुन्दर प्रिय हो गया दिशान्त ।। ५९ ।।
अविकल-अवनीतल पर है ज्यों,
काम-देव अनुपम कमनीय ।
अविकल-भूत-मात्र पर त्यों ही,
उसका है प्रभाव रमणीय ।।
उसके निज-अप्रतिम-प्रभाव से,
हुए प्रभावित जीव अशेष ।
लोक-लाज ऋतु-गमन त्याग सब,
सप्रणय मिलने लगे विशेष ।। ६० ।।
बहने लगा सुरभि-युत सुन्दर,
मन्थर-गति से सुखद-समीर ।
सुर-मुनि-नाग-असुर-किन्नर-नर,
सेवन कर हो उठे अधीर ।।
भाँति भाँति के सुरभित सुन्दर,
विकसित हुए कुसुम अत्यन्त ।
उनके मिष भृश विहँस रहे थे,
रति-सु-कान्त-युत सन्त-वसन्त ।। ६१ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोकिल-कीर-सारिका-समुदय,
नृत्य-निरत-मयूर-चकोर ।
हृदय-हारिणी लगे बोलने,
बोली अति हो प्रेम-विभोर ।।
अतिशय-ललित-पल्लवित-कुसुमित,
कोमल-लता-गुल्म - गुम्फित ।
हरित-भरित-बन-विटप बन गये,
अभिनव स्निग्ध श्याम शोभित ।। ६२ ।

शिव-समीप सुर- सुन्दरियों ने,
रचा-रुचिर-रास वर - गान ।
विविध-वाद्य-युत परम-मनोरम,
छेड़ी सब मिल उन्नत तान ।।
अति-आकर्षक-अमृत-वर्षी,
समाँ बँध गया सरस महान ।
मन्त्र मुग्ध से मुग्ध हो गये,
देख चराचर जीव अमान ।। ६३ ।।

काम-देव ने शिव-समीप जा,
देवों का उर-धर कल्याण ।
पुष्प-धनुष में काम-बाण रख,
छोड़े शिव को बना निशान ।
शिव-उर में जब निशित-कामशर,
जाकर लगे अमोघ अमान ।
काम-देव ने समझ लिया अब,
हुआ त्वरित मेरा बलि-दान ।। ६४ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मदन-दहन

निज-निषङ्ग सब रिक्त किया,
सब एक साथ शर शिव-उरमार।
अमित-पल्लवित-लता-गुल्म में,
जाकर छिपा विकल हो मार॥
तब हो कुपित-शम्भु ने खोला,
नेत्र तीसरा अनलागार।
जल कर क्षण में भस्म हुआ स्मर,
मचा सुरों में हा हा कार॥ ६५॥

शिवागमन सुर-सरित् तट गिरिजा- तप आलोक,
मदन - दहन-सुसृजन हुआ, यह तृतीय आलोक।

शङ्कर का अन्तर्धान उमा का तप

भस्मसात कर काम-देव को,
हुए त्वरित शिव अन्तर्धान।
शिव- वियोग से उमा-हृदय में,
हुआ शोक-सन्ताप - महान्॥
शम्भु-प्राप्ति के लिये हुई फिर,
उमा-तपोरत तपो निधान।
निज-शरीर इन्द्रिय-मानस-मति,
की एकत्रित शिव में आन॥ ३६॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नारद स्मरण

शिव ने स्मरण किया नारद का,
नारद शीघ्र गये कैलाश ।
मनोवेग सी गति है उनकी,
तीन-काल का रहता भास ।।
सविनय शङ्कर को प्रणाम कर,
बोले "समुपस्थित है दास ।"
शिव ने आज्ञा दी जाओ तुम,
हिम-गिर पर गिरिजा के पास ।। ६७ ।।

भक्ति-परीक्षा लेकर उनकी,
उनको जप तप मन्त्र-विधान ।
सब सिखला देना आराधन,
वेद-विहित् - सर्वोत्तम-ज्ञान ।।
नारद पहुंचे पार्वती के,
निकट हिमालय पर तत्काल ।
पार्वती से बोले सविनय,
मृषा- विरोधी - वचन-कराल ।। ६८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उमा-परीक्षा

नारद के शिव मृषा-विरोधी,
वचन उमा ने सुन तत्काल ।
कहा "शम्भु-पति-निश्चित मेरे,
मेरा यह प्रण-सुदृढ़-विशाल ।।
मेरा यह प्रण तीन - काल में,
अटल रहेगा अविकल सत्य ।
इस व्रत के विरुद्ध और सब,
जो होगा वह निरा असत्य" ।। ६९ ।।

नारद ने फिर कहा उमा से,
"ऐसी करना कभी न भूल ।
अभी तुम्हारी मति अपक्व है,
दैव आप के है प्रति कूल ।।
शिव को वर कर क्या तुम लोगी,
कुछ न मिलेगा शिव के पास ।
अन्त त्याग दोगी तुम शिव को,
पछता कर हो विवश निराश" ।। ७० ।।

शम्भु के नहीं कहीं घर बार,
शम्भु-रहते बन में मन-मार ।
शम्भु का भूत-प्रेत-परिवार,
करेंगे शम्भु न तुम से प्यार ।। ७१ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नित स्मशान में शिव रहते हैं,
जहां भयङ्कर प्रेत्त - पिशाच ।
रहते हैं विकराल - रूप - धर,
करते हैं अति भीषण नाच ।।
भीषण उनके नेत्र दांत मुख,
बड़े भयानक उनके देह ।
कभी महीधर से बन जाते,
कभी युवा शिशु कभी विदेह ।। ७२ ।।

झगड़ते लड़ते बारम्बार,
दौड़ते खाने वक्र - प्रसार
डराते अति - भीषण तनु धार,
बहुत उनसे बचना दुशवार ।। ७३ ।।

शिव गृह में कुछ अन्न न रखते,
सदा शम्भु रहते हैं नग्न ।
केवल-तन ढकने को रहती,
हस्ति - कृत्ति - कटि में संलग्न ।।
भांगधतूरा - भोजन उनका,
तन में लपटे रहें भुजङ्ग !
कैसे कहां रहोगी गिरिजे,
आजीवन शङ्कर के सङ्ग ।। ७४ ।।

SPS
891.431 S 40 S
Sri Pratap Singh Library

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम करो न शिव से प्यार,
रहेगा जीवन भर दुखभार।
करेगा कौन - पुनः उद्धार,
जायगा व्यर्थ जन्म मन भार ॥ ७५ ॥

नारद ने गिरिजा देवी को,
वहुत भ्रमाया इसी प्रकार।
तनिक न उपजा गिरिजा मन में,
शङ्कर के प्रतिकूल विकार
अभी और भी नारद कहते
शङ्कर के अतुलित प्रति कूल।
किन्तु कुपित हो कहा उमा ने,
अब कुछ मत कहना मुनि शूल ॥ ७६ ॥

तुम्हारे वाणी बाण-प्रहार,
रहे हैं मेरा हृदय विदार।
दिया तुमने यह दुःख अपार,
यहां से जल्दी जाव सिधार।
शम्भु की महिमा अपरम्पार ॥ ७७ ।

नारद ने जब गिरिजा जी की,
सुदृढ़-भक्ति देखी अविलम्ब।
पञ्चा-क्षर-शिव-मन्त्र दिया तप
करो इसी को जप कर अम्ब ॥
सर्व-शक्ति-सम्पन्न-सदा - शिव.
करुणानिधि-बर-दानी शर्व।
त्वरित मनोरथ सफल करेंगे,
देवि तुम्हारे शङ्कर सर्व ॥ ७८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गिरिजा का अति कठिन तप

तपो-निष्ठ तो पहले ही थीं ।
पा शिव-कृत नारद सहयोग,
उमा हुई अति घोर तपो-रत,
प्राप्ति-अर्थ शाश्वत-शिवयोग ॥
प्राणायाम योग विधि से कर,
किया यत्न से प्राणनिरोध ।
किया उमा ने स्वात्मनिष्ठ हो,
अविकल-चित्त-वृत्ति संरोध ॥ ७९ ॥

अन्न-वस्त्र-तज उमा रहीं फल,
कन्द-मूल खाकर मुनि अन्न ।
बल्कल-व्याघ्र-चर्म धारण कर,
रहीं तपो-रत परम-प्रसन्न ॥
कन्द-मूल भी त्यागे केवल,
शुष्क-पत्र खा रखा शरीर ।
शुष्क-पत्र भी त्यागे जब तब,
पड़ा अपर्णा-नाम गंभीर ॥ ८० ॥

कुछ दिन जल पी खड़ी रहीं फिर,
जल भी तज तप किया अपार ।
केवल अपने प्राण-वायु को,
बना लिया जीवन आधार ॥
कठिन तपस्या देख उमा की,
उमा-मा मां कह किया निषेध ।
जननी वचन अरण्य-रुदन से,
विफल गये नभ-मारुत-भेद ॥ ८१ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अमित-समय तक एक पैर के,
पञ्जे पर रह कर सुस्थित।
एक चरण-अङ्गुष्ठ - शक्ति पर,
रहीं उमा चिर समवस्थित ॥
वर्षा ऋतु में वर्षा सहतीं,
ग्रीष्म-काल में सहतीं धूप।
तुहिन- वृष्टि सहतीं हिम-गिरि सी,
अविचल होकर शम्भु-स्वरूप ॥ ८२॥

उमा हुईं शिव-मन्त्र-निष्ठ कर,
प्राण-रोध सब तज आधार।
निराधार हो गईं क्रिया फिर,
केवल शम्भु-नाम आधारा ॥
शिव का अविच्छिन्न-मन्त्र जप,
तथा निरन्तर शङ्कर - ध्यान
गिरिजा की आत्मा में स्थिर हो,
बैठा शिव स्वरूप शिव-ज्ञान ॥ ८३ ॥

ध्याता ध्येय ध्यान की त्रिपुटी,
ज्ञाता ज्ञेय भिन्न-भ्रम-ज्ञान।
ये सब त्रिपुटीं लीन हो गईं,
ध्येय ज्ञेय रह गया महान् ॥
गिरिजा शम्भु-समाधि-मगन हो,
हुईं शम्भु से एकाकार।
विस्मृत-निज-सर्वस्व होगया,
हुआ उमा का शिव-आकार ॥ ८४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीन सहस्र वर्ष गिरिजा के,
तप करते हो गये व्यतीत।
तीन-लोक सनाप्त हो गये
विष्णु आदि सब कालातीत॥
पवन रुद्ध हो गये लोक के,
सब के क्षुभित हुए अति प्राण।
मीन तोय बिन यथा तथा सब,
व्याकुल प्राणी हुए अमान॥ ८५॥

उमा का अग्नि प्रवेश तथा अग्नि देव दर्शन

यह तन मैं अब नहीं रखूँगी,
मिले न इससे शिव भगवान्।
चिता बना चेतन कर पावक,
उसमें बैठी कर शिव-ध्यान॥
जला सका नहि अनल उमा को,
रहा शेष हिम-शीतल-देह।
हुआ अमित-प्रज्वलित-अनलनभ,
व्यापक प्रकट हुआ धर देह॥ ८६॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उमा का सर्व भूत विजय

अग्नि-मध्य से निकलीं गिरिजा,
जब तब उनका सर्व - शरीर ।
तेजो मय हो नभ में उठने,
लगा स्वयं ज्यों सचल समीर ।।
सविनय नमस्कार कर बोले,
अग्नि उमा से वचन विचार ।
मुझसे भी है अधिक आप का,
असहनीय तप तेज अपार ।। ८७ ।।

अग्नि आप का पवि-सम-दृढ़-तम,
जला सकेगा नहीं शरीर ।
गला सकेगा तनिक न तन जल,
सुखा सकेगा न तन समीर ।।
भू की गुरुता आकर्षण का,
रहा न तुम पर तनिक प्रभाव ।
गगन-गमन-नभतनु-निवसन बल,
मिला तुम्हें भूत-वश-भाव ।। ८८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अग्नि-वर शङ्कर का विप्र- वेष में आविर्भाव

क्षमा करो श्री गिरिजा-देवी,
दया करो हम पर जन जान ।
शम्भु आप को शीघ्र वरेंगे,
दिया अग्नि ने यह वर-दान ॥
अग्नि देव यह कह कर सत्वर,
हुए वहां ही अन्तर्धान ।
वृद्ध-ब्राह्मण के स्वरूप में,
प्रकटे वहीं शम्भु - भगवान् ॥ ८९ ॥

शिर पर छत्र लिये थे शङ्कर,
सुन्दर वृहत शिखा थी शुद्ध ।
शुचि-चन्दन-त्रिपुण्ड-मस्तकपर,
था विलसित विधु सा सम्बुद्ध ॥
ग्रीवा में थी मञ्जल-माला,
सु-रुद्राक्ष की लसी विशाल ।
उत्तरीय कौषेय वस्त्र था,
कटि-तट-पट था अति छवि शाल ॥ ९० ॥

अति-पुनीत-उपवीत-स्कन्ध पर,
शशिलेखा सा था द्युति-धाम ।
राका शशि-समतनु-भास्वर था,
कर सपात्र लकुटी अभिराम ॥
कक्ष-वक्ष-तल-लसित-वेद की,
पुस्तक थी अति परम - पवित्र ।
चरणों में थीं सुपादुकाएं,
गति बिधि थी विपरीत विचित्र ॥ ९१ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखा सम्मुख वृद्ध-विप्र को,
मस्तक नत कर किया प्रणाम ।
शुचि-शुभ दर्शन दिये दया कर,
कहा लिया फिर अपना नाम ।।
पूजा-परिक्रमा भूसुर - की,
कर गिरिजा बोली भू - देव ।
कौन आप हैं विप्र-देव या,
अन्य आप कोई हैं देव ।। ९२ ।।

काशी-वासी-विप्रों का हूं,
पूज्य-पुरुष कौन हैं आप ।
विजन-विपिन में क्या करती हैं,
क्या मन में है कुछ सन्ताप ।।
श्री हिमगिरि की मैं कन्या हूं,
शङ्कर को बरने को बिप्र ।
विजन-विपिन में तप करती हूं,
मुझे मिलेंगे क्या शिव विप्र ।। ९३ ।।

बहुत-विकल हूं शिव-वियोग में,
तन-मन से अति किया उपाय ।
अमित-काल हो गया अभी तक,
मिले न शुम्भु किया क्या जाय ।।
शिव को कभी न वरना गिरिजे,
शिव के कहीं ग्राम न धाम ।
शिव को वर कर दुखी रहोगी,
शिव का कभी न लेना नाम ।। ९४ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूत-प्रेत भय भीत करेंगे,
प्रीति करेंगे कभी न शम्भु ।
तुम से अति अपनीति करेंगे,
सब विपरीत तुम्हारे शम्भु ।।
मुण्डों की माला शिव पहने,
गले भयङ्कर लिपटे व्याल ।
कालानल सा निटिल नेत्र है,
शिव का प्रलयङ्कर विकराल ।। ९५ ।।

परम-सुन्दरी-उमा आप के,
सकल-विश्व में रूप-समान ।
अन्य नहीं नारी है कोई,
तुम हो निरवधि रूप-निधान ।।
अतुलित-कोमल-अङ्ग आप के,
ज्यों उज्वल अभिनव नव-नीत ।
अन्तः करण स्वभाव आप का,
अति पुनीत अविगीत-विनीत ।। ९६ ।।

ब्रह्मा विष्णु आदि सुर तुम को,
समुद वरेंगे मोद-निधान ।
जिन के रूप-स्वतनु अति सुन्दर,
भुवन मान्य जो वैभव-वान् ।।
अति निष्किञ्चन शिव-विरूप हैं,
सिवा आप के उन को अन्य ।
निम्न कोटि की भी न वरेगी,
अमित-मूढ़ भी अमित-जघन्य ।। ९७ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उमा का प्रकोप

शिव-निन्दक उस वृद्ध-विप्र के,
विविध विरोधी-वचन कराल ।
सुन कर गिरिजा ने क्रोधित हो,
धारण किया रूप विकराल ॥
बोली अरे विप्र-ब्रुव दुर्जन,
छद्म-विप्र निज-जाति कलङ्क ।
रुद्र-द्रोह का तुझे लगेगा,
अमिट भयङ्कर-कलमष-पङ्क ॥ ९८ ॥

सावधान अब और कहा कुछ,
तो तेरी जिह्वा - संस्तब्ध ।
कर दूंगी शङ्कर निन्दा का,
हो जायेगा फल उपलब्ध ॥
शिव-निन्दा सुन-कर मुझ को भी,
होगा अकस्मात अति पाप ।
वार्ता करके शिव-निन्दक से—
मुझ को है अतिशय-सन्ताप ॥ ९९ ॥

हो कर मौन त्वरित कर जाओ,
इस पवित्र भू से प्रस्थान ।
वातावरण पवित्र यहां का,
मलिन कर दिया तुम ने आन ॥
महा-पातकी पतित हुए अति,
शिव-निन्दा कर तुम मति मन्द ।
अशुभ तुम्हारे दर्शन - करके,
होते जन को पाप अमन्द ॥ १०० ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनवद्य-हृद्य-हृदय-आगार ।
शम्भु का खुला भव्य-भण्डार ॥
दयाभृत करने सुख का सार ।
उमा के प्रति सु-प्रीति-व्यवहार ॥१०५॥

चरण कमल में सुपादु काएं,
थीं सुरतरुवर की शोभित ।
करमें स्फटिक-कमण्डल उज्वल,
था मराल सा अति शोभित ॥
था अखण्ड-ब्रह्माण्ड-प्रशाशक.
ब्रह्म-दण्ड-शिव-कर-वर में
शुभ्र-भूति-भासे भासित था,
भव भव के शुचि-तनु-वर में ॥ १०६ ॥

बना कर सरस सौम्य-अनुहार ।
दया कर शम्भु दया आगार ॥
जहां था केवल हिम-संसार ।
वहां जा प्रकटे जगदा-धार ॥ १०७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जागरण

शङ्ख-नाद जब किया व्रती ने
ध्वनि पहुंची उर के अन्दर।
उमा हुई जागृत समाधि से,
सुना शङ्ख का मञ्जुल-स्वर ।।
सम्मुख देख व्रती-विभास्वर,
तेज-पुञ्ज अनुपम-कमनीय।
हुई उमा आनन्द-मग्न छवि,
उनकी देख अनिर्वचनीय ।। १०८ ।।

व्रती रूप धर शिव अवश्य ये,
आये हैं कर कृपा कपालु।
मेरा शुचि-तम-मन इनकोलख,
अतः हुआ इतना स्नेहालु ।।
मेरे अन्तस्तल में - जाकर,
इन की शुभ आकृति अभिराम।
रही विराज विरज पवित्र-तम,
समझ स्वबास-योग्य शुचिधाम ।।१०९।।

प्रणति कर उन को बारम्बार।
बिठाये शम्भु व्रती अवतार ।
विमल-जल से शिव-चरण परवार।
किया अतुलित-स्वागत सत्कार ।।११०।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्सङ्कल्प-मात्र से अभिमत,
पूजा का समुचित-सामान ।
प्रकटित हुआ उमा के सम्मुख,
अभिनव त्वरित ललित तम आन ।।
हुआ तनिक विस्मय 'शिव'—मन में,
क्षणभर फिर उपजा उर ज्ञान ।
क्षण में जो त्रिभुवन रच सकती,
उसको यह क्या कार्य महान् ।।१११।।

अष्ट-गन्ध-युत-शुचि-चन्दन से,
चर्चित कर विशाल-शिव-भाल ।
सुर-तरु के सुरभित- सुमनों की,
पहनाई माला सुविशाल ।।
रत्न - जड़ित - सुवर्ण-आरती,
सुर-सुरभी-घृत से सज्जित ।
व्रती-बदन-सम्मुख-उतार कर,
की शुभ कुसुमाञ्जलि अर्पित ।। ११२ ।।

कल्प-वृक्ष के रुचिर-मधुर-फल,
किये अतुल शिव के अर्पित ।
पुनः व्रती की परिक्रमा कर,
सविनय-नति-तति की अर्पित ।।
पूजा कर निज-हृदय-देव की,
सहृदय सविनय सविधि-विधान ।
मधुर बचन से निर्मल - मन से,
किया अमित-स्वागत सम्मान ।।११३।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुदित हो करके बारम्बार।
व्रती ने की पूजा स्वीकार॥
दिया वर समुद् मनोरथ-सार।
मिलें पति तुम्हें शम्भु-भव-सार॥११४॥

वर देकर गिरिजा को शङ्कर,
हुए त्वरित फिर अन्तर्धान।
निज-तप-फल अब प्राप्त हुआ यह,
गिरिजा के मन उपजा ज्ञान।
गिरिजा जाने लगीं स्वगृह में,
पुर के बाहर पुर - जन आन।
प्रीति - युक्त ले गये उमा को,
जननी जनक सजाति - समान॥११५॥

उमा को अति-प्र-मुदित अवलोक।
उमा से सुखी हुए मिल लोक।
लगाया मांने गले सप्यार।
उमा का किया अमित-सत्कार।११६॥

उमा - परीक्षा उग्र - तप, भूत-विजय वर-दान।
इस चतुर्थ आलोक का हुआ सफल अवसान॥४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुरों द्वारा शिवस्तवन

प्रकुपित शिव को प्रसन्न करने,
लगे शिव - स्तुति से सब देव।
निज-अक्षम-अपराध समझकर,
शिव-प्रकोप-भय-भीतित-देव ।।
निगमागम अगम्य आप की,
महिमा अविदित-अपरम्पार।
अविरत - गाकर पार न पाये,
थके हार कर बारम्बार ।।११७।।

सिवा शम्भु के अन्य किसी को,
नहीं जानते हम सब देव।
सिवा शम्भु के अन्य किसी को,
नहीं मानते हम सब देव ।।
सिवा शम्भु के अन्य किसी का,
स्तवन न करते हम सब देव।
केवल शिव को ही अविरम हम,
नमस्कार करते सब देव ।। ११८ ।।

एक आप ही अद्वितीय है,
कोई अन्य न आप समान।
एक ब्रह्म है वही आप है,
सब में व्यापक एक समान ।।
अज अजेय अनुपम अविनाशी,
अपरिमेय अति आभा-वान्।
आदि अनादि अनन्त शान्ति-मय,
पूर्ण-ज्ञान-विज्ञान-निधान ।। ११९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोटि-कोटि-विद्युत-विकास सम,
कोटि कोटि विधु-भानु-समान।
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड-विधायक,
अनन्त भूतान्तरात्मा प्राण ॥
एक आप ही सृष्टि रचयिता,
रक्षक संहारक बलवान।
अति-सु-योग्य-अधिनायक सब के,
चिन्मय सुखमय सत्तावान्। १२० ॥

अणु से भी लघु अणु उर अन्दर,
अति महान् से आप महान्!
रवि शशि पवन तथा मन की गति,
से भी आप अधिक-गतिमान् ॥
सर्व-विभव-भूत-भव-विभूति तुम,
भूत-विभावन-भृगु-भा-वान।
आशुतोष! शिव तुम अति भोले,
निज-जन वत्सल-दया-निधान ॥१२१॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव का विष-पान

देव-दानवों ने जब मन्थन,
किया दुग्ध निधि रत्न निधान।
काल-कूट घट निकला उस से.
अति-भीषणतम् काल-समान ।।
ज्वाला-पुञ्जो से उसकी अति,
ज्वलित लगे जलने सुर-गात ।
त्राहि त्राहि लग गये बोलने,
भय-व्याकुल होकर सुर-व्रात ।।१२२।।

अति-असह्य नाशक-विष-घट को,
करिये हरि अब शीघ्र समाप्त ।
यदि विलम्ब की तो सब होगा,
जल कर सुर-कुल शीघ्र-समाप्त ।।
जाने लगे विष्णु - सुर - प्रेरित,
काल - कूट-घट-निकट निराश ।
होने लगा दूर से हरि को,
असहनीय विष का आभास ।। १२३ ।।

पहुंचे हरि जब निकट गरल के,
तब काला - नल सा उत्ताप ।
व्यथित लगा करने हरि मन को,
क्रोधित-मुनि-का सा अभिशाप ।।
अन-मन-गमन कर रहे थे हरि,
विरम विरम विष घट की ओर ।
कार्य भार से तनु विकार से,
असमञ्जस-वश-आत्म-विभोर ।।१२४।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और निकट कुछ गये विष्णू जब,
तब विष की काली ज्वाला ।
लिपट गई आकर हरि-तनु में,
हरि - तनु काला कर डाला ॥
काल-रात्रि सा प्रलय-मेघसा,
कृष्ण-वर्ण अपना अवलोक ।
आये श्री पति लौट शिविर में,
अपने अति-विस्मित सह शोक ॥१२५॥

कोटि-कला-कर सा अति उज्वल,
श्वेत - कमल सा श्वेत - शरीर ।
लक्ष्मी - पति का था अति-सुन्दर,
गङ्गा का सा भास्वर - नीर ॥
परम - सात्विक - विष्णु देव है,
सत्व - तत्व का वर्ण सु - गौर ।
श्याम - वर्ण हो गया तभी से,
उसका न है हेतु कुछ और ॥ १२६ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुरों कृत शिवस्तवन

मृत्युञ्जय को शरण गये फिर,
सब सुर-गण मिल कर भय-भ्रान्त ।
शिव-दर्शन कर शान्ति मिली अति
आश्वासित वे हुए नितान्त ॥
शिव-पूजन-प्रणाम कर सविनय ।
विधि - हरि-इन्द्र आदि सब देव,
करने लगे स्तवन हे भगवन् ।
महादेव देवों के देव ॥ १२७ ॥

कालातीत कराल काल से,
महा-काल-विकराल-महान् ।
काल आप की आज्ञा नित शिर,
धारण कर करता सह मान ॥
कोई नहीं कहीं ऐसा है,
दनुज-मनुज-देव-बलवान् ।
कष्ट आप को कुछ दे सकता,
है जो महा शक्ति गति-मान ॥ १२८ ॥

एक गरल-घट का क्या बल है,
कोटि-गरल-घट हों जो साथ ।
प्रभु तव कुपित-दृष्टि से क्षण में,
भस्म - सात होंगे हे नाथ ॥
प्रलय-काल आता है प्रभु जब,
तब तुम सकल-सृष्टि-संहार ।
काल-रूप-धर ताण्डव-रत हो,
करते भव भव-भूति-विहार ॥ १२९ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अति संत्रस्त-सकल-सुर-गण-हम,
आये शरण आप की ईश।
विष संहार सुरों का अतिशय,
शीघ्र कर रहा है जगदीश॥
अब विलम्ब कुछ और हुआ तो,
सुर-कुल का प्रभु ! अविकल-नाश।
हो जायेगा सकल सुरों को !
विकल कर रहा है विष-भाश॥ ३०॥

कृपा कीजिये चल कर शङ्कर,
विष का करिये शीघ्र उपाय।
जब जब कष्ट पड़े देवों पर,
तब तब प्रभु हो हुए सहाय।
पल में देवों पर प्रसन्न हो,
विश्वम्भर हर दया-निधान।
विष-घट निकट-गये प्रभु क्षण में,
सर्व-कार्य-क्षम-शिव-भगवान्॥१-१॥

गरल-कलश शिव त्वरित उठा कर,
अनायास पल में कर पान।
सर्वनाश आतङ्क मिटाया,
किये सुरों के रक्षित प्राण॥
कण्ठ अकुण्ठित-छवि गुण्ठित कर,
लुण्ठित-विष रञ्जित कर कण्ठ।
नील-कण्ठ शिव-नाम तभी से,
पड़ा वरिष्ठ शिष्ठ शिति-कण्ठ॥ १३२॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुरों का स्वार्थ निवेदन

यह इतिहास-प्रसङ्ग चलाकर,
स्मरण दिला कर अति प्राचीन ।
प्रवल-तारकासुर का सुर-गण,
प्रकरण तत्क्षण अर्वाचीन ।।
लगे निवेदन करने शिव से,
सविनय होकर अतिशय-दीन ।
बल-पूर्वक सुख-स्वर्ग सुरों का,
लिया असुर ने सब कुछ छीन ।। १३३ ।।

किये तारकासुर ने सुर-गण,
सदन-विहीन-दीन-आधीन ।
छिपते फिरते हैं सब सुर-गण,
प्राण-त्राण-हित हो अति-क्षीन ।।
असुर-दुरासद बध त्रिविश्व में,
कोई नहिं कर सकता बीर ।
सुर-विधात-उत्पात मचा कर,
देवों को कर दिया अधीर ।। १३४ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिवस्तवन

अपराजित-निस्सीम पराक्रम,
अधिष्ठान शम्भु - भगवान् ।
शरणागत-वत्सल नित-निश्चल,
पूर्ण-ब्रह्म-विभु - दया-निधान ॥
आशुतोष करुणा - वरुणा-लय,
त्रिभुवन-पति पशुपति-जगदीश ।
अभयङ्कर प्रलयङ्कर शङ्कर,
विश्वम्भर विश्वेश्वर ईश ॥ १३५ ॥

महाकाल विकराल - काल के,
काल-कलेश्वर-कालातीत ।
निष्कलङ्क-शत-शशि-सम उज्वल,
सर्व - पूज्य शर्व अविगीत ॥
त्रिगुणातीत अतीत सर्व के,
नित्य निरञ्जन अति-निर्भीत ।
सर्व-विदित अविदित-अनादि-तम,
अद्भुत-विक्रम परम-पुनीत ॥ १३६ ॥

मृत्यु-ञ्जय सर्वञ्जय शम्भो,
अपरिमेय अज अजर अजेय ।
पुण्य- पुञ्ज निष्पाप उमापति,
सर्वभूत-भावन भव - गेय ॥
अवि-कारी ब्रह्माण्ड बिहारी,
सर्व-पाप-हारी त्रिपुरारि ।
मनो-कामना- प्रपूर्ण - कारी
सुर-सरिता धारी कामारि ॥ १३७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निखिल-ज्ञान-विज्ञान- विविध-विध,
विद्याओं के उद्गम - स्थान ।
सकल कला कल्याणों के सब,
रत्नों के अक्षय्य - निधान ।।
रवि-सम-भास्वर हीरकादि मणि,
स्वर्णविनिर्मित-गिरि - कैलाश ।
अन्धकार से रहित चतुर्दश,
भुवनों की भा का सा हास ।। १३८ ।।

अन्तरिक्ष-सुस्थित-उसगिरि पर,
कोटि कोटि शशि-सा भावान ।।
रुद्र-रूप-धर-राजित सब के
कर्ता धर्ता शिव - भगवान् ।।
मायातीत-महा-माया - पति,
महा-महेश्वर महा - महान् ।
अमित असम्भव-सम्भव सब के,
करने में समर्थ मति-मान ।। १३९ ।।

सर्व-सिद्धि-ऋद्धि नव-निधि के,
दाता सिद्धेश्वर भगवान् ।
सर्व-प्राणि-गण के सुख - दायक,
परम सहायक शक्ति-निधान ।।
अप्रतिम-प्रतिभा-प्रभाव के
अधिष्ठान-अति महिमा वान ।
कष्ट-अरिष्ट-अनिष्ट-निवारक,
इष्ट-वस्तु देते नित दान ।। १४० ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परिणय-प्रार्थना

दुष्ट-असुर-तारक सुरघाती,
महा-कष्ट-दायक असुरेश ।
देवों के कुछ निकट न छोड़ा,
उनके बचे प्राण बस शेष ।।
आशुतोष शङ्कर वर-दानी,
दो देवों को यह वरदान ।
शीघ्र-विवाह-उमा से करके,
कृपा कीजिये कृपा निधान ।। २४१ ।।

स्वीकृतिप्रदान

शिव-प्रसन्न हो गये सुरों पर,
"एवमस्तु" कह कर तत्काल ।
दूर किये सब कष्ट सुरों के,
सर्व देव हो गये निहाल ।।
अति-दरिद्र को जग का राजा,
पल में करते मुदित - महेश ।
पल में पतित रङ्क कर देते,
जग-नरेश को कुपित-महेश ।। १४२ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुरों का हिमाचल पुर गमन

पल में पहुंचे सुर प्रसन्न हो,
महा महिम-हिम-गिरि के गेह।
शिव-स्वीकृति के सकल सुनाये.
उनको समाचार - सस्नेह ॥
श्री गिरि-राज हिमाचल सुनकर,
अति-प्रिय अति अभीष्ट सन्देश।
सादर स्वीकृति देकर अपनी,
किया सुरों का मान विशेष ॥ १४३ ॥

इस पञ्चम आलोक में शिव-स्तवन विष-पान ॥
परिणय-स्वीकृति सज्जता. हिम-गिरि-पुर सुर-भान ॥

हिमाचल के रूप

तुहिन-वान के स्थावर जङ्गम,
नभ-पारङ्गम हैं दो रूप ;
पूर्व जलधि से पश्चिम अम्बुधि
तक व्यापक है एक स्वरूप ॥
दिव्य-महौषधि-दिव्य-रत्न-मणि,
सुवरण-निधि हैं विभु - हिमवान।
हिम-निधान सुर-रम-स्थान है,
तेजो-वान-पवित्र महान् ॥ १४४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्य-रूप गिरि का जगङ्गम है,
सर्व-पूज्य अनुपम कमनीय ;
वेद-धर्म अनुयायी शुचितम,
परम-सरल-तम जन भजनीय ।।
उनकी सुन्दर पत्नी मैना,
है उनका सुपुत्र मैनाक ।
सुन्दर-भवन देखने उनके,
आते देव छोड़कर नाक ।। १४५ ।।

सुमेरू आदि बन्धु हैं उनके,
दिव्य-रत्न-मणि-स्वर्ण-निधान ।
अमित-बन्धु-बान्धव-स्वजाति-जन,
परिजन-पुर-जन-मान-अमान ।।
जगत्पूज्य उनकी पुत्री है,
भामय तपो मूर्ति - साकार ।
सदा तपस्या-रत रहती है,
शिव को कर निज प्राणाधार ।। १४६ ।।

हिम-पर्वत के वे राजा हैं,
वैभववान सुरेन्द्र समान ।
सरल-सन्त-सम शम्भु भक्त हैं,
अति-पवित्र-चरित्र-मति-मान ।।
उत्तर के अखण्ड अधिपति हैं,
सब गिरियों के मान्य अधीश ।
जिनके घर निवास करते सुर,
ऋषि-मुनि-सन्त, सिद्ध-योगीश ।। १४७ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वैवाहिक-लग्न-तिथि-दिन निश्चय

निश्चित-शुभ तिथि उन्हें बताकर,
भेजा उनको शम्भु - समीप ।
शिव-समीप सुर गये जगत के,
महा-महिम-महनीय - महीप ॥
शुभ विवाह की लग्न बता कर,
शुभ-नक्षत्र शुभ-तिथि शुभ-वार ।
शुभ-विवाह के लिये सु-निश्चित,
किये सबिधि शङ्कर तैय्यार ॥ १४८ ॥

शिवाज्ञा

शिव ने यह आज्ञा दी "सब गण,
सज्जित हों बरात के साथ ।
चलें शीघ्र कुछ रहें स्थान पर",
बोले गण "जो आज्ञा नाथ" ॥
लक्ष लक्ष सङ्ख्यक शङ्कर-गण,
धारण कर सुन्दर-बपु-वेष ।
सुन्दर-वसन-विभूषण धर धर,
चले सुभग-सुर-रूप-विशेष ॥ १४९ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नारद आह्वान

शङ्कर के सङ्कल्प मात्र से,
मानस-गति-नारद-विधि-बाल ।
गिरि-कैलाश शिखर पर पहुंचे,
अति-प्रसन्न होकर तत्काल ।।
नमस्कार कर सविनय शिव से,
बोले "समुपस्थित है दास ।
आज्ञा मिले त्वरित कर लाऊं
चरण-कृपा का है विश्वास" ।। १५० ।।

निमन्त्रण

तीन लोक चौदह-भुवनों में,
नारद जाकर तडित् समान ।
ब्रह्म-विष्णु -सुर आदि सभी को,
करो निमन्त्रण त्वरित स-मान ।।
नारद पहुंचे मनोवेग से,
सब भुवनों में सब के पास ।
दिया निमन्त्रण शिव-विवाह का,
जिसकी थी सब को अभिलाष ।। १५१ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बरात की सामग्री वायुयान

शुभ-तिथि-दिन-शुभ-लग्न आगई,
सज्जित हुए शम्भु - भगवान् ।
शङ्कर के सङ्कल्प-मात्र से,
वर यात्रिक समस्त सामान ॥
सर्वोत्तम-उत्पन्न हो गया,
रथ - पदाति-गज-बाजि अमान ।
शब्द-रहित मानस जव-शोभित,
सर्व-रत्न-निर्मित द्युति-मान ॥ १५२ ॥

असम-स-सम सब यथा प्राप्तभू,
से उड़ सकने में बलवान ।
सीधे उड़ने तथा उतरने,
में स्वेच्छित सब सुविधावान ॥
लगे तैरने नभ में अगणित,
रवि सम अनुपम आभा-वान् ।
तत्क्षण अति उत्पन्न हो गये,
दुर्घटना-भय-रहित विमान ॥ १५३ ॥

कोई श्येन-सदृश विमान था,
कोई था रथ - अश्वाकार ।
सुन्दर सुदृढ़ सुविस्तृत कोई
था मयूर हंस आकार ॥
कोई रवि समान वर्तुल था,
वर्तुलगति से - बाण-समान
आरोहण अवरोहण करता
नभ-में पवन-शब्द-गति-मान ॥ १५४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाणापार-ग्रमित-विमान थे,
मनो वेग से थे गतिमान ।
पल में पलक झपकते शत शत-
कोश पहुंचते मन्त्र-समान ।।
चलो रुको केवल कहने से,
चलते रुकते थे वे यान ।
ठहर व्योम में वे जाते थे,
ग्रमित समय-तक वियद्-विमान ।। १५५ ।।

ग्रतुल-विपुल-विस्तृत थे कोई
उनमें थे सुललित-उद्यान ।
यन्त्र-कलालय-चलते उनमें,
कूलें थीं थे सजल-स्थान ।।
नभ में ठहरे रहते थे वे,
ग्रविरत अनायास छे मास।
समुत्पन्न ग्रन्न करते थे,
वहां मनुज पशु बना निवास ।। १५६ ।।

टूट-फूट जाने जल-जाने,
नभ से गिर जाने का त्राश ।
महा-बात-धन बात-तिमिर में,
घिर जाने के सर्वविनाश ।।
तुहिन-पात विद्युत निपात का,
अकस्मात-ग्राया यदि नाश,
व्योम विघ्न विनिवृत करने में,
वे थे स्वयं शक्त निस्त्राश ।। १५७ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शोणित-श्याम श्वेत-शुभ-रँग के,
चित्तचपल अनुपम कमनीय ।
विद्यु ज्जवी रवी अति क्षण क्षण,
सब शुभ-हय गुण युत-रमणीय ।।
समुद्भूत हो गये अनेकों,
अश्वविभूषित - प्रग्रह-वान ।।
गिरि-लङ्घन समर्थ अतिनभ रह
भूकम छूते अनल समान ।। १५८ ।।

प्रति-विमान दो विमान-वाहक,
यान-ज्ञान के पूर्ण-प्रवीन ।
थे नव युवक-प्राण-योगी दृढ़,
वियद् ज्ञान-विद् - विदित अदीन ।।
थे सब यान बिना यन्ता के,
याता यात स्वातम - निर्भर ।
बहुत-यान-स्वामी यन्ता थे,
स्वयं निज-यान-ज्ञान-निर्झर ।। १५९ ।।

अगणित-शिव-गण हुए सु-सज्जित,
गगन गमन-वन भ्रमण-प्रवीर ।
एक वेष वय वस्त्र एक से,
रूप-रङ्ग-सम सु-समशरीर ।।
पवन-समान वेग बल में सब,
अति वलिष्ट नव-युवक समान ।
शशि-सम गौर-वर्ण अति सुन्दर,
मणि-भूपित सुर-भूप-समान ।। १६० ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अगणित कोटि देव सुर-पुर से,
आये सकल सहित परिवार ।
शिव-परिणय के लिये निमन्त्रित,
होकर शङ्कर के आगार ।।
शङ्कर सुहृत सहित नवनिधि के,
अलका से आये अक्षेश ।
सहित देवियों के सब आये,
विधि-हरि रवि शशि शेष सुरेश ।। १६१ ।।

सिद्ध-साध्य-गन्धर्व-यक्ष-वसु,
किन्नर-नाग-असुर-यमराज ।
दनुज-मनुज-नृप सब भुवनों के,
योगी-ऋषि नारद - मुनिराज ।।
भूत-प्रेत-गुह्यक-पिशाच - गण,
सुरअप्सरा रूप-गुण - सार ।
सौम्य-सुभग- वपु-वेष-बनाकर,
आये होकर मुदित-अपार ।। १६२ ।।

पृथक् पृथक् लोकों के सु-शिविर,
पृथक् पृथक् निज जाति-स्थान ।
कुशल-प्रबन्धक-गण ने अगणित,
लगा दिये अति स्वच्छ महान् ।।
रुचिकर अशन-वसन मन भावन,
शयन नलिन-कोमल - पर्य्यङ्क ।
अगणित-दिव्य-दास-दासी-जन,
सेवा-रत कर दिये अशङ्क ।। १६३ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्थान स्थान पर सङ्ग-नृत्य अन-
वद्य-वाद्य-अविगीत-सुगीत ।
कुशल कला कारों ने समुदित,
किये मधुर-स्वर से सङ्गीत ।।
शिव-विवाह के समय बन गया,
सुललित-कला-केन्द्र-कैलाश ।
सर्व ओर था मञ्जुल ध्वनि-मय,
मङ्गल-मय प्रमोद-उल्लास ।। १६४ ।।

शिव स्वरूप-वर्णन

निष्कलङ्क-शशि-भूषित-शिव के,
जटा - जूट में था कमनीय ।
विधु की शुभ्र विभा से भास्वर,
थीं सब ककुभाएं रमणीय ।।
नभ-विभु-शम्भु-भाल पर स्वर्णिम,
किरण-पुञ्ज-मञ्जुल अति-कान्त ।
काञ्चन-जन्य सुमेरु - शृङ्ग सा,
जटा-जूट शोभित था शान्त ।।१६५।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्वेत वस्त्र सी चन्द्र-रश्मि सी,
स्फटिक-शकल सी शोभा-धाम ।
जटा - जूट से निकल रही थी,
विबुध-सरित् उज्वल अविराम ॥
मणि-युत-अमित-नाग-परिवेष्टित,
जटा - जूट था उच्च विशाल ।
जटा-कार-वन निकल पड़ा ज्यों,
शिव-शिर-ओज-राशि-भृगु जाल ॥१६६॥

ज्वाला-मुखी-अचल सा अतुलित,
अनल-निचित-लोचन-विकराल ।
सुललित-कमल-मुकुल सा शोभित,
शम्भु-भाल में था छवि-शाल ॥
मृत्यु-ञ्जय के मञ्जुल-मुख पर,
थे रवि-शशि लोचन जग-पाल ।
शुभ-गुलाल के विपुल-थाल-से,
सुधा-ताल से ललित-विशाल ॥१६७॥

कानों में पहने मणि-निर्मित,
कुण्डल-शशि-मण्डल से गोल ।
शिव श्रुति-भूषण बन गङ्गा ज्यों,
वर्तुल हो कर रही किलोल ॥
नील-कण्ठ का कण्ठ ललित था,
विदलित-नील-रत्न सा नील ।
शिखी-कण्ठ सा निर्मल-नभ सा,
नील कमल सा अतुलित-नील ॥१६८॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शक्ति-मुण्ड-मणि-माला-शोभित,
नील - कण्ठ का कण्ठ अकुण्ठ।
नाग-नृपों से परिवेष्टित था,
विद्युत-द्युति का सा अवगुण्ठ।।
स्फटिक-रत्न की भस्म समुज्वल,
शिव-तनु पर थी रमी सुरम्य।
भूति-पिहित अङ्गार ज्वलित ज्यों,
शिव-शरीर था दृष्टि-सुगम्य ।।१६९।।

सर्व-विश्व-विजयी-पिनाक-धनु,
धरा स्कन्ध पर सदा अजेय।
दुर्जन-दमन-समर्थ-सु-दृढ़ तम,
लिया-विपुल-त्रिशूल अविगेय।।
सकल-ज्ञान - विज्ञान-प्रदायक,
जन-सुख-दायक ज्यों कवि पद्य।
अभिनव-स्फूर्ति - चेतना-दायक,
डमरू-वाद्य-लिया-अनवद्य। १७०।।

कटि-तट-बाँध लिया शङ्कर ने,
गज-मृगान अद्भुत-भावान्।
सुर-तरु-काष्ट-विनिर्मित खग-सम,
पवि-सम-दृढ़ लघु-सुमन समान।।
धारण कीं शुचि - सुपादुकाएँ,
सर्व - पूज्य - चरणों में आन।
मङ्गल-कर उपकरण-ग्रहण-कर,
हुए सु-सज्जित-शिव-भगवान् ।। १७१।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सभी-दिशाओं में स्व-तन्त्र जो,
गमन-क्षम वे अति-बलवान् ।
रवि-शशि-पवन-प्रकाश शब्द से,
अमित-तीव्र मन-वेग समान ।।
अधः ऊर्ध्व जल थल में है गति,
अनिवारित सर्वत्र समान ।
मूर्ति-मान - धर्म से शिव-वृष,
आये आज्ञा - भृत-मति-मान् । १७२ ।।

दुर्लभ-मञ्जुल-मणि-माला से,
उनका कण्ठ किया अति-कान्त ।
दोनों शृङ्गों में फिर उनके,
किये रत्न - भूषण विश्रान्त ।।
मस्तक पर त्रिपुण्ड-मण्डित-शुभ,
निर्मल-रत्न-खचित-द्युति-धाम ।
लगा दिया सुवर्ण का गण ने,
कला पूर्ण भूषण-अभि-राम ।। १७३ ।।

हरित-पीत-सित-श्वेत-नील अति,
लोहित, चित्र-विचित्र-मनोग्य ।
विविध-रत्न-मणि-मढ़ित-स्वर्ण-कृत,
डाली झूल पीठ में योग्य ।।
अनुपम - कान्तिमान - जाम्बू-नद,
मेरु - गिरिज - सुवर्ण से तूर्ण।
निर्मित - विविध-भूषणों से सब,
वृष के अङ्ग किये परिपूर्ण ।। १७४ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्य-सकल-गज-बाजि-उष्ट्र-गण,
शिव - बरात के थें जो साथ।
सभी-विभूषित किये गणों ने,
भव्य - भूषणों से सब साथ।।
सब बरातियों को सब बितरित,
किये गणों ने स्वैच्छित-वस्त्र।
पादत्राण - कृपाण - बाण-धनु,
अधः ऊर्ध्व-वस्त्र-उपवस्त्र।। १७५ ।।

कभी न होते थे मलीन वे,
रहते थे नित-वसन नवीन।
स्वर्ग-लोक-निर्मित-अति-द्युति-युत,
धारण कर सब हुए अदीन।
भास्वर - रत्न - सु-मणि-मालाएं,
शिव - गण ने सब को दीं दान।
धारण कर कर सकल सुरा-सुर,
सुललित-प्रमुदित-हुए महान्।। १७६ ।।

थे अनन्त-गुण-मालाओं में,
कुछ-गुण उनके कहूं प्रधान।
काम-स्वरूप काम-गति पाता,
काम-वस्तु करतीं वे दान।।
सदा तरुण रहता धारण-कर,
तथा अरुण तनु-सुमन समान।
द्वन्द्वातीत तथा त्रिकाल - वित्,
धारण कर होता अ-समान।। १७७ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विधि-हरि-रवि सप्तर्षि प्रीतियुत,
शङ्कर - ढिग आये कैलाश।
शिव-पूजन-प्रणाम कर विधि-युत,
सविनय बोले कर विश्वास ॥
"सर्व - शक्तिमान् शङ्कर प्रभु !
धारण करिये प्रिय - वर वेष।
पूर्ण कीजिये सब भक्तों की,
यह अभिलाषा उचित विशेष।।" १७८ ॥

"एव मस्तु" कह कर ऋषियों से,
ऋषियों का कर अति-सम्मान।
धारण करने लगे सर्व - प्रिय,
आकर्षक-वर-वेष अमान ॥
शङ्कर के सङ्कल्प-मात्र से,
पूर्व-सर्व-शिव का वपु-वेष
लगा त्वरित परिवर्तित होने,
अभि-नव-सुन्दर-रूप-विशेष ॥ १७९ ॥

शिर पर स्वर्णरत्न-मणि-मण्डित,
क्रीट-मुकुट बन गया विशाल।
विधुल्लता-ललित मणि-कुण्डल,
कानों में आये तत्काल ॥
शशि-भूषण का भूषण शुभ-शशि-
भूषित हुआ मुकुट में भव्य।
भास्वर-जटा-रश्मि-अति-सुन्दर,
देव-सरित बन गई सुदिव्य ॥ १८० ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नेत्र तीसरा कमल-मुकुल सा,
ललित बन गया तिलक स्वरूप।
विकसित-ललित-कमल से सुन्दर,
नेत्र हुए छवि-मय अनुरूप ।।
नील-कमल सा नीलम-मणि सा,
कण्ठ अकुण्ठित-अति-द्युति-मान ।
नील-कण्ठ का हुआ मनोरम,
तिमिरिच्छिद् शुभ आभावान् ।। १८१ ।।

सर्वोत्तम-अनेक - रत्नों के,
इन्द्र-धनुष से भास्वर हार ।
आ समलङ्कृत हुए कण्ठ में,
बन कर शिव-विवाह-उपहार ।।
हीरक-पद्म-राग-मणि - मुक्ता,
सूर्य-चन्द्र-मणियों की कान्त ।
धारण कर अनेक मालाएं,
शङ्कर शोभित हुए नितान्त ।।१८२ ।।

शिव ने उभय-भुजाओं में शुभ,
धारण किये कनक - केयूर ।
रुचिर-रङ्ग-मणि-रत्न विराजित,
अनुपम-छवि से थे भरपूर ।।
लोकोत्तर-अगणित-गुण-गर्भित,
सुधा-स्यन्दि-सौन्दर्य-निधान ।
दोनों मणि-बन्धो में शिव ने,
पहने मणि-कङ्कण-धुति-मान ।। १८३ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उत्तरीय कटि-वस्त्र मनोहर,
स्निग्ध समुज्वल-शुचि-कौषेय ।
धारण किये स्वतनु पर शिव ने,
कोमल सब प्रकार अविगेय ॥
महा-पद्म-राग-मणि-मण्डित,
अन्य-रत्न-मणि-ग्रथित अमान ।
अति-सुन्दर-कटि-भूषण-भूषित,
कटि तट किया अमित भावान् ॥ १८४ ॥

शत-शशिभा सी स्व-वपु-विभा से,
भू-नभ-भूरि हुआ भावान् ।
धारण कर सुवसनाभूषण,
सज्जित हुए शम्भु-भगवान् ॥
अति-शय-सुन्दर-सर्व-विश्व-प्रिय,
धारण किया रुचिर वर - वेष ।
देख देव-विधि-विष्णु इन्द्र ऋषि,
प्रमुदित-हुए-सूर्य-शशि शेष ॥ १८५ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव-स्वीकृति श्रवण-हिमवान् का स्वपुर अलङ्करण

स्वीकृति सुन विवाह की अतिशय,
हर्षित हुए सकुल हिमवान् ।
करने लगे सकल - आयोजन,
परिणय दिवस निकट मन जान ।।
शुद्ध-सरल-परि-वर्धित-मार्जित,
किये सकल मार्ग-पुर-भाग ।
सुधा-लिप्त-पुर किया समुज्वल,
अभिनव-सुन्दर सह अनुराग ।।।१८६ ।।

वापी-कूप-सरोवर-निर्झर,
गिरि-निर्झरिणी सुजल-प्रपात ।
सर्व-सु संस्कृत तथा अलङ्कृत,
किये चतुष्पथ याता - यात ।।
कदली-स्तम्भ मुख्य द्वारों पर,
स्थापित किये निगम-अनुसार ।
रेशम-रज्जु ग्रथित-नव पल्लव,
बँधवाये वहु वन्दनवार ।। १८७ ।।

स्थापित किये द्वार पर विधिवत,
कनक-कलश शुचि-मङ्गल मूल ।
उन्नत की शुभ अमित ध्वजाएँ,
शुचि-वस्त्रों की विधि-अनुकूल ।।
सकल सजाया पुर हारों से,
सुन्दर-बहु-द्वारों से मार्ग ।
भास मान-मणि दीपों से अति,
सकल सजाये गृह-पुर-मार्ग ।। १८८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्ध-कार का नाम नहीं था,
निशा हुई थी दिवस समान ।
सुख-विभोर थे पुरवासी-जन,
गृह गृह में थे मङ्गल-गान ।
असन वसन अतुलित एकत्रित,
किये रुचिर सुन्दर स्वादिष्ट ।
षड्रस रुचिर रचे बहु-व्यञ्जन,
मनः तृप्ति कर सब को इष्ट ॥ १८९ ॥

शुष्क व्यञ्जनों पकवानों के,
पर्वत खड़े किये अत्यन्त ।
सरस भोजनों के भरवाये,
वापी-कूप-तटाक-अनन्त ॥
हिम-गिरि-महिमा से गिरि पुर में,
विकृत नहिं होता था अन्न ।
खाते थे सब अपनी रुचि से,
पुर-जन आगत परम प्रसन्न ॥ १९० ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वन्धु-सुहृज्जन-सज्जन-पुर-जन,
किये निमन्त्रित सह सम्मान।
सुन्दर-भूषण-वसन पहन सब,
आये शुभ-मुहूर्त-तिथि-जान ॥
पहले से ही अति-निश्चित था,
यथा-योग्य शुभ-वास-स्थान।
सब को ठहराते थे हिम-गिरि,
सविनय कर स्वागत-सम्मान ॥ १९१ ॥

वर-बरात - सज्जी करण, समुपकरण गिरि रूप।
भुवन - निमन्त्रण आगमन, विभु-वितरण बर-रूप ॥
सर्वागत स्वागत विरच समारोह अत्यन्त।
इस षष्ठम आलोक का, हुआ सु-शोभित अन्त ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्य गिरिराज आदि का आगमन

हैं जिनके गगनोन्नत-विशाल,
दिग् दिग् व्यापी देदीप्यमान।
शुभ हीरकादि-मणि-रत्नों के,
उत्तुङ्ग - शृङ्ग - विभ्राज-मान॥
है जिनकी-सकल सुवर्ण - भूमि,
मणि-रत्न दृषद् - शोभायमान।
सुर-सङ्घ जहां रमते अविरत,
किन्नर करते नित नृत्य-गान॥ १९२॥

ओ गिरि-सुमेरु हिम-गिरि वर के
घर आये भासे भासमान।
भर गये स्वर्ण-मणि-रत्नों से,
गिरि-पुर के पथ-गृह भूस्थान॥
दक्षिण से मलयाचल आये,
जो है शुचि-चन्दन-वन-निधान।
भर गई सुरभि से हिमगिरि की,
सब-भूमि व्योम-मण्डल-महान॥ १९३॥

विन्ध्याद्रि नील सह्याद्रि आदि,
आये अगाध-धन के निधान!
सब धरणी के सब धरणी-धर,
आये सु-निमन्त्रित हो स-मान॥
हिम-गिरि ने दिव्य- महौषधियां,
सब को स्वागत में कीं प्रदान।
जिनके प्रभाव से वे महान,
बन गये महान से महीयान॥ १९४॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चल पड़े हस्तिपक हाथी ले,
ले चले सारथी रथ प्रवीण ।
चल पड़े कराते अश्व नृत्य,
प्रमुदित अश्वारोही अहीन ।।
सङ्गीत-ज्ञान के पारङ्गत,
नव-युवक पाद-चर कला कार ।
रुक रुक कर करते हुए चले,
सङ्गीत मनोहर बार बार ।। २०० ।।

कर कृपा सुरों पर शुभ अपार,
गिरिजा पर करने समुपकार ।
राजाधिराज प्रभु-कृपागार,
चल पड़े सदा-शिव भवाधार ।।
जय शिव-शङ्कर जय-महादेव,
जय विश्वम्भर जय गुणागार ।
जब चले महेश्वर जय ध्वनि से,
भर गया भूरि-भृगु-भुवन-भार ।। २०१ ।।

सब दिग् वनिताएं मुदित हुईं,
चल पड़ा सुखद-सुरभित-समीर ।
वन-विटप-लता-सुम-नयन खोल,
लग गये देखने हो अधीर ।।
लग गये देखने शिव बरात,
अति-उच्छल-विमल-गिरि-नदी-नीर ।
हो गये सु-निर्मल अवनि-गगन,
लख शिव-बरात अनुपम-गँभीर ।। २०२ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो रहते हैं अम्लान-सदा,
सुरभित-सुमनोहर-कान्तिमान ।
जो हृदय-हारि नाना रँग के,
जो अनभि-भूत-शोभा-निधान ।
जो पारि-जात के नव प्रसून,
जो नहिं माने भू विधि-विधान ।
उन स्वर्ग जन्य सुमनों की की,
अति-वृष्ठि सुरों ने स-जय-ध्वान । २०३ ॥

जो जङ्गल को करते मङ्गल,–
मय-हय-गज-उष्ट्र-पदाति-यान ।
सङ्गीत स्फीत करते पहुंचे,
सानन्द हिमाचल वास-स्थान ॥
हिमगिरि के गृह-ऊपर ठहरे,
नभ-शिविर-बनाकर व्योम-यान ।
हिम-गिरि-वर-गृह के सर्व ओर,
भर गई भूमि बन आसमान ॥ २०४ ॥

बस गया सु-विस्तृत-दिव्य-नगर,
अभि-नव-विचित्र-सुषुमा-निधान ।
ज्यों स्वर्ग-लोक ही सब उड़ कर,
आया करने भू स्वः समान ॥
ज्यों चौदह लोकों की सुषुमा.
एकत्रित कर हो सावधान ।
विधि ने हिम-गिरि के नभ-भू-पर.
शिव-नगर रचा शिव-भाव-जान ॥ २०५ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बन गये थे पहले ही समीप,
हिम-गिरि-पुर के परितः महान ।
सु-ललित-सम-तल-भूतल-भूधर,
सम्भरित-हरित-बन-महोद्यान ।।
सब शिव-बरात के स्वागत को,
बन-विटप-लता-उपहार आन ।
थे समुद् खड़े कर-पल्लव पर,
ले फल-प्रसून सु-रुचिर-अमान ।। २०६ ।।

बन गये अपरिमित-विपुल-शिविर,
सब पृथक पृथक् पृथु - पङ्क्तिवान ।
आगमन-गमन-सुख-सुविधा को,
थे सरल-सुगम-बहु-वीथि-वान् ।।
खिल गये अमित-सु-प्रकाश-सुमन,
तरु-लता-गणों में भास-मान ।
सित-हरित नील-शोणित-सु-पीत,
मिश्रित प्रकाश से काश-मान ।। २०७ ।।

जग मगा गया सब गिरि बन ज्यों,
शत-उदय हुए हिम-भानु-मान ।
बहु-रङ्गों का वह पृथु - प्रकाश,
था ऐसा सु-मनोहर महान् ।।
ज्यों समुत्पन्न हो गये साथ,
बहु-इन्द्र-धनुष-गण भासमान ।
था अद्भुत-अभूत-पूर्व-दृश्य,
अनुपम भू-नभ में सम महान् ।। २०८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो कभी न फलते थे तरु-वन,
फल गये सकल वे बन अनन्त ।
फल-गये विबिध-विध-मञ्जुल फल,
बन-विटप-लताओं में अनन्त ॥
फल गये वसन कटि-वस्त्र ललित,
बन विटप लताओं में अनन्त ।
लग गये बरसने विटपों से,
पक्वान्न मिष्ट रुचिकर अनन्त ॥ २०९ ॥

जल गये गगन में गगन दीप,
शुभ-अमित-दिव्य देदीप्यमान ।
ज्यों नभ से उतर पड़े ऋभुगण,
सब शिव-बरात लखने अमान ॥
शिव-सेवक ये आज्ञाकारी,
क्षित्यादि-अहम् सु-महत-प्रधान ।
हो गये उपस्थित सेवा में,
इसमें विस्मय कुछ न तू मान ॥ २१० ॥

हो गये अमित-उद्भूत-दास,
दासी सु-स्वच्छ-शिक्षित-प्रवीण ।
लग गये प्राघुणिक सेवा में,
मिष्टान्न-रुचिर जल ले नवीन ॥
भर गईं सभाएं भूरि - भव्य,
होने लग गये सु-नृत्य-गान ।
भर गये माङ्गलिक समारोह,
हिम-गिरि-गृह-समीप स्थान स्थान ॥ २११ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिम-गिरि की दिव्य-महौषधियां,
हैं अमित-ज्वलित-सुर-पति समान ।
जो अजर-अमर-परि-पूर्ण स्वस्थ,
करती हैं अतुलित शक्ति-मान ।।
हिम-गिरि के हैं बहु-स्फटिक-श्टङ्ग,
शशि के समान अति - भासमान ।
देखे देवों ने वे सस्पृह,
दिग् विदिग् व्याप्त उन्नत अमान ।। २१२ ।।

ज्यों महा-काय-शिव-लिङ्ग-विपुल,
हिम गिरि ने स्वयम्भूत जान ।
गिरि-शिखिर-स्निग्ध-तम-सु-मनोहर,
निज-पूजन-हेतु रखे अमान ।।
हैं अभ्रङ्कश अति-तुहिन-श्टङ्ग,
होता है जब शुभ-प्रभात ।
वे बनते हैं माणिक्य-रत्न-
पाकर अति-शोणित-उषा-गात ।। २१३ ।।

स्वीकृति पुर समलङ्करण अचलागमन विलोक ।
वर यात्रा पुर शिविर यह शुभ सप्तम आलोक ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वासभवन दिव्य मण्डप रचना

बुला-विश्व कर्मा को गिरि ने,
सादर उन्हें कहा "रचनेश !
भुवन विभाका वास भवन रच,
मण्डप रचिये एक विशेष ।।
अद्भुत-वैभव-भरित-विभा-मय,
हिम-गिरि-भू-पर एक विशाल ।
अद्भुत-निज-प्रतिभा-प्रभाव से,
विरचो-भव्य-भवन तत्काल" ।। २१४ ।।

द्वादश-क्रोश-सु-विस्तृत-भू-पर,
गगनोंन्नत नभ का सा भाल ।
अति-विचित्र-चित्रों से चित्रित,
माया-मय विरचा पण्डाल ।।
उस मण्डप के मुख्य-द्वार पर,
विरची श्री की मूर्ति-विशाल ।
साक्षात लक्ष्मी लाई हो,
दुग्ध-उदधि से ज्यों तत्काल ।। २१५ ।।

जो प्रणाम करता था उसको,
देती थी सहर्ष आशीष ।
बात चीत करती थी सब से,
थी वह कृत्रिम विश्वे बीस ।।
अन्दर जहां तहां अति-सुन्दर,
उन्नत रचे श्वेत-गज-राज ।
करते थे जो प्यार परस्पर,
सूंड मिलाकर अभिनय साज ।। २१६ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अमित-अश्व-अश्वारोही युत,
पङ्क्ति-बद्ध विरचे छवि-वान् ।
उछल कूद जो नृत्य दिखाते,
छिन-छिन-हिन-हिनाय गतिमान ।।
अगणित-सुर-सुन्दरियां विरचीं,
जो गाती करती थीं नृत्य ।
ऋषि-मुनियों के चित्त-चुरातीं,
दर्शित-कर अभिनय-हृद् वृत्त ।। २१७ ।।

बनीं बेदिकाएं थीं उसमें,
स्थान स्थान पर ललित अमान ।
उससे मन-मोहित करता था,
मण्डप अनुपम शोभावान ।।
जहां भित्ति थी वहां न दिखती,
जहां न थी होती थी भान ।
जल में थल का थल में जल का,
भ्रम होता था विस्मय-वान ।। २१८ ।।

दृश्य दिखाने वाले मुखरित,
पुरुष बनाये थे गतिमान ।
हाथ उठाकर दृश्य दिखाते,
दर्शक को अभिमत मतिमान ।।
स्फटिक-रत्न का अमित समुज्वल,
अति-उन्नत-सु-ललित द्युतिमान ।
शिव-वृष रचे रचा फिर उस पर,
पुष्पलता से पुष्पक-यान ।। २१९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शङ्कर-वृष के वाम-भाग में,
कुङ्कुम रँग के दो गज-राज ।
अमित-पुष्ट गिरि उन्नत-विरचे,
चार दांत के रहे विराज ॥
प्रेम कर रहे थे वे दोनों,
सूंड़ मिला कर बारम्बार ।
उनका परम-मनोहर दर्शन,
करता था मन-मुदित अपार ॥ २२० ॥

उनके निकट रचा ऐरावत,
रत्न-सु-सज्जित इन्द्र समेत ।
सात सूंड़ रद चार विराजित,
सुन्दर-तम हिमगिरि सा श्वेत ॥
कृत्रिम था पर समझ न सकता,
कोई चतुर-मनुज भी देख ।
दर्शक सब विस्मित हो जाते,
विधि-रचना से भी व्यतिरेक ॥ २२१ ॥

पङ्क्ति-बद्ध सज्जित अति-सैनिक,
विरचे सायुध सविधि अनेक ।
धनुष खींचते थे जो क्षण क्षण,
बाण चढ़ा कर सहित-विवेक ॥
सज्जित गज विरचे सहस्तिपक,
विरचे रथ सारथी समेत ।
वे सारथी चलाते थे रथ,
जीवित से थे सभी सचेत ॥ २२२ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे मण्डप-में विस्मय कारी,
चमत्कार-युत-सभी पदार्थ ।
सब कृत्रिम थे पर लगते थे,
वास्तविक असंशयित यथार्थ ।।
वे कृति-विद्या के पारङ्गत,
परि पूर्ण अपरिमित शक्तिमान ।
पल में रचते थे अमित नगर,
लोकोत्तर होते जो महान् ।। २२३ ।।

भगवान् शम्भु ने करुणा कर
था दिया उन्हें कृति-दिव्य-ज्ञान ।
वरदान किया था प्राप्त अतुल,
तप करके शङ्कर से महान् ।।
शिव को था करने का प्रसन्न,
यह अद्भुत-कृति-कौशल महान् ।
जो किया विश्वकर्मा ने नहिं
कर सकता कोई तत् समान ।। २२४ ।।

विरचे बहु-सिंह भयङ्कर जो,
अति-विकट-वन्य-केहरि-समान ।
जो पल पल में गर्जन करते,
मुख खोल उच्च स्वर से अमान ।।
बहु-कीर-सारिका-सारस-कुल,
सुन्दर-मयूर कुल-चक्र-वाक ।
विरचे विस्मय से जिन्हे देख,
रह जाते सब मानव अवाक ।। २२५ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वे निज निज बोली बोल,
उड़ उड़ कर जाते डाल डाल ।
थे नाच नाच कर मन हरते,
जन मन में विस्मय मोह डाल ॥
विरचे थे कृत्रिम-विटप-लता,
नव-पल्लव-युत-सुन्दर प्रसून ।
थे ललित-फलों से लदे हुए,
अकृत्रिमता से न थे न्यून ॥ २२६ ॥

थो रचे अश्व अति-समलङ्कृत,
मणि छत्र-चँवर से राजमान ।
जो थे अतुलित-चञ्चल महान्,
भास्कर-समान अति-दीप्ति मान ॥
थे रचे वरुण-यम-अग्नि आदि,
लक्ष्मी आलोकित-लोक-पाल ।
जो दिव्य-रत्न-मणि-आभूषित,
दृढ़-कवच-शस्त्र-धारी-विशाल ॥ २२७ ॥

थे रचे तपो-धन ऋषि-मुनि-गण,
उपदेव-देव सब साध्य सिद्ध ।
सप्तर्शि-यक्ष किन्नर - नारद,
विधि--हंस-गरुड-वाहन प्रसिद्ध ॥
विरचे ब्रह्मा-सुत-पौत्र-सहित,
जो करते थे सब-वेद-पाठ ।
वे असली से सब दिखते थे,
मुख पर थे तेज-पुञ्ज-ठाठ ॥ २२८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे विष्णु-रचे अनुपम-सुन्दर,
अति-दिव्य-देह तेजो-निधान ।
मणि-क्रीट-मुकुट कुण्डल-धारी
शुचि-शङ्ख-चक्र-सुम गदावान् ।।
हिम-गिरि की आज्ञा से छविमय,
पल में विरचे विस्मय निधान ।
जो देवों को भी विस्मय-युत
कर देते थे कल-कला-वान् ।। २२९ ।।

सब देवों के सब लोक रचे,
ज्यों के त्यों स्थित दृश्यवान ।
थे रचे गये उन देवों को,
जिन जिन के थे वे निज स्थान ।।
था रचा दिव्य लोकेश लोक,
वो भव्य-भूति से भासमान ।
जा ठहरे वहां सदल-ब्रह्मा,
था उनका ज्यों स्ववासस्थान ।। २३० ।।

था रचा ललित-वैकुण्ठ-धाम,
जो निरवधि भा का महा धाम ।
श्री विष्णु - पधारे थे उसमें,
निज-पार्षद-युत-लीला ललाम ।
था रचा इन्द्र का स्वर्ग-लोक,
थे मोहित जिसको सुर-विलोक ।
जा ठहरे वहां इन्द्र सह सुर,
कहते यह असली-स्वर्ग-लोक ।। २३१ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विरचा अनन्त-मणि-रत्नों से,
भा-भासित था पाताल-लोक।
जिसमें जा ठहरे वरुण-देव,
वैभव प्रपूर्ण था वरुण-लोक ॥
श्री अलका-पुरी-रची तत्क्षण,
जिसमें ठहरे यक्षाधि-राज।
अद्भुत-वैभव से भरी हुई,
नव-निधि से थी जो रही राज ॥ २३२ ॥

था अतुल-ललित-कैलाश रचा.
अगणित शिव-गण से सेवमान।
था एक-स्फटिक-मणि-विपुल-शकल,
निर्मित शत-शशि-सम-भासमान ॥
रवि-किरण-छुरित हो जब उसमें,
तब अमित रङ्ग हो दृश्यमान।
ज्यों एक साथ समुदित-अगणित,
हो गये-इन्द्र धनु-कान्तिमान ॥ २३३ ॥

मणि-रत्न-स्वर्ण-निर्मित-सुललित,
अति-निर्मल-संबल-दीप्तिमान्।
था उसमें विरचित-दिव्य-मञ्च,
सुख-दायक भास्वर रवि-समान ॥
हिम-गिरि से सम्मानित शिव ने,
उसको समलङ्कृत किया आन।
तब किया उच्च स्वर से सब ने,
विभु-एक-साथ शिव-जय-ध्वान ॥ २३४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब-लोक-पाल-गण के विरचे
सब-ललित-लोक तत् तत् समान ।
सब लोक-पाल उनमें ठहरे,
परिवार सहित सानँद स-मान ।
थी मण्डप की अद्भुत-रचना,
अति अकथनीय अनुपम अपार ।
पा सकता कोई सु-कवि न "शिव"
रचना का कहकर अन्त-पार ॥ २३५ ॥

पुर-बहिर्द्वार हिम-गिरि पहुंचे,
ले सुहृत-स्वजन-परि-वार साथ ।
हर वर बरात के स्वागत को,
ले वस्तु-जात तुहिनाद्रि साथ ॥
आगये उधर से शिव-शङ्कर,
हिम-गिरि ने कर पूजन-प्रणाम ।
शिव दर्शन-कर हो गये प्रमुद,
बोले सविनय सु-वचन-ललाम ॥ २३६ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिवस्तुति

जय-महा-देव, देवाधि-देव,
जय भुवनेश्वर जय भुवन नाथ ।
हम-दीन-हीन-अति-निष्किञ्चन,
हो गये आज तुमसे सनाथ ॥
जय मृत्तुञ्जय जय महाकाल,
जय नभ से भी अतिशय विशाल ।
जय मूर्त-ब्रह्म जय शिव-अनादि,
जय जगत आदि चिन्मय-मराल ॥२३७॥

जय कोटि कोटि ब्रह्माण्ड अधिप,
जय कोटि सृष्टि-स्रष्टा प्रवीन ।
जय कोटि-सृष्टि-सम्भरण-हरण,
कृति-करण-क्षम. कारण अदीन ॥
जय सोम-सूर्य-पावक-लोचन,
जय अघ-मोचन-जय व्योमकेश ।
जय आशु-तोष जय सतत-तोष,
जय स्तोक-तोष- कारिन महेश ॥ २३८ ॥

तुमने अनन्त अति-पतितों का,
शिव किया कृपा कर समुद्धार ।
तुमने देवों के किये प्रभो !
उपकार अपरिमित-बार बार ॥
तुमने अति-भीषण महा-दुष्ट,
दैत्यों का किया स-कुल-विनाश ।
जो निष्कारण सब संसृति को,
देते थे सन्तत महा-त्राश ॥ २३९ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिम-गिरि ने सविनय भक्ति-सहित,
शिव-चरण-कमल में नमस्कार ।
कर किया निवेदन शङ्कर से,
करिये पवित्र-जन-धर-पधार ।।
चल पड़े एवमस्तु कह कर,
हिम-गिरि के गृह हिम-गिरि सनाथ ।
सब देवों ने की पुष्प - वृष्टि,
जय-ध्वनिकर प्रणति पुञ्ज साथ ।। २४६ ।।
नभ में विमान स्थल करि-अमान,
रथ अश्व-यान पद-चर अमान ।
सब एक बार शिव वृष-सवार,
हो अग्र चार गिरि-राज-द्वार ।।
पहुंचे स-मान शिव-छवि-निधान,
मन-मुद-महान गिरि ने सुजान ।
अति-स्मृति-निदान कुल विधि विधान,
सब किये आन माङ्गलिक जान ।। २४७ ।।
वास-भवन मण्डप-सृजन, अद्भुत विरचन लोक ।
शिव स्तवन पुर गमन वह, शुभ अष्टम आलोक ।।
श्रुति-सम्मत-सब कुलाचार कर,
कर शङ्कर-पूजा सम्मान ।
हिम-गिरि-वर निज-सदन ले गये,
करते हुए माङ्गलिक - गान ।।
सकल देवियों ने फिर शिव के,
सुर-दुर्लभ-शिव-चरण-परवार ।
मणि-निर्मित-शुभ-सिंहासन पर,
बन्दन कर शिव दिये पधार ।। २४८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव-चरणामृत लिया सभी ने,
किया सफल-जन्म निज धन्य ।
शिव को मालाएं पहिनायीं,
सुर-कुसुमों से रचित अगण्य ।।
कुङ्कुम-युत शुचि-चन्दन चर्चित
शम्भु - भाल में किया मनोग्य ।
उत्तरीय कटि वसन कराये,
धारण अति पवित्र शिव-योग्य ।। २४९ ।।

विधि-सुर-गुरू-कश्यप-वशिष्ठ-मुनि,
अत्रि - अङ्गिरा - भृगु - ब्रह्मर्षि ।
गौतम-भागुरि - शक्ति - पराशर
मार्कन्डेय - सु - कौत्स-महर्षि ।।
शिला-पाक-उप-मन्यु अकृत-व्रण,
अकृत-श्रम-मुनि-वर पिप्पलाद ।
भरद्वाज ऋषि अरुण-पाल-मुनि,
आये सदल व्यास साह्लाद ।। २५० ।।

हिमगिरि-सदन प्रवेश शिव, शुभ-स्वागत-सत्कार ।
विधि ऋषि मुनि दर्शन नवम, शिवालोक का सार ।।

कण्ड्व शिलाद् अगस्त्य च्यवनमुनि,
गर्ग-दधीचि-कुशिक - जमदग्नि ।
ब्रह्म-तेज़ से सभी ज्वलित थे,
यज्ञ-प्रज्वलित ज्यों शुचि अग्नि ।।
शिव-समीप जो अन्य अमित-मुनि,
ऋषि आये थे तपो - निधान ।
बिधि-प्रेरित-परिणय करवाने,
लगे सभी मिल सविधि-विधान ।। २५१ ।!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वेद-विहित-सब-कार्य कुलागत,
किये सविधि विधि ने परिपूर्ण ।
पाणि-ग्रहण उमा का शिव को,
करवाया ऋषि-गण ने तूर्ण ॥
पुष्प-वृष्टि की अमित सुरों ने,
बजने लगे वाद्य सानन्द ।
नाच उठी सुर-सुन्दरियां सब,
प्रमुदित सब हो गये अमन्द ॥ २५२ ॥

करैं सब-जन शिव-दर्शन आन,
नगर-नर-नारी-वृद्ध-युवान ।
उच्च आसन पर दिये पधार,
जगत्पति शङ्कर जगदा-धार ॥ २५३ ॥

उमड़ पड़े सागर से पुर-जन
शिव-दर्शन को अपरम्पार ।
दर्शन कर अतिशय-प्रसन्न हो,
जय जय करते बारम्बार ॥
शिव ने सर्व-प्राणि मन-मोहक,
अनुपम सुन्दर-तम निज-रूप ।
धारण किया सर्व सुख-नायक,
भुवन-चतुर्दश के भव-भूप ॥ २५४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुर-नर नारी-वृद्ध-वाल सब, जिसके मन था जैसा भाव ।
उसको वैसे ही शिव-दर्शन हुए प्रीति-कर सहज स्वभाव ॥
बीस वर्ष के शिव लगते थे, जग के आदि अनादि अनन्त ।
शिव-माया का भेद न पाया, कभी न पाया उसका अन्त ॥ २५५ ॥

उमा की सखियां करतीं बात,
शम्भु का अनुपम-सुन्दर गात ।
नयन मन लख कर नहीं अघात,
कभी नहिं ऐसा लखा सुगात ॥ २५६ ॥

जनगण कहते हैं शङ्कर हैं,
अमित-वृद्ध-जर जरित-अङ्ग ।
कमल-कुसुम सी उमा किशोरी,
कैसे निबहेगी शिव-सङ्ग ।
कहते जन शिव हैं निष्किञ्चन,
उनके कुछ भी नहीं समीप ।
उनके घर पर कभी किसी ने,
जलते देखे नहीं प्रदीप ॥ २५७ ॥

उमा-फिर कहां रहेगी जाय,
रहेगी शिव-घर पर क्या खाय ।
कहां से पट पहनेगी लाय,
कष्ट कहते जन बहुत-बनाय ॥ २५८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिथ्या हैं सब वचन जनों के,
शिव रहते हैं सदा युवान ।।
निज़ नयनों से देख लिया जब,
कहां रहा अब संशय-स्थान ।।
सब ब्रह्मण्डों की सब लक्ष्मी,
शङ्कर चरण शरण में नित्य ।।
सेवा-रत रहती हैं प्रमुदित,
निज को समझ परम कृत कृत्य ।। २५९ ।।

शम्भु हैं त्रिभुवन के आधार ।
शम्भु का हम पर अति आभार ।।
शम्भु ने किया अमित उपकार,
शम्भु की महिमा-अपरम्पार ।। २६० ।।

अशन बसन-वर सदन-शम्भु की ।
इच्छा से होते उत्पन्न ।
शिव-इङ्गित से अरब खरब को,
सम्पति होती है सम्पन्न ।।
दिये देख सखि सब बरातियों,
को शिव ने मणिरत्न अलभ्य ।
शिव इच्छा से लता विटप-बन,
अशन बसन फल रहे अलभ्य ।। २६१ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव-बरात में विष्णु-विधाता,
रवि शशि-इन्द्र-आदि सुर शेष ।
आये अति-दानव मानव-गण,
त्रिभुवन के जो अतुल-अशेष ।।
शिव-बरात सम आदि सृष्टि से,
देखी सुनी न अन्य-बरात ।
शिव बरात-सम भविष्य में भी,
होगी कोई नहीं बरात ।। २६२ ।।

शम्भु की अनुपम देख बरात ।
विसर जाता दर्शक निज गात ।
बरसता आनँद-घन दिन रात ।
वहां पर है समान दिन रात ।। २६३ ।।

रुचिकर नव पक्वान्न सुव्यञ्जन,
अशन वसन-भूषण-भण्डार ।
स्वेच्छा से लेते हैं सब जन ।
स्थान स्थान पर भरे अपार ।। २६४ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शम्भु तीर्थ रचना

मानस-मुकुर-समान-स्वच्छ-तम,
पूर्ण-भरित-हिम-शीतल-नीर।
शिव-स्वेच्छा से क्षण में बन में,
सर बन गया जलधि गम्भीर ॥
चारों ओर स्फटिक-मणि-निर्मित,
सर के है सुन्दर-तम घाट।
उसके चारों ओर बनी है.
सु-ललित-पद्म-राग-मणि-बाट ॥ २६५ ॥

लोहित-हरित-सु-नील-पीत-सित,
शत-सहस्र-दल कमल-अनन्त।
सरजल में अतिशय विकसित है,
शुचि-लक्ष्मी शोभित अक्लान्त ॥
शुचि-सुवर्ण-सम-चञ्चु-पाद हैं,
सर में तरते रहते - हंस।
नीर-क्षीर-निर्वचन-प्रथित-मति,
संशित-शकुनि-वंश-अवतंस ॥ २६६ ॥

शिव-सर के चारों कोनों मैं,
शुचि बन गये शिवालय चार।
गारुत्मत-मणि के सुमनोहर,
बने हुए हैं शिखराकार ॥
उनकीं हरित-भास्वर-भा से,
भूमि-व्योम-बन हुए सुकान्त।
ज्यों त्रिभुवन की छवि एकत्रित,
हो आकर स्थिर हुई नितान्त ॥ २६७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव-मन्दिर के अन्दर सुन्दर,
प्रतिमा शिव-गिरिजा की भव्य।
हीरक-मणि- निर्मित अति-भास्वर,
त्रिभुवन में अत्यन्त अलभ्य ।।
विविध-पाप-सन्ताप हृदय के,
दर्शन कर होते जल क्षार।
अति-सुख-शान्ति-प्राप्त होती है,
प्रमुदित होता-हृदयागार ।। २६८ ।।

स्वर्ण के सुन्दर जिसके द्वार।
निकलता जिनसे शुभ-भा-भार ।।
देख कर होता हर्ष अपार।
शम्भु की महिमा अपरम्पार ।। २६९ ।।

शम्भु-तीर्थ में स्नान ध्यान कर,
जो जन शिव-मन्दिर में आन।
उमा-शम्भु-दर्शन कर लेंगे,
हों प्रसन्न उनसे भगवान ।।
सर्व-पाप-भव-ताप नाश-कर,
भरते भूरि-विभव-भण्डार।
सब-प्रकार-सुख-स्वास्थ्य-दान कर,
देते उसको करुणागार ।। २७० ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव-सर के सब ओर एक है,
सुन्दर-तम महान् उद्यान।
प्रफुलित-फलित- पल्लवित अतिशय,
त्रिभुवन में जो है अ-समान ॥
अतुलित-ललित-लता-मण्डप है,
उसमें अमित बने कमनीय।
उनमें रत्न-शिला-सन-सुनिहित,
है सुख-जनक परम-रमणीय ॥ २७१ ॥

जिनकी-किञ्चित-कृपा-कोर से,
होता है दरिद्र भूपेश।
जिनकी दया-दृष्टि से हिम-पुर,
लक्ष्मी-पुर बन गया बिशेष ॥
अति-दुर्लभ-बहु-मूल्य-रत्न-मणि,
भूषण आदि वसन अप्राप्त।
लोष्ठ-काष्ठ सम पुरपथ-पथ में,
पड़े हुए सब को सु-प्राप्त ॥ २७२ ॥

ऋद्धि-सिद्धि-नवनिधि के दाता,
सब प्रकार परि-पूर्ण महान्।
ऐसे विश्वम्भर - जगदीश्वर,
देते सब को इच्छित-दान ॥
आशु-तोष भोले भण्डारी,
भरते जन-भण्डार-अमान।
एक उमा का भरण उन्हें क्या,
भुवन-भरण-क्षम जो भगवान ॥ २७३ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कठिन-तपस्या से गिरिजा की,
जन्म जन्म के भाग्य महान् ।
एक साथ सब-फलित हुए जब,
मिले उसे पति शिव-भगवान् ।।
शिव-महिमा-सुन गिरिजा सखियां,
मन में प्रमुदित हुईं अपार,
शिव-विरुद्ध सुन जन की बातें,
कल्पित-भ्रामक मिथ्या-धार ।। २७४ ।।

शिव का वास भवन-निवास

उमा-सहित-शिव बास-भवन में,
गये पुनः मैना के साथ ।
एक अलङ्कृत-सिंहासन, पर,
शोभित-हुए शिवा-शिव-साथ ।।
उमा शम्भु की अतुल अलौकिक,
दर्शन योग्य अनिर्वचनीय ।
मन बाणी मति से-परात्पर,
गई कान्ति अनुपम कमनीय ।। २७५ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव ने वास-भवन को देखा,
शोभा थी उसकी रमणीय ।
अति-विस्तृत-अति-उन्नत वह था,
अति-विचित्र-चित्र-कमनीय ।।
लोकोत्तर-रचना-विलसित था,
लोकोत्तर-विभूति-भृत गेह ।
शिव ने दृष्टि-क्षेप कर देखा,
भवन-भ्रमण करके सस्नेह ।। २७६ ।।

तुहिन-विभास्वर-स्फटिक-श्टङ्ग-युत,
उसमें था कृत्रिम - कैलाश ।
रचना-कौशल था विभु-उसका,
तथा कला का पूर्ण-विकास ।।
सुन्दर-शिव-मन्दिर थे उसमें,
उमा-शम्भु-प्रतिमा थी कान्त ।
अति सुरम्य उद्यान-विपिन थे,
निर्मल-निर्झर थे शुचि-भान्त ।। २७७ ।।

देव-दनुज-ऋषि मुनि शिव-पूजन,
करते हुए रचे सविधान ।
योगी यति दिखलाये उसमें,
शिव-समाधि करते शिव-ध्यान ।।
ब्रह्म-लोक, वैकुण्ठ-स्वर्ग सब,
लोक रचे थे उसमें दिव्य ।
विधि-हरि इन्द्र-मूर्ति देवी युत,
उसमें निर्मित कीं थीं दिव्य ।। २७८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नन्दी-हंस-गरुड़-ऐरावत,
बाहन रचे तदाकृति-तुल्य ।
रूपवेष भूषा गुण-गौरव,
में थे सब यथार्थ के तुल्य ॥
दिव्य-रत्न-मणि-हारों से थी,
भवन-भित्ति-भूषित-अत्यन्त ।
सभी सत्य-शुभ्र सुन्दर थी,
भवन-प्राण सी ललित ज्वलन्त ॥ २७९ ॥

शुक-पिक-स्वर्ण-मोर-पारावत,
चक्र-वाक-सारस-कल-हंस ।
स्वर्ण-हरिण बन के हरि बन करि,
विरचे नाग-राज-अवतंस ॥
अश्व-समेत सुअश्वारोही,
विरचे रथी रथाश्व-समेत ।
रचे हस्तपिक, सह हाथी के
भूषा-भूषित-नृति-समवेत ॥ २८० ॥

भास्वर-मणि-रत्नों का ही वह,
बना हुआ था अति द्युतिमान ।
मणि-प्रदीप-प्रदीप्त थे उसमें,
वहां निशा थी दिवस समान ॥
भवन-भूमि-मणि-रत्न-बद्ध थी,
लता-कुसुम-चित्र-परि-पूर्ण ।
अनुपम-हृदय-हारि-सौरभ से,
बास-भवन था अति परि पूर्ण ॥ २८१ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिव्य-रत्न-सिंहासन उसमें,
स्वर्ण-रचित था एक महान् ।
सर्व-लोक-दुर्लभ-सुख-दायक,
शीत-रश्मि भा-सा भावान् ।।
स्वर्ण-रत्न-कृत परम-मनोहर,
दिव्य-कुसुम-सज्जित-शुभग्रङ्क ।
ग्रति-कोमल ग्रति-सुखद बिछा था,
वहां एक विस्तृत - पर्य्यङ्क ।। २८२ ।।

वास-भवन का ग्रन्य नाम था,
ग्रतिशय ही यथार्थ शिवलोक ।
सब प्रकाश-निष्प्रभ-लगते थे,
उसका शुभ-विलोक ग्रालोक ।।
परिणय के पश्चात् शम्भु ने,
वहां उमा के सहित निवास ।
किया उन्ही के लिये बना था,
वास-भवन करके विश्वास ।। २८३ ।।

जो ग्रद्वितीय कृति का प्रतीक,
था ग्रद्भुत भा से भासमान ।
सस्नेह शम्भु ने देखा वह,
सुभ-भव्य-भवन विभु-विभावान ।।
मणि-रत्न-जड़ित-सिंहासन पर,
ग्रा हुए शम्भु फिर सुखासीन ।
ग्रति हुई शम्भु-तनु से विकसित,
शत-शशि-सम-प्रिय-सुषुमा-नवीन ।। २८४ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी इतनी आकर्षक वह छवि,
शिव-तनु की सर्व-प्रिय असीम ।
हो गये अचेतन-चेतन अति,
आकर्षित उस छवि से असीम ॥
वह सुधा-स्यन्दि-सौन्दर्य-सिन्धु,
उद्वेल्लित हो निर-वधि-अगाध ।
आनन्द-रूप हो सम्प्लावित,
हो गया तड़ित्-गति से अबाध ॥ २८५ ॥

विभु-पर-ब्रह्म आनन्द-रूप
आह्लादक-शिव-सच्चित्स्वरूप ।
हो गया प्रकट सब के सम्मुख,
सुख-दान-हेतु धर शम्भु-रूप ॥
था जनागमन का वहां हुआ,
अति अविच्छिन्न- अविरत-प्रवाह ।
जो पाता था सुर-मुनि-दुर्लभ,
शिव-दर्शन का आनँद अथाह ॥ २८६ ॥

कूटस्थ अचल अविकल व्यापक,
जो ब्रह्म मूर्त हो शिवाकार ।
जो अखन्डैक-रस-आनँद-धन,
जो निराधार जो भवाधार ॥
जो माया का है अधिष्ठान,
माया व्यामोहक-महाधीश ।
वह दया-द्रवित आया जन को,
सुख-वितरण करने उमाधीश ॥ २८७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकल-सृष्टि के कर्ता हर्ता,
संरक्षण-कर्ता हैं आप ।
सर्व-शक्ति-सम्पन्न-महा-प्रभु,
हरिये मेरे मन का ताप ।।
शरण आपकी मैं आई हूं,
शङ्कर सब ऐश्वर्य-निधान ।
दया कीजिये दीन-बन्धु-शिव,
करुणा-वरुणालय भगवान् ।। २९३ ।।

पर उपकार-परायण थे वे,
सुर-हित त्यागे अपने प्राण ।
कोई निज न स्वार्थ था उनका,
हे जीवों के जीवन-प्राण !
निज-पति-भस्म-ग्रन्थि शिव-सम्मुख,
रख कर करने लगी विलाप ।
रवि-विलाप से व्याकुल हो सब,
अतुलित करने लगीं विलाप ।। २९४ ।।

करुणा कर शङ्कर करुणा वश,
रति पर पल में हुए प्रसन्न ।
दया-दृष्टि से लखा भस्म को,
काम हुआ तत्क्षण उत्पन्न ।।
धनुष-बाण धारी सु-मनोहर,
सर्व-लोक-प्रिय-रूप-निधॉन ।
नव-यौबन-सम्पन्न-सुधा-मय,
था मन्द-स्मित-आनन-वान् ।। २९५ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काम-प्रिया-रति-स्मर-दोनों ने,
शिव को सविनय किया प्रणाम ।
स्वापराध की क्षमा मांग-कर,
दोनों सुखी हुए नित-राम ।।
अति-प्रसन्न शिव हुए कामपर,
उससे कहा "मांग वर-दान ।"
"सुख बन बसूं मनों में सब के,
सब का लहूं स्नेह सम्मान" ।। २९६ ।।

"एव मस्तु" कह कहा शम्भु ने,
"शीघ्र यहां से जाव सिधार ।"
शम्भु-वचन सुनते ही तत्क्षण,
स्व-प्रिया सहित गया सुर-मार ।।
उमड़ पड़े समुद्र से जन-गण,
बालक-बनिता-वृद्ध अनन्त ।
शिव-दर्शन कर हुए मुदित अति,
जन्म सफल निज कर अत्यन्त ।। २९७ ।।

जो जन जिस आशा से आया,
शिव-दर्शन करने उस काल ।
उसकी की प्रपूर्ण सब आशा,
करुणा कर शिव ने तत्काल ।।
सुर बनिताएँ अमित-सुरा-सुर,
रुचिर-ग्रहण कर निज-वपु-बेष ।
आये शिव-प्रभु से स्वेच्छित-वर,
पाकर-प्रमुदित हुए अशेष ।। २९८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतना किया अपरिमित शिव ने,
हिम-गिरि-पुर में दान स-मान ।
रहा दरिद्र न कोई पुर में,
हुए सभी-विभु-वैभव-वान् ।
स्वर्ण-रत्न-मणि-मय विरचे गृह,
विरचे हरित-ललित-उद्यान
सब के सदन हुए शोभा-मय,
सुखद-पुरन्दर-भवन-समान ॥ २९९ ॥

पार्वती को दिये शम्भु ने,
लोकोत्तर सुललित अ-समान ।
हरित-पीत-सित-लोहित-मिश्रित,
शुचि-पट सुर-पति-धनुष समान ॥
अविरत-अभि-नव रहते थे जो,
कभी न होते विभा-विहीन ।
भांति भांति की भा होती थी,
समुदित उनमें नित्य-नवीन ॥ ३०० ॥

शिव ने विबुध-विप्र बुलवा कर,
पुर-जन परि जन अमित-स-मान ।
सुललित बसन स्वर्ण मणि-भूषण,
अगणित गोगण-किये प्रदान ।।
कभी न होते थे विशीर्ण जो,
रहते थे जो नित्य-नवीन ।
थे विधु-समभास्वर सुमनोहर,
कभी न होते विभा विहीन ॥ ३०१ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुख-शीतल वे ग्रीष्म समयमे,
सुखद उष्ण हिम ऋतु के शस्त्र।
सदा स्वच्छ रहते हैं मुद्कर,
मृदुल मसृण लघु-तम-शुचि वस्त्र ॥
युवा अवस्था नित रहती है,
वस्त्र पहन कर वे अति भव्य।
सदा सोहागिन ही रहती वह,
वे पट हैं अन्यत्र अलभ्य ॥ ३०२ ॥

लोक सुदुर्लभ-स्वर्ण-रत्न मणि,
भूषण दिये उमा को भव्य।
अनुपम सुन्दर-भा से भास्वर,
थे भूषण अन्यत्र अलभ्य ॥
उनको धारण कर स्वेच्छा से,
सुर से भी हों उमा अदृश्य।
सर्व-सिद्धि सब शक्ति मनोजव,
रहें सुलभ नित त्रिभुवन-दृश्य ॥ ३०३ ॥

भूषण-वसन-वस्तु-गण-अगणित,
गिरिजा को कीं अमित-प्रदान।
जिनके अगणित गुण न कर सके,
शेष गणेश शारदा - गान ॥
उमा अलौकिक उनको पाकर,
हुई प्रसन्न सहित - परिवार।
पुर-जन परि-जन ससुर अतिथिजन,
मुनि-जन प्रमुदित हुए अपार ॥ ३०४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वास-भवन मे रहे महेश्वर,
निशा-समय-गिरिजा के साथ ।
प्रातःकाल ले गये निज-गण,
गये शिबिर मे त्रिभुवन-नाथ ।।
हिम-गिरि-पुर मे शिव को रहते,
गये अमित-दिन ससुख व्यतीत ।
प्रति-दिन अधिक प्रीति-युत हिमगिरि,
करते थे सत्कार विनीत ।। ३०५ ।।

हिम-गिरि ने गिरिजा-शङ्कर को,
स्वर्ण - रत्न मणि दिये अपार ।
अनुपम वसन सुदुर्लभ भूषण,
विविध - वस्तु-गण अपरम्पार ।।
सर्व - गणों को सर्व - सुरों को,
स्वेच्छित वितरित-किये अगार ।
हिमगिरि ने शुचि पट आभूषण,
सुन्दर-भूरि-वस्तु सम्भार ।। ३०६ ।।

शुभ-परिणय, दर्शन-ललित, शम्भु तीर्थ निर्माण ।।
किया दशम आलोक में दान मान कल्याण ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सात दिवस जब हिमगिरि पुर मे,
वर - यात्रिक हो गये व्यतीत ।
शम्भु-बरात - विदा का प्रार्थित,
निकला सु-फल न कुछ ग्रानीत ।।
फिर हिम-गिरि को शम्भु-गणो ने,
सविनय सप्रणय वारम्वार :
गमन-याचना की बहु-विधि तब,
प्रणय-विकल हो को स्वीकार ।। ३०७ ।।

गमन-समय गिरिजा के-सहृदय,
कण्ठ विभृत-मेना हिम-वान् ।
प्रेम-प्रभावित-हुए विकल ग्रति,
कह न सके कुछ वचन सुजान ।।
धीरज धर निरुद्ध कर स्वदशा,
प्रेम - ग्रश्रु भर नयन ग्रमान ।
ग्रश्रु-पात - भय-पलक-पात नहि,
किये गमन-शुभ-शकुन न जान ।।३०८।

गौरी - शङ्कर को पहुंचाने,
बहुत दूर तक हिम-गिरि-राज ।
गये सकुल पुरजन परिजन-युत,
परिवर्तित न हुए गिरिराज ।।
सब ने कहा लौट जाग्रो ग्रब,
करो न ग्रब ग्राने का कष्ट ।
रुक कर तनिक हृदय-गद्गद् गिरि,
गिरिजा से बोले-विस्पष्ट ।।३०९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुत्रि ! तनिक ठहरो लग जाओ,
उमे ! हृदय से मेरे आज।
तुम से भी पहले जाने को,
मुख को हृदय आ रहा आज ॥
कुछ तो आश्वासन दो इसको,
हो जिस से इसमें विश्वास।
जिससे दुख वियोग यह सहले,
पुर्नमिलन मन धर अभिलाष ॥ ३१० ॥

प्राण-हृदय-पण-बन्ध-लगाकर,
मैं ही प्रथम जाऊँगा साथ।
जाने हेतु हो रहे विह्वल,
तुम बिन निज को जान अनाथ ॥
जननी प्रेम - रज्जु से बँध कर,
विस्मृत-निज-समस्त मन-गात
यन्त्र - प्रचालित सी चल आई,
तब गत-जीव-प्राण मन-गात ॥ ३११ ॥

ये सब परिजन पुरजन सज्जन,
सखी सुहृज्जन सब परिवार।
सूत्र - निबद्ध विहग से खींचे,
आये स्नेह सूत्र आधार ॥
सब के सजल-नयन गद्गद्-हृद्-,
कण्ठ वचन सब प्रेम अधीर।
इनके इन्द्रिय - चित्त आप में,
गये असुधबुध रहा शरीर ॥ ३१२ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गिरिजा मिली हृदय से सब को,
स्नेह - विकल - लोचन भर नीर।
जननी जनक-हृदय से लग कर,
हुए समुद् कुछ मन धर धीर ॥
जाओ गिरिजे ! सदा शम्भु के,
परम-सुखद शाश्वतिक अशङ्क।
लहो लोक दुर्लभ अभयङ्कर,
अविनश्वर प्रभु शङ्कर-अङ्क ॥ ३१३ ॥

चली शिवा शिव-सहित, सगण सुर,
हिम - गिरि - पुर से विपुल-बरात।
नृत्य-गीत-वाद्य से प्रमुदित,
समुदित नव आनन्द प्रभात ॥
अमित पादचर रथचर-करिचर,
वियद् अश्व-चर अमित-विमान।
लौट रहे थे उसके अगणित,
खेचर-वाहक-निवहन-यान ॥ ३१४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव-लोक-का अनुपम-दृश्य

कुछ चिर वे पृथ्वी पर चल कर,
फिर नभ से पहुंचे शिवलोक।
दिव्य विभा से भासमान था,
अगणित रवि-शशि सा शिवलोक॥
उसके समन्तात अभ्रङ्कश,
अनुपम सुन्दर स्निग्ध महान्।
चित्र-विचित्र विविध गिरिवर है,
उनके भी हैं श्टङ्ग अमान॥ ३१५॥

स्वर्ण-रत्न मणि के पर्वत हैं,
उसमें अति-विस्तृत-दिग्-व्याप्त।
दिव्य-विटप-बन-वृन्द-विराजित,
हैं उसमें स्वर्णिम - पर्य्याप्त॥
विभावरी में वे अति - भास्वर,
होते हैं शत - चन्द्र - समान,
कभी न पत्र - पात वे करते।
नित-नव रहते एक-समान॥ ३१६॥

हैं उनके कुछ शिखर मनोहर,
पद्म - राग - मणि के भामान्।
उन पर गत दर्शक भाभृत लख,
मणिनिर्मित है होता ज्ञान॥
कुछ उनके उत्तुङ्ग शृङ्ग हैं,
हीरक-मणि के कान्ति निधान।
जिनकी भा से भरा हुआ है,
वियद् दिशाएं सर्व-स्थान॥ ३१७॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरित-रत्न-गिरि हैं कुछ उनमें,
अमित हरित सुललित द्युतिमान् ।
नीलम-मणि के कुछ उनमें हैं,
विमल-नील-तम-गगन समान ।।
तथा अमित हैं स्फटिक-रत्न के,
भूधर भास्वर आभावान् ।
प्रतिबिम्बित दर्शक दिखता है,
अन्त:स्थित-शत-मनुज-समान ।। ३१८ ।।

पीत स्फीत-मणि के गिरिवर हैं,
सूर्यकान्त मणि मणि-शशि-कान्त ।
सुधा - सदृश जल - स्रवती हैं अति,
शशि-गभस्ति पाकर शशि-कान्त ।।
सूर्यकान्त - मणि धारण कर नर,
रवि सम तेज प्रताप निधान ।
हो जाता है त्रिभुवन-विजयी,
अद्भुत-शौर्य-वीर्य-बलवान् ।। ३१९ ।।

स्वर्ण-रत्न की वहां अवनि है,
स्वर्ण-रत्न के मृद् - पाषाण ।
स्वर्ण-रत्न से शस्य-कान्ति-मय,
तरु हैं स्वर्ण-वर्ण छवि-वान् ।।
तरु-पल्लव अभिनव रहते हैं,
वहां सदा सुन्दर द्युति-मान् ।
निशा-समय-विकसित होते हैं,
उनमें विविध-प्रकाश-महान् ।। ३२० ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वर्ण-रत्न की निर्मित सी हैं,
वहाँ अलौकिक लता-प्रतान।
सदा सुमन - फल-पल्लव-दल से,
रहती हैं वे भरीं अमान॥
उनके पुष्प-पत्र-फल-वल्ली,
अति-सुरभित है अति-छविवान्।
निशा समय भर जाते हैं वे,
शुचि प्रकाश से चन्द्र समान॥ ३२१॥

स्वर्ण-रत्न के वहां सु-गिरि हैं,
स्वर्ण - रत्न का है कैलाश।
स्वर्ण-रत्न की अखिल अवनि है,
है उसका विभु विभव-विलास॥
कोई शब्द नहीं संसृति में,
कोई सु-कवि न है मतिमान।
जिससे सब वैभव का उसके।
सब वर्णन हो सके अमान॥ ३२२॥

दिव्य-स्वर्ण-रत्न-मणि-निर्मित,
वहाँ भवन हैं विभु भावान्।
कोटि कोटि मणिमय-मन्दिर है,
सम भूतल है सुषुमावान॥
स्थान स्थान पर निकल रहे हैं,
निर्मल निर्झर नीर-नितान्त।
अमित सरोवर-सरसिज-युत है,
ह्रद् नद नदी प्रपात सुकान्त॥ ३२३॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाम्बू - नद सुवर्ण के मन्दिर,
हैं उनमें शत गुण द्युतिमान ।
सजल जलद सदृश अति भामय,
विमल व्योम से शोभावान् ।।
श्वेत स्वर्ण के अतिशय सुन्दर,
चन्द्र शकल निर्मित से भव्य ।
गगनोन्नत अति-स्निग्ध अपरिमित्-,
मन्दिर हैं अन्यत्र अलभ्य ।। ३२४ ।।

पीत-वर्ण-सुवर्ण के मन्दिर,
विद्युत निभ अद्भुत भावान् ।
अमित-समुन्नत-सुललित अगणित,
वहां बने हैं एक समान ।।
गारुतमत-मणि के शिव-मन्दिर,
बने हुए हैं वृहदाकार ।
दिग्भागों में उनकी आभा,
विस्तृत हो करती नभ पार ।। ३२५ ।।

पद्म-राग के परम मनोरम,
शिव-मन्दिर है वहां अनन्त ।
उनकी उषा-त्विषा सी विभु-भा,
करती है भास्वरित दिगन्त ।।
अरुण-तरुण-राग-भृत क्षिति का,
अन्तः स्थित विवृद्ध-मणि-राग ।
समा न सकने पर बाहर आ,
हुआ-प्रकाशित सन्तति-राग ।। ३२६ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्य अनर्घ्य-रत्न-मणि निर्मित,
मन्दिर सभा-भवन सुमहान् ।
दिव्य महामण्डप अति विस्तृत,
वहां बने हैं विभव निधान ।।
अति विचित्र विरचन है जिनका,
लोकोत्तर सुललित द्युतिमान् ।
विस्मय भृत अगणित है उनका,
कृत्रिम प्रतिकृति-कुल असमान ।। ३२७ ।।

ब्रह्म-विष्णु स्वः आदि अपरिमित,
वहां बने हैं सुललित लोक ।
स्मृति - पथ में आते हैं तत्क्षण,
प्रकृत - लोक वे लोक विलोक ।।
सब लोकों से सभी श्रेष्ठतम,
विरचे वहां अनन्त पदार्थ ।
प्रलय समय पश्चात् शेष शिव-,
लोक वासियों के ज्ञानार्थ ।। ३२८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मानस-सरोवर

वहां एक अतुलित विस्तृत है,
दिव्य सरोवर रत्न निधान।
उसकी स्वाभाविक शोभा है,
सुधा-स्यन्दिनी प्रकृति-प्रधान ।।
मानस - सर अन्वर्थ नाम से,
जन जन में शिव-लोक प्रसिद्ध।
उसका पुण्य-सलिल सब सेवन,
करते है शिव-गण सुर-सिद्ध ।। ३२९ ।।

उससे सर्वोत्तम-मौक्तिक-मणि,
होते हैं उत्पन्न अपार।
मुक्ता-मणि-कुल भृत रहता है,
सर-सैकत-तट सतत अपार ।।
हेम-तुहिन-गिरि मध्य विराजित,
द्रुत-विधु-द्रव निभ-जल अति गम्भीर।
पावन-तीर्थ-पुण्य प्रद जिसका,
मानस मुकुर सुनिर्मल-नीर ।। ३३० ।।

उसमें हेम-हंस अगणित हैं,
नीर-क्षीर-विलगाव-विवेक।
जिनको प्रकृति सिद्ध है जिन के,
दिव्य-दृष्टि गुण अन्य अनेक ।।
स्वर्ण-वर्ण-पर्ण उनके हैं,
स्मर्णिम-चरण.चञ्चु-सुमनोग्य।
प्रायः एक चरण-स्थित रहते,
हैं सर शोभा-वर्धक योग्य ।। ३३१ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नील श्वेत-स्वर्णिम-अति-शोणित,
उसमें हैं अरविन्द अपार ।
अविरत विकसित रहते हैं जो,
सर में अनुपम सुषुमागार ।।
विविध-भाँति के कुमुद-कुमुदिनी,
कैरव कानन कान्ति-निधान ।
बढ़ा रहे हैं शोभा सर की,
अति-सुरभित है सर-उद्यान ।। ३३२ ।।

स्वर्णिम-पंक्ति अलङ्कृत भृङ्गी,
भृङ्गों की मञ्जुल-गुञ्जार ।
करती है सुर मुनि-मन मोहित,
हंसावलि की विविध-विहार ।।
शम्भु भुवन-हृद्-सदृश महा ह्रद,
मुखरित होता प्रातः काल ।
अगणित शिव-गण सुरगण-सेवित,
होता है वह सायङ्काल ।। ३३३ ।।

स्वर्ण रत्न की निर्मित सी हैं वहां अलौकिक लताप्रतान,
सदा सुमन-फल-पल्लव-दल से रहती हैं वे भरीं अमान ।
उनके पत्र पुष्प-फल-वल्ली अति सुरभित है अति छविमान,
निशा समय भर जाते हैं वे शुचि प्रकाश से चन्द्र-समान ।।३३४ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जहाँ तहाँ विरचित आमुख-भृत,
मणि सुघट्ट सङ्घटित तड़ाग ।
स्फटिक-सु-द्रव-सितजल से सुललित,
मुकुर विमल-दर्शित तल-भाग ।।
सब विकसित-सरसिज-वन शोभित,
सब शिव-मन्दिर-सहित मनोग्य ।
सब सुन्दर-खग-अलि-कुल लालित,
सुर-वनिता भृत दर्शन-योग्य ।। ३३५ ।।

स्थान-स्थान से निकल रहे हैं,
शीतल निर्मल निर्झर नीर ।
श्रोत्र-मधुर-झङ्कार-अनवरत,
आती है उनकी गम्भीर ।।
पर्वत-शिखर-पतित-अति चूर्णित,
स्फटिक शिला-श्रित सलिल-प्रपात ।
सूर्यरश्मि-रञ्जित अगणित कण,
उड़ते हैं पा वहां सु-वात ।। ३३६ ।।

स्वर्ण रत्न की सी निर्मित है वहां अलौकिक लता प्रतान,
सदा-सुमन-फल पल्लव दल से रहती हैं वे भरी अमान ।
उनके पत्र पुष्प-फल वल्ली अति सुरभित है अति छविवान,
निशा समय भर जाते हैं वे, शुभ प्रकाश से चन्द्र समान ।। ३३७ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अतुलित-तरु दल-लता-पुष्प-फल,
शम्भु भवन में नित्य नवीन।
रहते हैं वे अविरत अविकृत,
कभी न होतें विभा-विहीन ।।
कोई जब उनको लेता है,
होते त्वरित-अन्य-उत्पन्न।
समुत्पत्ति उनकी होती है।
कभी न होते हैं उत्सन्न ।। ३३८ ।।

जो उनको सेवन करता है,
होता है वह रोग-विहीन।
रहता है नव-युवक सदा वह,
सदा स्वस्थ सुललित अति पीन ।।
चित्त-वृत्ति उनके सेवन से,
रुक कर लगती है सु-समाधि।
उनके सेवन से मिटती है,
मन की विविध-आधि तनु व्याधि ।। ३३९ ।।

सघन विपिन-बन-भरित-सब-भुवन,
पत्र-पुष्प-फल भर-परि-पूर्ण।
किसलय-कुसुम-फलादि ग्रहण से,
तत्क्षण नव भव हों परि-पूर्ण ।।
सब-तरु-लता-वहां के अविरत,
पुष्पित-फलित-पल्लवित-कान्त।
रहते हैं सर्वदा एक - से,
सब ऋतु भव नव सुखद नितान्त ।। ३४० ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सघन-सुखद-छाया सुर-सेवित,
पारिजात तरुवर उद्यान ।
निखिल-भुवन में है तल गत को,
देते हैं स्वेच्छित फल-दान ।।
सब समाधि-सिद्ध है सब है,
गिरिजा-गिरिश-भक्ति-लव-लीन ।
शम्भु-भवन-वासी अति-निर्भय,
रहते हैं अनवरत-अदीन ।। ३४१ ।।

सु-मधुर-फल-सु-ललित-नव-पल्लव,
सुरभित सुन्दर-सुमन अमान ।
सदा लदे रहते हैं जिनमें,
हैं ऐसे अगणित-उद्यान ।।
स्वर्ण हंस-सारिका-शुक पिक,
सारस-मञ्जु-मयूर शकुन्त ।
अतिशय-सुन्दर रङ्ग-रूप-स्वर,
जिनके है हैं वहां अनन्त ।। ३४२ ।।

वहाँ अमित हैं हेम बापियां,
स्फटिक-रचित उनमें सोपान ।
निर्मल-शीतल-सलिल अतुलभृत,
तट पर शिव-मन्दिर द्युतिमान ।।
शिव लोक स्थित श्येन सरी-सृप,
सिंह व्याघ्र-भालु वृक-सर्प ।
सभी-अहिंसक हैं सह-चारी,
मिथो मित्र फलभुक् निर्दर्प ।। ३४३ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गिरि-सरिता-नद-निर्झर अगणित,
दिव्य स्वास्थ्य कर अपरम्पार ।
सुधा-मधुर-सु-दीर्घ-जीवन-कर
वहां सु-जल हैं अमृत-सार ॥
वहां असुर-गण-सुर-गण शिव-गण,
करते हैं सर्वदा निवास ।
सदा नन्द-मय-जीवन उनके,
नभ-विभु-निर्मल-बुद्धि-विकास ॥ ३४४ ॥

सकल ब्रह्माण्डों का एक सभाभवन—न्यायालय

वहां एक दिव्याति दिव्य है,
विस्तृत सभा-भवन भावान् ।
हीरक रत्न भित्ति से शोभित,
अभि-दर्शी मन-मुकुर-समान ।
नील-रत्न की उसकी छत है,
रवि-शशि अरुण कान्त-मणि-कान्त ।
रवि-शशि ऋभु विभु-नभ-निभ शोभित,
छत-भा-भरित निशा मैं कान्त ॥ ३४५ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब-भुवनों में सभा-भवन वह,
अद्वितीय है शम्भु समान ।
कहीं न है ब्रह्माण्ड-निकर में,
उसके अन्य-सुसृजन समान ।।
गिरि सुमेरू सा सु-दृढ़-समुन्नत,
अरि अभेद्य-दृढ़-वज्र-समान ।
मणि-निबद्ध-चित्र-चित्रित-तल,
उसका है विचित्र-छवि-वान ।। ३४६ ।।

कनक-कपाट-फलक-राजित हैं,
उसके प्रभा-पुञ्ज-कमनीय ।
विविध-विभा-भर-भरित रत्नमणि,
मढ़ित अमित-दृढ़ अति-रमणीय ।।
विविध-रत्न-मणि-मय सिंहासन,
उसमें शोभित हैं अति-भान्त ।
तदा-कार-कृत-पृथुल विविध-विध,
सुमन-शेखरों से अति-कान्त ।। ३४७ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन सब में अति उन्नत-सुन्दर,
हीरक-मणि-निर्मित विभु-भान्त,
सकल-रत्न-छवि-सार एक है,
सिंहासन-विधि-कृति का अन्त ।।
सब-ब्रह्माण्डों के अधिपति शिव,
शिवा सहित प्रभु-दया - निधान ।
उसको समलङ्कृत करते हैं,
त्रिविध बताने विविध विधान ।। ३४८ ।।

परमेश्वर की स्वेच्छा से जब,
होता है अधिवेशन काल ।
भर जाता है सभा-भवन वह,
अविकल-भुवन समान विशाल !
उसमें सब भुवनों के प्रतिनिधि
अव्यवधान-प्रधान-प्रधान ।
आते हैं लेने भुवनों के,
सञ्चालक सब विबिधविधान ।। ३४९ ।।

ब्रह्म लोक से अधि-पति ब्रह्मा
विष्णु लोक से हरि भगवान् ।
स्वर्ग-लोक से आते हैं सुर,
अधिप-पुरन्दर वैभव-वान ।।
रवि-विधु-बुध-भौम-शुक्र-शनि,
अनिल-अनल-अर्यम-यम-शेष,
वरुण-सुरादि सकल भुवनों से,
आते हैं सुर-श्रेष्ठ-विशेष ।। ३५० ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्य-सनातन-धर्म-धुरन्धर,
विश्वम्भर हर दया निधान ।
देते हैं शिव नीति-प्रशिक्षण,
सत्य-ललित-शिव-धर्म-निधान ।।
सर्व-सृष्टि के जीव-जनो पर
दया-दृष्टि कर सुख कर न्याय ।
करते हैं प्रभु तथा जगत् के,
कष्ट नष्ट अधर्म-अन्याय ।। ३५१ ।।

शम्भु-लोक-बासी-प्राणी सब,
शम्भु-कृपा से द्वन्द्वातीत ।
होते हैं सु-समाधि-सिद्ध सब,
इन्द्रिय जित अनवरत अभीत ।।
सर्व-सिद्धि-सम्पन्न मृत्यु-जित,
त्रिकालज्ञ वर-शापद-शक्त ।
आप्त-काम निष्काम शम्भु सम,
परम भवानी शङ्कर भक्त ।। ३५२ ।।

सब प्रकार सर्वत्र-गमन क्षम,
सब प्रकार प्रभु-परम-स्वतन्त्र ।
काम-रूप-धर काम चरित-चर,
निगमागम स्वधर्म-परतन्त्र ।।
कोटि कोटि शिव-गण रहते हैं,
कोटि कोटि सुर असुर-अनन्त ।
कोटि कोटि विभु-भवन रचित है,
कोटि कोटि हैं ऋषि-मुनि-सन्त ।। ३५३ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वहां न कोई विकलेन्द्रिय है,
वहां न कोई है विकलाङ्ग ।
नित-नव-युवक वहां रहते सब,
नित निरोग-सुन्दर-सर्वाङ्ग ।।
राग-द्वेष-आदि सब विरहित,
वहां न कोई दुखी अधीर ।
परम-सुखी अविरत-सन्तोषी,
जिनके अविकृत-चित्त-शरीर ।। ३५४ ।।

सकल-लोक-गण-हृद-निभ-सुललित,
है असीम - विस्तृत - कैलाश।
भूरि-भव्य-विभु वैभव-शोभित ।
नित्य-स्थिर प्रलयान्त प्रकाश ।।
विश्वम्भर-शङ्कर-करुणा से,
अति-पवित्र-पुण्यद शिव-लोक ।
संसृति में सर्वोत्तम अनुपम,
वर्णन-दुर्लभ सुलभ-सुलोक ।। ३५५ ।।

गगनोंन्नत-अति-विस्तृत-सुललित,
हीरक-रत्न-विनिर्मित - कान्त ।
जिसकी पृथुल-भित्ति अति-निर्मल,
अभ्यन्तर दर्शिणी नितान्त ।।
जिसमें अति-उपद्वार द्वार है.
वहां एक मन्दिर है नान्त ।
शुभ-हिम-भानु-भानु-सा भास्वर.
परम-पुरुष सा सुस्थिर शान्त ।। ३५६ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समन्तात् उस मणि-मन्दिर के,
मञ्जुल-पद्म-राग-मणि-वद्ध ।
समतल भूतल अतुल-अमल है
हरित-पीत-मणि तट कटि वद्ध ।
अतिशय विकसित अतिशय सुरभित,
सघन-कुसुम-वन अति श्रीमान्,
उसके है सब ओर सु-शोभित ।
ऋभु-भर-भृत-नभ-निभ-भामान् ।। ३५७ ।।

दिव्य-भव्य वह सुमन विपिन नित,
रहता है विकसित अम्लान ।
जिसके प्रति-क्षण-भव-सौरभ से,
भूमि भवन थे भरे अमान ।।
हृदय-हारिणी दिग् विहारिणी,
प्रणय-कारिणी सुरभि अनन्त ।
ऐसी थी जो सुनी न देखी,
और कहीं मादक-अत्यन्त । ३५८ ।।

जगत्-पिता पति जगन्नियन्ता,
परमेश्वर पशुपति ईशान ।
मृत्युञ्जय सर्वञ्जय निर्भय,
महादेव मृड दयानिधान ।।
अद्वितीय उस मणि-मन्दिर को,
पार्वती-शङ्कर भगवान् ।
करते हैं नित-निज-निवास से,
समलङ्कृत विभु-आभा-वान् ।। ३५९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस मणि-मन्दिर के अभ्यन्तर,
लोकोतर कमनीय पदार्थ।
अवर्णनीय लोक - दुर्लभ हैं,
गिरिजा के निज-व्यवहारार्थ ॥
मन्दिरतद्गत-वस्तु-जात सब,
है शिव सङ्कल्पज कान्ति-मान।
निर्मल-निष्कलङ्क शिव-सन्निभ,
अद्वितीय-अतुलित-असमान ॥ ३६० ॥

शिव बरात प्रत्यागमन, वर्णन शुभ - शिव · लोक ॥
दिव्य - भव्य एकादशम, "शिव"-कृत यह आलोक ॥

सुरों का शिव से स्वकष्ट निवेदन

विधि-हरि-इन्द्र आदि सब सुर-गण,
आये प्रबल - असुर - भय- भीत ।
अशरण - शरणद शम्भु शरण में,
दुख-अनिष्ट - भय सर्वा - तीत ॥
गिरिजा का नेतृत्व प्राप्त - कर,
शिव से बोले बचन विनीत ।
हे करुणा-वरुणालय शङ्कर,
सर्व-शक्ति-सम्पन्न पुनीत ॥ ३६१ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कृपा करो सेवक सुर-गण पर,
हैं सब सुर अतिशय सन्त्रस्त ।
शरणागत-वत्सल-प्रभु पाकर,
हुए यहां आ अति आस्वस्त ।।
दुष्ट - तारकासुर-सुर द्रोही,
महा-भयङ्कर अति-बलवान् ।
लिये सर्व-सुख-स्वर्ग सुरों के,
दिये सुरों को दुःख महान् । ३६२ ।।

गृह-विहीन अति-दीन हुए सुर,
असुर-अधीन-हीन-परि-क्षीण ।
सुर संरक्षक शरण - प्रदाता,
अन्य न कोई आप विहीन ।
दुष्ट - तारकासुर से रक्षा
सपदि कीजिये हे सुर-नाथ !
छीन लिया सर्वस्व सुरों का,
सब प्रकार सुर हुए अनाथ ।। ३६३ ।।

"एवमस्तु" कह कर शङ्कर ने,
किया उमा को शुक्र प्रदान ।
अग्नि-समान-दीप्त शुक्र वह,
भासमान था भानु - समान ।।
असहनीय-शिव - शुक्र उमा ने,
अग्नि - देव को किया प्रदान ।
अग्नि - देव ने अग्नि-कुण्ड में
जाकर स्थापन किया स-मान ।। ३६४ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसी भांति षट् वार शुक्र ले,
अग्नि-कुण्ड में शुचि आधान।
करते गये क्रौञ्च-भू भृत-भव,
अग्नि-देवता सविधि विधान ।।
उससे प्रादुर्भूत-षडानन,
हुए सप्रभ-शत सूर्य समान।
षट् माताएं षट् सुमुखों में,
पयः पान के लिये स-मान ।। ३६५ ।।

की नियुक्त देवों ने उनके,
देवों का पाकर वर-दान।
दुग्ध-पिलाने लगीं स्कन्द को,
देख मुदित सुर हुए अमान ।।
स्वल्प समय में उमा शम्भु को,
लाकर दिये सुरों ने स्कन्द।
हुए चरित्र अति-शक्त षड़ानन,
गिरिजा शङ्कर के सुख-कन्द ।। ३६६ ।।

●

युग्मक

कवि किससे उनकी उपमा दे,
दुर्लभ है उनका उप-मेय।
ऐसा योग्य न मिलता कोई।
लेजो उनका उपमा श्रेय ।। ३६७ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कवि किससे उनकी उपमा दे,
कहीं न है उनका उपमान।
अति-अन्वेषण कर भी जग में,
मिला न कुछ उपमेय समान ॥
यदि शशि की उपमा दे उनसे,
है शशाङ्क सकलङ्क सशङ्क।
यदि राका शत-शशि-युगपत् हों,
समुदित सब यदि हों सब अकलङ्क ॥ ३६८ ॥

सर्व-प्रिय-अतिशय आल्हादक,
शुभ-विभु-विभा-भरित-श्रीमान।
हो सकते हैं उनके सु-ललित-
सु-मुखों के इस भांति-समान ॥
यदि हम उनको कहें सूर्य-सम,
सब-जन उद्वेजक-रवि-ताप।
सर्व - सुखद प्रशान्त है इनका,
अरि-जन दुःसह-शौर्य प्रताप ॥ ३६९ ॥

कैसे मैं यह कहूं अग्नि हैं,
प्रभु श्री स्कन्द-कुमार समान।
सुर-विजयी-तारक के हैं जो,
करने में अक्षम अवसान ॥
वायु-वरुण भी स्कन्द-देव के,
सदृश न है सुबीर-बलवान्।
इन सब का भी प्रबल असुर ने,
अतुलित किया अहित अपमान ॥ ३७० ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपराजेय अमेय-पराक्रम,
तप-प्रताप-अक्षय्य-निधान ।
गौरी शङ्कर के प्रिय-तमसुत,
सुर सेनानी नीति निधान ।।
महावीर अति-धीर समीरण-,
सन्निभ-वेगवान् मति-मान् ।
समुद्भूत-शत-मदन-वदन-छवि,
सुललित-अद्वितीय द्युतिमान ।। ३७१ ।।

असुर-प्राण-हारी शिखि-चारी,
गिरि - भेदन - कारी निर्भीत ।
सुर-कुल-सुख-कारी भय-हारी,
गणपति-भ्राता परम-विनीत ।।
सर्व सुरों में श्रेष्ठ ज्येष्ठ सुर,
अजितअपरिमित-शक्ति-निधान ।
परम-दयालु देव-दुर्लभ गुण,
रण-विद्या-बल-बुद्धि-निधान ।। ३७२ ।।

इच्छा पूर्ण हुई सुर-गण की,
गुह-दर्शन कर हुए प्रसन्न ।
महा-देव देवाधि-देव से,
लगे याचने देव-विपन्न ।।
हे सुर-रक्षक ! हे त्रिपुरान्तक,
हे अन्धक-अन्तक ! कामारि ।
महामहिम - महनीय मनोरम,
मद-मत्सर - माया-मोहारि ।। ३७३ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करिये कृपा कृपा-कर शङ्कर !
सुर सहाय के लिये कुमार ।
असुर-सँहारक - सुर-उद्धारक,
सुख-कारक हारक भू-भार ॥
दान - दीजिये सुर - सेना को,
सेनानी-बन सुर कुल - कार्य ।
कर देंगे स्वतन्त्र स्वर्ग - सुर,
रण में बधकर असुर अनार्य ॥ ३७४ ॥

"एवमस्तु" कह कर शङ्कर ने,
निश्चित-विजय-रूप-उपहार ।
लोकोत्तर निःसीम शक्ति-धर,
दिये सुरों को समुद् कुमार ॥
निर्धन-धन, गत-प्राण प्राण-जन,
पाकर ज्यों हो मुदित-अमान ।
अरि - दुर्धर्ष - अजेय-शक्ति त्यों,
सर-पा-प्रमुदित हुए महान् ॥ ३७५ ॥

सुर-सेना के वर सेनानी,
रण-बीर-धीर योद्धा मानी ।
धारण कर दुर्भेद्य-वर्म,
अति हर्षित थे स्मृत युद्ध-नर्म ॥
धर लिया स्कन्ध पर धनुनिषङ्ग ।
रण की मन में उमड़ी - उमङ्ग,
शत-विद्युत् सी थी विभा-भव्य ।
सर्वत्र-भुवन-भर में अलभ्य ॥ ३७६ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शत-बज्र-सदृश दृढ़-निज-कर में,
की धारण शक्तिशक्ति-धर ने।
ले लिये अन्य दृढ़-अस्त्र - शस्त्र,
तनु-पर धारण कर युद्ध-वस्त्र ।।
अरि असुरों के विकराल-काल,
शिव-गिरिजा के लालित-सुलाल।
सन्नद्ध हुए सुर मुद्कारी,
अरि असुरो के बल-मद-हारी ।। ३७७ ।।

श्री शक्ति के आक्रमण का अद्भुत प्रभाव

कर गिरिजा-शङ्कर को प्रणाम,
अति-मुदित हुए अति शक्ति-धाम।
कर प्राप्त विजय आशीर्वाद,
हो किया प्रहर्षित - सिंह-नाद ।।
चल पड़े शक्ति अतुलित-बलिष्ठ,
शत-सूर्य-सदृश - तेजो विशिष्ठ।
हो गये प्रकम्पित निखिल-भुवन।
हिल गये सूर्य-शशि-तारा-गण ।। ३७८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो गया अवनि में अति कम्पन,
असुरों में सभय करुण-क्रन्दन ।
पड़ गया-तरणि का तेज-मन्द,
दिग् स्त्रियां हुईं भय-युत अमन्द ॥
हो गई पवन-गति भी निरुद्ध,
जो कभी हुई थी न भयरुद्ध ।
था जिनका-स्वाभाविक-विरोध,
वे हुए एक तज बैर-क्रोध ॥ ३७९ ॥

जो रहे नदी-नद रव प्रवाह,
रुक गये त्याग शाश्वतिक-राह ।
तज दिये अग्नि ने अर्चि-दाह,
वह हुए सलिल से स-सुख-ग्राह ॥
छिप-गया क्षितिज-विभ्रम विलोक,
भय-भ्रान्त-विकल सब हुआ लोक ।
जब चले शक्ति - सुर महावीर,
हो उठे असुर-विह्वल अधीर ॥ ३८० ॥

बीराग्रगण्य श्री वीरभद्र,
क्षय-करण-क्षम जो सब अभद्र ।
ले चले अपरिमित स्व-गण साथ,
शिव-चरण-कमल पर धर-स्व-माथ ॥
चल पड़े सगण-प्रमथादि-बीर,
जो थे अनन्त अति-युद्ध-धीर ।
थे असुरों के सब महाकाल,
श्री-भैरवादिगण अति-बलिष्ठ ।
चल पड़े अमित-सेना-विशिष्ठ ॥ ३८१ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब बज्र सदृश दृढ़ मन शरीर ।
सब महा बीर सङ्ग्राम - धीर ।
थे असुरों के सब महा-काल ।
वे विकट काल से भी कराल ।।
वे भूत प्रेत गुह्यक पिशाच ।
चल पड़े नाचते निटिल-नाच ।
निर्भीक श्रीक अतुलित-अनीक !
चल पड़ी अमिट दृढ़ बज्र लीक ।। ३८२ ।।

चढ़ चली चपल कङ्काल-यान,
काली प्रलयानल के समान ।
ले साथ स्वदेवी दल अनन्त
था जिनका अविदित पार-अन्त ।।
सब रण विहारिणी रण-अटला,
दानव दल मर्दन अति - कुशला ।
अरि अस्त्र - शस्त्र उनके तनु पर,
सब चर्णित होते थे लग-कर ।। ३८३ ।।

थे महा भयङ्कर महा-बली,
ले स्व स्वदल चले रणस्थली ।
थे उनके गिरि प्रोन्नत शरीर,
ज्यों प्रकट हुए गिरि धर-शरीर ।।
उन सब के तंनु थे वाय-वीय,
जो काम रूप धर दर्शनीय ।
अरि अस्त्र शस्त्र उनके तन-पर,
सब निष्फल जाते थे आकर ।। ३८४ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वे गिरि प्रक्षेपण में समर्थ,
थे शत्रु सैन्य मर्दन समर्थ।
वे सकल समर विद्या-प्रवीण,
वे सतत अथक रहते नवीन ॥
सर्वत्र अबाधित गति उनकी,
निगमागम पारग मति उनकी।
शुभ कार्य करण में शक्तिमान्,
अतुलित विद्या बल बुद्धि-मान ॥ ३८५ ॥

श्री विष्णु जिष्णु तेजोवरिष्ठ
रण चण सहिष्णु सेना विशिष्ठ।
चल पड़े स्कन्द के सपदि साथ,
सुर स्वर्ग अधिप सेना-सनाथ ॥
देदीप्यमान रवि के समान,
सुर अग्नि चले बल बुद्धिमान्।
अ-प्रतिम शक्ति के अधिष्ठान,
सुर पवन चले यम बल-निधान ॥ ३८६ ॥

पुर वरुण चले अति कान्तिमान्,
सङ्गर प्रसिद्ध योद्धा अमान।
चल पड़े प्रतापी शेष साथ,
अति तेजस्वी रवि निशानाथ।
चढ़ चली देव सेना अनन्त
था जिसका कहीं न पार अन्त।
थे उसमें निर्भय देव वीर,
थे जिनके पवि सम दृढ़ शरीर ॥ ३८७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देव विनय उत्पत्तिगुह, सुर सहायता दान।
सज्जी करण सुराक्रमण, यह द्वादशम महान् ।।

गगनोन्नत गिरिवर माला थी,
थे प्रोन्नत उसके विपुल-शृङ्ग ।
परिव्याप्त लतात्तरु कानन से,
दुर्गम थे उसके सघन-शृङ्ग ।।
उस प्रोन्नत पर्वत पङ्क्ति-निकट,
पहुंची थी अभीदेव सेना।
लग गई चलाने अस्त्र शस्त्र,
तारक कीं द्रुत रक्षक - सेना ।। ३८८ ।।

हो गई देव-सेना की तब,
अग्रिम सब गति विधि-निरुद्ध ।
लग गई युद्ध करने अरि से,
हो क्रूर काल सी अतुल-क्रुद्ध ।।
थे असुर बली योद्धा डट कर,
देवों से करने लगे युद्ध ।
कुछ समय तुमुल सङ्ग्राम हुआ,
कर लिया सुरों ने मार्ग शुद्ध ।। ३८९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर पार किया सुर-सेना ने
गिरि शिखर किया था जो अबाध ।
घन कानन थे गिरि नदी तीर,
गिरि-सरिता बहती थी अगाध ।।
पर पार पड़ी थी अरि सेना,
फिर हुआ युद्ध उस से अपार ।
रण त्याग गई अरि-सेना पर,
जब पड़ी सुरौं की कठिन-मार ।। ३९० ।।

र सेना पहुंची युद्ध क्षेत्र,
निज शिविर वहां फिर दिया डाल ।
था युद्ध दृष्टि से अति समुचित,
गिरि-जलधि पिहित वह स्थल विशाल ।।
सन्नद्ध सभी थी रिपु सेना,
ले अस्त्र शस्त्र भीषण अपार ।
आ गई सपदि सुर सेना के,
अति सम्मुख अरि सेना अपार ।। ३९१ ।।

महि सागर सङ्गम समराङ्गण,
जो था समतल विस्तृत-विशाल ।
अति उचित समझ तारक उसमें,
अति-मुदित हुआ निज शिविर डाल ।।
था उसका अतुलित विपुल शिविर,
बहु भू-व्यापक अरि भर अभेद्य ।
अति नीति निपुण अरि के प्रवीण,
था गुप्त दूत गण से अवेद्य ।। ३९२ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था एक ओर उत्तुङ्ग-ऊर्मि,
निधि निरवधि जलनिधि अति अगाध ।
अरि दुर्गम दुस्तर दुर्ग सदृश
रिपु विघ्न विहित वाधा-अबाध ॥
अतिशय संरक्षित था उससे,
तारक का अविरत महा-शिबिर ।
जल निधि की सुन्दर सिकता-मय,
मृदु पुलिन बनी थी समर-अजिर ॥ ३९३ ॥

थी असुर शिविर के तीन ओर,
दुर्गम गिरि श्रेणी दुर्ग-तुल्य ।
थी निकट बहाती सरिता थी,
जल अविरल शीतल सुधा-तुल्य ॥
भीषण-तम सिंह व्यघ्र सेवित,
वह गिरि श्रेणी थी अरि अलङ्घ्य ।
अति क्रूर भयङ्कर असुर-भरित,
थी जन्तु मात्र से सुदुर्लङ्घ्य ॥ ३९४ ॥

तारक ने तप करके विधि से,
वर प्राप्त किया था अद्वितीय ।
मैं रहूं समर में अपराजित,
बर योद्धा जग में अद्वितीय ॥
नहिं मार सके मुझको कोई,
सुर-असुर विश्व का वीर-वर्ग ।
मैं अजर अमर ही रहूं सदा,
मेरे वश में हो विश्व-स्वर्ग ॥ ३९५ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो गया वीर-वर अति-दुर्दम,
तारक विधि-वर पाकर अभीष्ट ।
कर विश्व विजय नहिं तृप्त हुआ,
फिर स्वर्ग विजय की अति-अभीष्ट ।।
फिर त्रिभुवन अङ्गण-वेदी सा,
अति सुलभ समझ वश अनायास ।
कर लिया काँपने लगे लोक,
पाकर अभिभव भय महा-त्रास ।। ३९६ ।।

वह अति प्रचण्ड त्रिभुवन-विजयी,
था अप्रतिहत बल-वीर्यवान् ।
उसके सम्मुख नहिं त्रिभुवन में,
कोई होता था वीर्य-वान् ।।
सब पहले भी समराङ्गण में,
सुर असुर प्रवर से अमित-बार ।
कर युद्ध बहुत दिन-भयकारी,
हो अपमानित थे गये हार ।। ३९७ ।।

सब छीन लिया ऐश्वर्य-स्वर्ग,
सुख देवों का जो था नितान्त ।
जा कहीं छिपे थे सर्व-देव,
अभिभूत भूरि भय-भीत-भ्रान्त ।।
नहि मिलता था आश्रय-दाता,
जो उनको कुछ आश्रय-प्रदान ।
वह करता निज समीप रख कर,
जो देता उनको अभय-दान ।। ३९८ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिल गये सुरों को महा-देव,
देवाधिदेव करुणा-निधान ।
दे दिये सुरों को गुह-कुमार,
अपराजित अतुलित शक्तिमान् ।
ले उनको चढ़ आये सब सुर,
अरि तारक पर हो शक्तिमान् ।
थे सुर द्रोही-तारक के जो,
मद हारक मारक यम समान ।। ३९९ ।।

तारक नगर वर्णन

था विस्तृत तारक नगर एक,
असुरों का अनुपम बसवाया ।
पृथिवी का उसको सर्व-श्रेष्ठ,
कमनीय-नगर था बनवाया ।।
सब भूमि स्वर्ग का सर्व स्वर्ण,
बल पूर्वक लाया लूट छीन ।
सब किये मनुज सुर गण-दरिद्र,
अति दुखित अरक्षित दीन हीन ।। ४०० ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे उसके विस्तृत विमल-मार्ग,
अति सरल धूलि अवकर-विहीन ।
दृढ़ बद्ध स्निग्ध छाया-प्रधान,
घन तरुवर-भृत ऊष्मा-विहीन ।।
थे उभय ओर उनके-उन्नत,
मणि दीप स्तम्भ देदीप्यमान ।
होती थी वहां निशा रवि-कृत,
देदीप्यमान दिन के समान ।। ४०१ ।।

थे उभय भाग शोभित-पथ के,
शत भौमिक भा मय भवन-भव्य ।
थे अद्भुत भवन-भुवन-भूषण,
अन्यत्र भुवन में थे अलभ्य ।।
थे पुर में सर्व स्वर्ण-निर्मित
शुभ सदन अलौकिक कला-धाम ।
तारक स्वयमेव स्वर्ग से ज्यों,
हर लाया हो कल धौत-धाम ।। ४०२ ।।

थे नगर मध्य अगणित-उपवन,
सु ललित सुरभित फल सुमन-भरित ।
समलङ्कृत करते नित वसन्त,
थे उसे सर्व सम्पत्ति-सहित ।।
थे सुमन वनों के मध्य मध्य,
स-सरोज सरोवर सुजल पूर्ण ।
थे वहां विनिर्गत नभ-उत्थित,
कमनीय फोहारे कला पूर्ण ।। ४०३ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थे सुदृढ़ बद्ध अगणित मनोम्य,
सुस्रोत कूपवापी तड़ाग,
निज जन-गण निवसन सुखनिमित्त,
विरचित थे सुललित भूमि-भाग ॥
नित-भ्रमित वहां पर असुर-वृन्द,
करते थे आकर स-सुख-स्नान ।
वे कुसुम-विटप वन लता-ललित,
आच्छादित थे सब जल स्थान ॥ ४०४ ॥

थे रचे अमित-निज नगर-मध्य,
तारक ने क्रीड़ा कलित-केन्द्र ।
थे मनो विनोदक आह्लादक,
अति विरचे सुललित कला केन्द्र ॥
होते थे उनमें नित-नवीन,
सङ्गीत सरस नादक मनोग्य ।
रहते थे अविरत असुरों से,
वे भरे भवन आभरण योग्य ॥ ४०५ ॥

था महा दुष्ट-तारक-दानव,
अति मानव मानव-महाकाल ।
सब को दुख देता था उससे,
था दुखित-विश्व आवृद्ध-बाल ॥
थे उसके सर्वनाश-कारी.
विधि विश्व विरोधी-दुराचार ।
सब विश्व नष्ट हो जाता यह,
जो फलते उसके कदाचार ॥ ४०६ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो सप-दुष्ट के सर्वस्वार्थ,
फल जाते तो यह विश्व शेष।
रहता न कभी का हो जाता,
सब नाश व रहता शून्य शेष ।।
था उसको अति प्रिय मनुज-मांस,
वह खाता था नित मनुज-मांस।
थे और वीर योद्धा उसके,
जो खाते थे सब मनुज-मांस ।। ४०७ ।।

अति हृष्ट पुष्ट नव युवकों के,
शिशु सुन्दिरयों के रुचिर मांस।
बनते थे उसके लिये नित्य,
स्वादिष्ट सु-कोमल विपुल मांस।
लाता था नित्य मार कर वह,
मनुजाद मनुज अतुलित अशङ्क।
सब क्षिति सभीति असुरक्षित थी,
रहती थी उससे नित-सशङ्क ।। ४०८।।

मण्डूक-मत्स्य कच्छप जल हय,
शम्बूक शङ्ख जल जन्तु-जात ।।
शश-गोधा मूषक अजगर-खर,
अज अवी शल्लकी जीव-व्रात ।।
जो थे पशु पक्षी भू-नभ-के,
सब किये मार कर आत्मसात।
सब जीव हुए जग के समाप्त,
पर भरे न उनके उदर-खात ।। ४०९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन मन भर राक्षस एक एक,
भक्षण करता था मांस-नित्य ।
था उदर-भरण ही किसी भांति,
उनके जीवन का लक्ष्य नित्य ॥
वह जहां देखता था सम्पत्,
सब लूट छीन ले लेता था ।
यदि कोई कुछ कहता उसके,
धन प्राण त्वरित हर लेता था ॥ ४१० ॥

था अखिल अवनि में एक-छत्र,
उसका निष्कण्टक विपुल-राज्य ।
था उसने किया हुआ अतुलित,
निज बल अविरोधी कुसाम्राज्य ॥
यदि उष्ण श्वास भी लेता था,
कोई मनुष्य उसके विरुद्ध ।
देता था उसको मृत्यु-दण्ड,
सब विभव छीन हो अमित-क्रुद्ध ॥ ४११ ॥

था करता सर्व-राज्य मैं वह,
यह नीच-घोषणा बार बार ।
दें सब विवाह से पूर्व मुझे,
दो रात्रि स्वात्मजा-समुपहार ।
जो जन यह आज्ञा उल्लङ्घन,
कर कर लेगा दुहिता-विवाह ।
उस की समस्त सम्पत हर कर,
कर दिया जायगा सद्म दाह ॥ ४१२ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुनता था सुन्दर नव-युवती,
है कहीं अतुल रूपा अपार।
उसको था झपट लूट लाता,
उसके स्वजनों को लूट मार ॥
उसके भय से गृह में युवती,
छिप रहती थी अविदित-सदैव।
था महा भयङ्कर-समय-पड़ा,
सङ्कष्ट-पूर्ण सब पर सदैव ॥ ४१३ ॥

दुर्दान्त दुष्ट-दानव दल के,
दुस्तर-दुर्दमन - दवाग्नि - दग्ध।
दारिद्य, दैन्य-दुर्दशा-दलित,
थे सब दुःसह दुख दैन्य-दग्ध ॥
दुर्धर्ष दैत्य का दुर्मदत्व,
दलने में दैवत देख दीन।
दे दया-दान दुर्गाधिप-ने,
कर दिया दिव्य दैवत अदीन ॥ ४१४ ॥

वह मही-महा सागर-सङ्गम,
सब भांति सुरक्षित "शिव"-विलोक।
स्थिर अतुर हुआ दृढ़ व्यूह विरच,
हो विनिवृत-भय हो विगत-शोक ॥
आक्रमण नहीं हो सकता था,
उस रणस्थली के तीन ओर।
था सम्मुख हो बस प्रबल शत्रु,
आ सकता कोई एक ओर ॥ ४१५ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी रखी हुई गिरि शिखरों पर,
तारक ने शिक्षित अग्र सैन्य ।
अरि दत्त पराजय अन्य क्लेश,
उसको अविदित था दुःख दैन्य ।।
वह थी स्वतन्त्र निश्चिन्त अमित,
उसका था रक्षण ही स्वकर्म ।
कुल-युत-सुख सुविधा सब उनकी,
तारक करता था समझ धर्म ।। ४१६ ।।

तारक तप वर विजय श्री त्रिभुवन का विभु-राज ।
त्रियोदशम आलोक में, आलोकित यह काज ।।

सुर-सैन्य-सज्जा

शुचि क्रीट मुकुट कुण्डल धारी,
शत-रवि समान तेजो-निधान ।
श्री विष्णु जिष्णु भूसम-सहिष्णु,
दुर्भेद्य वर्म धर पवि-समान ।।
रवि से अभि भास्वर शङ्ख-चक्र,
ले गदा विजयिनी यम-समान ।
सन्नद्ध हुए रिपु-बल बधार्थ,
कटिबद्ध हुए योद्धा महान् । ४१७ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वज्रायुध धारी स्वर्गाधिप,
सन्नद्ध हुए सुर पति महेन्द्र ।
ले शम्भु-सैन्य-संहार-शील,
अविरत अमोघ-पवि शक्ति केन्द्र ।।
धारण कर तनु पर वज्र-वर्म,
मस्तक पर धर कर भासमान ।
हीरक-मणि रत्न-जड़ित मञ्जुल,
दुर्भेद्य मुकुट पवि के समान ।। ४१८ ।।

जो अजित अपरिमित शक्ति केन्द्र,
सेवक जिनके सब सुर सुरेन्द्र ।
जो महावीर रण केलि-धीर,
जलनिधि गँभीर रिपु-करिमृगेन्द्र ।।
अरि के अराल विकराल-काल,
शिव-शिवा-लाल मानस-मराल ।
निर्भय निदान केहरि-समान,
पुमयूर-यान सुललित-विशाल ।। ४१९ ।।

कर लिया स्व-वपु-रवि में धारण,
अति सुदृढ़ वर्म अरि भर अभेद्य
धर लिये शिरों मैं उष्णीषक.
पवि सम अति दृढ़ अरि-गण अभेद्य ।।
अङ्गुलित्र वर कर धारण कर,
पद में धारण कर पादत्राण,
हो गये सुसज्जित सेनानी,
सुर-प्राण-त्राणक महाप्राण ।। ४२० ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ले शत विद्युत सा तेजस्वी,
अरि विजयी कर वर में त्रिशूल ।
अवलोक समर उद्यत गुह को,
मिट गये सुरों के सकल-शूल ।।
धर दृढ़ स्कन्ध पर धनु निषङ्ग,
मणि रत्न जड़ित अति भासमान ।
षट् शिरः षट्क पर क्रीट मुकुट,
धर हुए सु-सज्जित बल-निधान ।। ४२१ ।।

था भानु-मान भा सा भास्वर,
था मनोवेग सा वेगवान ।
था वज्र-तुल्य अति दृढ़ मनोग्य,
जो लाये सुर-विद्युत-विभान् ।।
उस शुभ-विमान में शक्ति-देव,
आसीन हुए जब शक्ति-केन्द्र ।
हो गये श्रवण कर भय-विह्वल,
अविकल-दानव कुल दानवेन्द्र ।। ४२२ ।।

हो गई सु-सज्जित-सुर सेना
कर धारण अरि दुर्भेद्य-वर्म ।
ले अस्त्र-शस्त्र-सज्जित अमोध,
हो गये समक्ष सङ्ग्राम-धर्म ।।
सब सुरसेना के मन में थी,
अति निर्भयता अति समुत्साह ।
श्री कार्तिकेय-सेनानी का,
अरि-कुल-अजेय पा बल अथाह ।। ४२३ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अति घोर समर प्रारम्भ हुआ,
लग गई बरसने विशिख वृष्टि ।
नभ में भूपर अरि सेना पर,
जाती थी जितनी जहाँ दृष्टि ।।
वे वहां दीखते थे अनन्त,
सर्वत्र भरे सित शर-भुजङ्ग ।
अरि वीर-मुण्ड कर तथा अङ्ग,
उड़ते पड़ते होते विभङ्ग ।। ४२४ ।।

अति घोर समर कर असुर-सैन्य
हो गई रण विरत स्वल्प-काल ।
वे निरख हुए थे अरुण वर्ण,
परिणमित सहित-नभ नभ-मराल ।।
कुछ था कृष्णाञ्जन गिरि निभ-नभ ।
कुछ स्वर्ण अवनि-धर कान्तिमान् ।
कुछ था विद्रुम-भूभृत - सन्निभ,
कुछ नील रत्त-गिरि-भा-समान ।। ४२५ ।।

अस्फुरित भरित रवि रश्मि-व्योम,
था सुन्दर अगणित रङ्ग-मिलित ।
वह इन्द्र-धनुष-निर्मित सा नभ,
हो गया समभि-नव दृश्य-ललित ।।
हो गये गगन में शुभ्र-मेघ,
अतुलित-अरुणिम रवि-रश्मि भरित ।
चतुरङ्ग सैन्य-रचकर नभ में,
फिर की परि-दर्शित अमित-त्वरित ।।४२६।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भर गया लालिमा-मय रवि का,
नभ-में स्व-दृश्य सुषुमा-निधान ।
फिर वही अधिक-वि-वृद्ध बन कर,
जलनिधि में विस्तृत हुआ आन ।।
हो गये जलधि रवि सु-छवि-भरित,
वहु जपा पुष्प-छवि सलिल-वान ।
वह स्व-छवि निरख हो मग्न लगे,
करने दिनकर जलनिधि स्नान ।।४२७ ।

सन्ध्या ने स्वर्णिम केश-पाश,
बाँधा-उर धर रवि-मिलन आश ।
भर लिया माँग में शुभ सिंदूर,
नयनों में अञ्जन-रचा खास ।।
धारण कर ललित-लाल-अम्बर,
प्रमुदित थी रुचिर-वेष रचकर ।
कुछ तपन हुई रवि की-प्रशान्त,
सन्ध्या का रुचिर-रूप लख कर ।। ४२८ ।।

था सोभि जलधि-रवि-मिलन-दृश्य,
अनुपम-असीम सौन्दर्यवान् ।
था उदधि लाल दिग् गगन लाल,
थे सूर्य लाल सुषुमा-निधान ।।
अति-ललित लालिमा का विशाल,
सर्वत्र-व्याप्त था शुभ-स्वराज ।
उसमें कवि के स्वच्छन्द-छन्द,
रबि से अमन्द थे रहे राज ।। ४२९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उड़ चले व्योम में विविध-विहग,
निज नोड़ ओर पृथु पंक्ति-बद्ध ।
चल पड़े पथिक पथ-त्याग स्वगृह,
परिवार प्रणय दृढ़ सूत्र-बद्ध ।।
गो यूथ स्व-गोचर अवनि-त्याग,
चल पड़े त्वरित कर-वत्स-ध्यान ।
लग गये विजन-सुचि अवनि-निरख,
प्रभु का करने बटु-विप्र ध्यान ।। ४३० ।।

अति-निर्मल शीतल सुख-दायक,
बहने लग गये समीर-धीर ।
दिनकर ने निज कर निकर किये,
सङ्ग्रह तम-भय से हो अधीर ।।
था नील-गगन से उतर रहा,
अति सघन अपरिमित तमस्तोम ।।
भर गईं दिशाएँ सब उससे,
पथ-नगर-ग्राम-गृह अवनि-व्योम ।। ४३१ ।।

सम्पूर्ण-सृष्टि निस्तब्ध हुई,
थी जगी निशा थे सब-प्रसुप्त ।
हो गये अदृश्य दृश्य उससे,
थे उदधि-मग्न से हुए लुप्त ।।
अज्ञान समभिभृत-मूढ़-हृदय,
सा निबिड़ निभृत था अन्धकार ।
होता था कुछ न तनिक भासित,
साकार हिता-हित निराकार ।। ४३२ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आनँदकर हिमकर उदय हुए,
भर गये विभा से वस्तु-जात ।
ज्यों दुग्ध-उदधि से प्रकट हुए,
शुभ-दुग्ध लिप्त हो समवदात ।।
वह सकल-भरित-शशि-सुधा-ताल,
वह निशीथिनी-नभ-सित-मराल ।
वह कुमदिनी-कुल-प्रणय-पाल
विभु-विभा-विभासित- शम्भु भाल ।। ४३३ ।।

गृह-दीप किसी ने ज्वलित किये,
प्रज्वलित किसी ने ग्राम-दीप ।
ज़ल गये किसी के नगर-दीप,
इनसे महान् न जल सके दीप ।
ये बिधि ने अपर्य्याप्त लखकर,
सब पृथक् पृथक् लघु लघु प्रदीप :
सब जग प्रकाश दान-क्षम-विधु,
धर दिया गगन में जगद् दीप ।। ४३४ ।।

सब गई निशा धन तिमिर भरी,
हो गया उदित स्वर्णिम-प्रभात ,
शुचि-शीतल-मन्द सुगन्ध-भरित,
अविरत शुभ बहने लगा वात ।
रवि-उदय समझ हो समय- तिमिर,
गिरि गुहा, बन्द गृह दिवस-अन्ध ।
आश्रय ले किये प्राण रक्षण,
था जहां वात-गति बिबिध-बन्ध ।। ४३५ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब निष्प्रभ दीपक हुए क्षीण
हो गये विभा से विधु विहीन।
नव विमल हुआ विकसित विहीन,
ले विविध-विपुल-वैभव नवीन ॥
नव प्राप्त सु-छवि भृत उषा-काल,
हिङ्गुल-विलिप्त सा हुआ लाल।
रवि थे गुलाल के विपुल-थाल,
लाक्षा-रस भरित सु-ललित-ताल ।४३६॥

ओ उषा अप्सरा सर्व-प्रिया,
उतरी सुस्वर्ग से पूर्व ओर।
स्वर्णाभ केश शोभित-आनन,
हो गये निरख जन, सुख-विभोर ॥
हो गये मुखर सु-मधुर स्वर से,
स्वर्णिम सुपर्ण-शोभित-शकुन्त।
लग गये स्नान कर ईश्वर का,
सुमिरण करने बटु विप्र-सन्त ।४३७॥

सब हुईं विदिग दिग् बहु-विकसित,
नव-विमल विपुल-विहान-विकसित,
बन विटप विविध वीरुध विकसित,
वसुधा विभु विमल वियद्-विकसित ॥
सर्वत्र हुआ अभिनव विकास,
अभिनव जीवन अभिनव-प्रकाश।
अभिनव अवनी अभिनवाकाश,
अभिनव जन-मन तनु प्राण-आश ॥४३८॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रण-मेरी रण दुन्दुभी-वाद्य,
सुर-सेना के जब बजे नाद।
द्रुत गया गगन भेदन कर वह,
दानव सेना में तुमुल - नाद ॥
सुर-गण ने निज निज किये त्वरित,
फिर समर-प्रवर्तक शङ्ख-नाद।
वह सुन कर तुमुल-निनाद हुआ,
रिपु सैन्य-हृदय में अति-विषाद ॥ ४३९ ॥

फिर घोर बजाये समर-वाद्य,
असुरों ने वह जो हुआ नाद।
भर गईं दिशाएँ सब उससे,
हो गये असुर सब निर्विषाद ॥
हो गईं सु-सज्जित असुरों की,
ले अस्त्र शस्त्र भीषण-सेना।
थे सुदृढ़ लौह-सैनिक उसके,
जो कटते त्वरित शस्त्र से ना ॥ ४४० ॥

आगया असुर-तारक निर्भय,
दृढ़ लौह-वर्म आवृत-शरीर।
जो जीत चुका था देवों को,
बहु-बार समर में महाबीर ॥
थे उसके उत्तम अस्त्र शस्त्र,
था उसका वपु-अतुलित बलिष्ठ,
था विधि से प्राप्त हुआ उसको,
स्वः विबुध-विजय का वर वरिष्ठ। ४४१॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था उसका द्रुत-गामी दृढ़ रथ,
मन के समान अति-वेगवान् ।
मणि-स्वर्ण रत्न निर्मित महान्,
था रवि समान अति भासमान ।।
उससे टकराकर अस्त्र-शस्त्र,
हो जाते थे सब चूर चूर ।
रिपु सेना चक्र दलित कर वह,
था क्रीड़ा करता काल-क्रूर ।। ४४२ ।।

उस अपराजित दृढ़-रथ पर वह,
जब हो अति-निर्भय समासीन ।
आ गया देव-सेना सम्मुख,
सुर हुए सभय कुछ दीन हीन ।।
सुर सेनानी थे सुर कुमार,
था उनका बल वैभव अपार ।
उनका अजेय बल समझ हुए,
आश्वासित सुर कर गुहा-धार ।। ४४३ ।।

आते ही त्वरित किया उसने,
सुर-सेना का रण आह्वान ।
देवो ! तुम प्रथम वार कर लो,
बोला तारक निज वक्ष-तान ।।
फिर मार भगाऊंगा पल में,
तुमको रण करके घमासान ।
परितप्त तुम्हारा मन होगा,
यह होगा फिर नहिं शुभ-विहान ।।४४४।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अरि सम्मुख आये वीर भद्र,
सह सके न उसके वचन-वाण ।
उनके धनु से निकले तत्क्षण,
कोपित-तक्षक से निशित-बाण ।।
फिर तारक ने शत शर क्षण में,
छोड़े शित वीर-भद्र ओर ।
श्री-वीर भद्र तारक सङ्गर,
अविरत विलम्ब तक हुआ घोर ।। ४४५ ।।

नहिं तारक तनु पर तनिक पड़ा,
उनके शित अस्त्रों का प्रभाव ।
सब अस्त्र शस्त्र सह गया असुर,
वह कुसुम-समान महानुभाव ।।
श्री-वीरभद्र भी निर्भय हो,
करते ही रहे सङ्ग्राम घोर ।
उनका तन मन सब इन्द्रिय-गण,
था वीर रसानँद में विभोर ।। ४४६ ।।

इस भांति, सात-दिन-रात्रि हुआ,
दोनों का भीषण महा-युद्ध ।
करता था एक दूसरे पर,
अविरत प्रहार हो अमित-क्रुद्ध ।
इस रण का होगा अन्त नहीं,
हैं दोनों योद्धा महा बीर ।
इससे विधि ने रण विरत किये,
श्री-वीर भद्र रण-धीर बीर ।। ४४७ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ समय समर भू-रिक्त हुई,
हो गया तनिक सङ्ग्राम बन्द ।
हो गया युद्ध था बन्द किन्तु,
उत्साह सभी का था अमन्द ॥
कर अशन-पान द्रुत हुए सभी,
सज्जित हो रण में डटे आन ।
फिर लगे बरसने धुवाँधार,
लक्षघ्न अस्त्र युगपत् महान् ॥ ४४८ ॥

दोनों बरसाने लगीं बाण,
दोनों सेनाओं पर सक्रोध ।
दोनों सेनाएं थीं स्वतन्त्र,
था उनका अनिवारित-निरोध ॥
थे सहस्रघ्न सुर क्षिप्त अस्त्र,
वे लगे बरसने धुवाँधार ।
लग गये भागने भीरु असुर,
जब पड़ी सुरों की कड़ी मार ॥ ४४९ ।

बहु क्षतविक्षत हो गये असुर,
उतरे बहु-दानव मृत्यु घाट ।
जो उदरम्भर था असुर-निकर,
उसने की द्रुत गृह-ग्रहण बाट ॥
कुछ असुर रणाङ्गण हुआ रिक्त,
तारक की यह थी प्रथम-हार ।
आया तारक रणअङ्गण में,
था क्षुभित-क्रुधित दुःखित अपार ॥ ४५० ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एकत्रित असुर किये उसने,
जो बिखर गये थे बचे शेष।
फिर अन्य अमित सैनिक लाया,
जो निर्भय योद्धा थे विशेष ।।
वे रखे सु-रक्षित थे उसने,
जो कठिन समय के लिये बीर।
जो अरि के विकट आक्रमण को,
कर देते थे सब व्यर्थ धीर ।। ४५१ ।।

उन वीरों ने आकर रण में,
सुर सेना पर अतुलित-प्रहार
करना आरम्भ किया अविरम,
सुर किये विकल सब एक बार ।।
विकराल समर उन बीरों ने
जब किया क्रुधित हो यम समान।
आगये क्षुभित हो अरि अम्मुख,
यम अग्नि-वरुण-हरि धनुष तान ।।४५२।

मारे क्रोधित हो देवों ने,
अव्यर्थ-बाण हो सावधान।
कर दिये धराशायी रिपु-गण,
जो थे अप्रतिहत शक्तिमान् ।।
फिर तारक हरि सम्मुख आया,
मारे पहले ये बचन-वाण।
'तुम मेरे सम्मुख से हट कर,
छिप जाओ अपने बचा प्राण" ।। ४५३ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं एक वाण से हर लूंगा,
हरि सर्व तुम्हारा जीव प्राण ।
तुम क्या हो हरि मेरे सम्मुख,
मैं अति वलिष्ठ हूं पवि समान ।।
हरि ने तारक से विहँस कहा
क्यों करते शिशु सा मृषावाद ।
कुछ है यदि शक्ति दिखाओ तो,
क्या होगा करके श्वान नाद ।। ४५४ ।।

यह सुन तारक ने क्रोधित हो,
हरि पर छोड़े शत-निशित-बाण ।
करते फुङ्कार सर्प से शर,
थे चले पविज ज्यों विष-विषाण ।।
हरि ने क्षण में निज अस्त्र-क्षिप्त,
पथ में उसके शर दिये काट ।
गिर गये विफल हो सकल अस्त्र,
रह गया निरखता वह निशाट ।। ४५५ ।।

फिर शित सहस्र शर तारक ने,
हरि पर छोड़े द्रुत एक साथ ।
निज अस्त्र-चक्र से काट दिये,
हरि ने वे सब-शर एक साथ ।
इस भांति सहस्रों तीक्ष्ण विशिख,
वह गया मारता बार-बार ।
हरि विफल बनाते गये उन्हें,
सब काट काट कर बार बार ।। ४५६ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस भांति युद्ध करते हरि से,
हो गया असुर को अमित काल।
थे बलनिधान हरि थके नहीं,
हो गये काल से अति कराल।
क्षत विक्षत क्षुभित किया हरि ने,
तारक को कर शत-शर प्रहार।
हो गया असुर अत्यन्त कुपित,
रच लिये प्रबल निज कर हज़ार ॥ ४५७ ॥

देवों ने देखा इस रण का,
अब कभी न होगा अन्तपार।
इसने वर प्राप्त किया विधिका,
इसकी नहिं होगी कभी हार।
हरि-कर से मृत्यु न इसकी है,
यह समय जा रहा है अपार।
रण विरत किये हरि देवों ने,
हरि को समझा कर बहुत बार ॥ ४५८ ॥

की श्री कुमार से विनय पुनः
कर कृपा करें इसका विनाश।
केवल कुमार के कर से है,
इस दुष्ट असुर का सर्वनाश।
आगये असुर सम्मुख रथ ले।
जब खींचा अपना धनुष बाण।
तब पूछा निज सैनिक वर से,
यह कौन सामने है महान ॥ ४५९ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं यही प्रभो ! सुर सेनानी,
श्री शक्ति देव अति बलनिधान ।
इनके ही बलपर सुर आये,
इस समय-क्षेत्र में साभिमान ।
ये सुरवर शङ्कर के सुपुत्र,
अति तेजस्वी शङ्कर समान ।
ये हैं रणविद्या पारङ्गत-
सब वीर-प्रवर अति-बुद्धि-मान् ॥ ४६० ॥

यह वचन श्रवण कर तारक ने,
उनका सहर्ष रण आह्वान ।
कर कहा स्कन्द से निर्भय हो,
तुम प्रथम चला लो शित स्वबाण ।
द्रुत बन जाओगे काल कवल
लगते ही मेरे निशित-बाण ।
यह कहते ही लग गया विकट,
दोनों का सङ्गर घमासान ॥ ४६१ ॥

घन-घोर बरसने लगे विशिख,
भर गया भूमि तल नभ महान ।
प्रतिकर सहस्र से वह सहस्र,
प्रति पल बरसाने लगा बाण ।
श्री शक्ति विफल कर देते थे,
सब खण्ड खण्ड कर असुर-बाण ।
फिर काटे तारक बाहु निकर,
श्री स्कन्द देव ने मार बाण ॥ ४६२ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्रुत उतर पड़े रथ से कुमार,
ले लिया अनल सा ज्वलित शूल ।
अति-निकट गये तारक के फिर,
मारा उसके उर में त्रिशूल ।
हो गया ढेर मर कर तारक,
गिर गया भूमि पर तरु समान ।
जो शेष रहे थे असुर सभी,
भग गये बचाकर त्वरित प्राण ।। ४६३ ।

हुआ देव सज्जीकरण कुछ सङ्ग्राम विराम ।
सागर सायं निशा सृजन, सु-प्रभात अभिराम ।
समर असुर सुर अति तुमुल, भीषण-असुर प्रहार ।
चतुर्दशम आलोक में तारक का संहार ।। ४६४ ।।

हो गईं दिशाएं सब विकसित,
हो गया सुनिर्मल नभ महान् ।
हो गये सूर्य सु-प्रकाश पूर्ण,
हो गये चन्द्र अति भासमान ।
हो गई सकल अवनी प्रफुलित,
बन उपबन तरु वल्ली वितान ।
चल पड़े सु-शीतल ललित अनिल,
हो गये सलिल निर्मल अमान ।। ४६५ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुर सर्व हुए अतिशय प्रसन्न,
अति किया स्कन्द का धन्यवाद।
उन पर बरसाये दिव्य पुष्प
फिर किया समुद दुन्दुभि-निनाद।
सुरगण ने किया वियद व्यापी,
अति हर्षित हो कर विजय ध्वान।
सुर सुन्दरियां सब मुदित हुईं,
करने लग गईं सुनृत्य गान ॥ ४६६ ॥

पशु-पक्षी भी सब मुदित हुए,
अति दुर्जन तारक बध विलोक।
ऋषि-मुनि मानव चर अचर जीव,
अति मुदित हुआ सब द्विविध-लोक।
श्री स्कन्द-देव को सकल सृष्टि,
देती थी शुभ आशीर्वाद।
करते थे अविरत साधु सन्त,
सब साधु-साधु कर साधु-वाद ॥ ४६७ ॥

सुर-असुर समर का अन्त हुआ,
तब सुर एकत्रित हुए आन।
सुर-सेनानीं को सुर सेना,
कैलाश ले गई स-सम्मान।
सुर-गण ने किया शम्भु दर्शन,
विधिवत पूजन विधिवत प्रणाम।
फिर सकल सुनाये समाचार,
सुर विजय असुर का विपरिणाम ॥ ४६८ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम सब सुर प्रभु के हैं कृतज्ञ,
सर्वदा रहेंगे अति कृतज्ञ ।
प्रभु है सर्वज्ञ समर्थ आप,
सामर्थ्य-हीन हम दीन अज्ञ ।
उपकार रहेगा चिरस्मरण,
जो किया आप ने है महान् ।
वह सिवा आप के अन्य नहीं,
कोई कर सकता था महान् ॥ ४६९ ॥

है आप सदा-शिव परब्रह्म
हैं उमा महा-माया स्वरूप ।
हैं आप सच्चिदानन्द रूप,
अविकल अनन्त ब्रह्माण्ड भूप ।
शङ्कर करूणा-कर करूणा-कर,
स्वीकार कीजिये सुराधार ।
प्रभु चरण - कमल में सुर-गणका,
सादर सविनय शिव नमस्कार ॥ ४७० ॥

श्री स्कन्द देव का सुर गण ने,
करने स्वागत सम्मान - दान ।
आयोजित किया एक अनुपम,
शुभ समारोह समुचित महान् ।
किन्नर गन्धर्व सुगीत हुए,
सुर-सुन्दरियो के नृत्य - गान ।
था जिसका अभूतपूर्व दृश्य,
श्री गुह का सविनय किया मान ॥ ४७१ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर गुह को अति प्रसन्न करने.
देने अतुलित सम्मान दान ।
प्रिय किया लोक व्यापी सुभोज,
आयोजन देवों ने महान् ।
सुरगण ने उसमें करवाया.
सब को सर्वोत्तम सोम-पान ।
स्वादिष्ट इष्ट मिष्टान्न किया,
सब को यथेष्ठ-भोजन-प्रदान ॥ ४७२ ॥

सुर-गण के स्निग्ध बचन सुनकर,
हो गये तुष्ट प्रभु आशुतोष ।
विबुधों की विपुल-विजय-सुनकर,
प्रभु मन ने पाया परम तोष ।
शिव ने कर कृपा "सुरो ! शुभ हो",
यह दिया अमित अशीर्वाद ।
सुर विदा किये वे गये स्वर्ग,
प्रमुदित करते दुन्दुभि निनाद ॥ ४७३ ॥

प्रभु-शिव की अति अनुकम्पा से,
परिपूर्ण हुआ यह "शिवालोक" ।
अज्ञान-तिमिर दुख-दूर हुए,
अवलोक ललित यह "शिवालोक" ।
जो इसे करेंगे पठन श्रवण
उनके अविकल दुख दुरित द्वन्द ।
सर्वथा दूर होकर होंगे,
सब प्राप्त विभव सुख शिव आनन्द ॥ ४७४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है सुर-सरिता रवि सुता मध्य,
नमनीया गिरिजा सी पवित्र ।
शुभ स्वर्ग अवनि से भी उत्तम,
आनन्द-मयी बहुदा विचित्र ।
शिव जन्म भूमि विभु-विभव भृता,
कृत विजय पुरम यम रोम ग्राम ।
श्रुति विश्रुत विप्रवंश में शुचि,
उत्पत्ति हुई हैं धर्म धाम ।। ४७५ ।।

अतुलित प्रकृति प्रसन्नता प्राणी प्रीति प्रकाश ।
पञ्च दशम आलोक में, स्कन्द-मान सुखभास ।।
शुचि सुन्दर जम्बू नगर शुचितम-शिव संस्थान ।
शिवप्रसाद पाकर रचा, "शिवालोक" सुख-खान ।।
वेद नयन नभ-नयन शुभ, विक्रमाब्द तिथि पूर्ण ।
आशिवन सित दल में हुआ, शिवालोक सम्पूर्ण ।।४७६।।

।। इति ।।

Sri Pratap Singh Library Srinagar

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE